2000

. **पद्मभूषण, महापंडित राहुल सांकृत्यायन** की **पुण्य तिथि** के अवसर पर १४, अप्रैल २००० को एक विचार-गोष्ठी का आयोजन किया गया है। इस गोष्ठी का मुख्य विषय ''**राहुल सांकृत्यायन का बहुआयामी व्यक्तित्व एवं हिन्दी साहित्य में उनका योगदान**'' है।

आप सभी सुविज्ञ जन से अनुरोध है कि इस विशिष्ट आयोजन में अपनी गरिमामय सहभागिता से हमें कृतार्थ करें।

दिन – १४ अप्रैल २०००
स्थान – समिति कक्ष, केन्द्रीय पुस्तकालय सभागार, काशी विद्यापीठ
समय – ४.३० सायं

आकांक्षी
डा० संगीता श्रीवास्तव

श्री बी०एल०प्रजापती

2000

2001

पद्मभूषण महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जयंती-समारोह

(९ अप्रैल २००१)

की पूर्व संध्या ८ अप्रैल २००१ (रविवार) को एक ***विचार-संगोष्ठी*** *का आयोजन।*

संगोष्ठी का मुख्य विषय है -

" साहित्य-वाचस्पति महापंडित राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व एवं कृतित्व "

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि सुविज्ञ समीक्षक ***डॉ० बच्चन सिंह*** *और*

अध्यक्षता बौद्ध-दर्शन के मनीषी ***डॉ० लक्ष्मी नारायण तिवारी*** *करेंगे।*

आप सभी सुधी जनों से विनम्र अनुरोध है कि इस विशिष्ट आयोजन में

अपनी गरिमामयी उपस्थिति से हमें कृतार्थ करें।

दिन : ८ अप्रैल २००१ (रविवार)

स्थान : केन्द्रीय पुस्तकालय
उदय प्रताप स्वायत्तशासी कॉलेज

समय : सायं ४ बजे

शुभाकांक्षी

डॉ० संगीता श्रीवास्तव

श्री. बी. एल. प्रजापति

अधीश कुमारने

भारतीय संस्कृतिके उन्नयनमें राहुल जी का महत्वपूर्ण योगदान

राहुल सांकृत्यायन भारतीय कला, संस्कृति तथा विचारोंके गैर सरकारी दूत थे। उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेजमें महापण्डित राहुल सांकृत्यायन जयन्ती समारोहके अवसरपर रविवारको आयोजित संगोष्ठीमें मुख्य अतिथि डाक्टर बच्चन सिंहने उक्त उद्‌गार व्यक्त करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृतिके उन्नयनमें राहुल जी का महत्वपूर्ण योगदान है।

डाक्टर सिंहने उन्हें वामपंथी बताया, किन्तु कहा कि अपने अंतिम समयमें उन्होंने वामपंथको तिलांजलि दे दी, हालांकि वे मार्क्सवादी बने रहे। उन्होंने भारतीय संस्कृति एवं श्रमण संस्कृतिको अपने जीवनमें उतारा। राहुल जीका मानना था कि समय ही जीवन है, और वे अपने सपनोंको साकार करना चाहते थे। संगोष्ठीकी अध्यक्षता करते हुए डाक्टर लक्ष्मी नारायण तिवारीने महापण्डित के वैविध्यपूर्ण जीवनकी चर्चा करते हुए कहा कि तुर्कीमें कमालपाशाने इस्लामका तुर्कीकरण किया, असर यह कि वहां

जब धर्मके विचार समाप्त हो जायेंगे तभी मानवताका जन्म होगा -राहुल सांकृत्यायन

अल्लाह-ओ-अकबर भी तुर्की भाषामें किया जाता है। राहुल जी ने मौलवी महेश प्रसादसे अरबी पढ़ी, और उनकी संस्कृत भाषाकी पुस्तकें रोमन लिपिमें प्रकाशित हुईं।

संगोष्ठीमें राहुल जीके जीवन दर्शनकी गहराई नापते हुए डाक्टर विश्वनाथ प्रसादने कहा कि महापण्डित जीवनमें बौद्धधर्मके अनात्मबाद और मार्क्सवादी विचार धारासे प्रभावित रहे। उन्होंने कहा कि राहुलजीका मानना था कि धर्म और धर्मकी एकतासे राष्ट्र उन्नति नहीं करेगा, जब धर्मके विचार समाप्त हो जायेंगे तभी मानवताका जन्म होगा। उन्हों ईश्वरकी कल्पनासे भय उत्पन्न होता है। इस अवसरपर उदय प्रताप कालेजके हिन्दी विभागाध्यक्ष डाक्टर जय नारायण तिवारीने राहुल जीको सच्चे अर्थोंमें विश्व मानव बताते हुए कहा कि राहुल जी जितना वैविध्यपूर्ण व्यक्तिगत और साहित्यिक जीवन असम्भव सा लगता है। 'बोल्गासे गंगातक' कहानी संग्रहकी चर्चा करते हुए डाक्टर तिवारीने कहा कि यह मानवके ८००० वर्षोंके इतिहास एवं क्रमशः विकसित मानव चेतनाका इतिहास एवं उसका जीवन्त विश्लेषण है। उन्होंने कहा कि लेखकका मूल्यांकन केवल साहित्यिक रचनाओंको ध्यानमें रखकर करना उचित नहीं है।

संगोष्ठीमें राहुल जी के सृजन और व्यवहारिक पक्षपर प्रकाश डालते हुए डाक्टर पृथ्वी पाल पाण्डेयने कहा कि राहुल सांकृत्यायन जैसा व्यक्तित्व युगान्तरकारी होता है, और ऐसा व्यक्तित्व सीमाओं, धारा और वादमें नहीं बधता अपितु समयकी धारा को मोड़ देता है। सनातन धर्मी परिवारमें पले राहुल जी रूढ़िवादको झटककर आर्यसमाजी हो गये और यहां भी मन न पटनेके कारण बौद्ध धर्मका चिंतन अध्ययन किया, तत्पश्चात साम्यवादसे जुड़े किन्तु अन्ततः वे मानववादके चिन्तनको प्रमुखता देनेमें लग गये। डाक्टर पाण्डेयने कहा कि अति ओजस्वी व्यक्तिकी उड़ान असीमित हो जाती है। उन्होंने २२वीं सदी उपन्यास लिखकर कल्पना की ऊंची उड़ानमें नव संदेश देनेकी कोशिश की है। डाक्टर जितेन्द्र नाथ मिश्रने कहा कि वे वेदोंको भी आलोचनात्मक दृष्टिसे देखते हैं, उनके व्यक्तित्वकी तुलना नहीं की जा सकती है। विशिष्ट अतिथि डाक्टर वी.बी. सिंहने कहा कि राहुल जी का वैज्ञानिक मूल्यांकन किया जाना आवश्यक है।

इस अवसरपर डाक्टर कमल गुप्त तथा डाक्टर सुरेन्द्र प्रतापने भी विचार व्यक्त किया।

प्रारम्भमें डाक्टर पृथ्वीपाल पाण्डेय, डाक्टर विश्वनाथ प्रसाद तथा डाक्टर विनोद कुमार श्रीवास्तवने अतिथियोंका माल्यार्पणकर स्वागत किया। कार्यक्रमका संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तव तथा संयोजक डाक्टर बी.एल. प्रजापति तथा डाक्टर संगीता श्रीवास्तवने संयुक्त रूपसे किया। अन्तमें धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर रामसुधार सिंहने किया।

आग लगनेकी चा[...]
घटनाओंसे ह[...]

नगर और जनपदमें सोमवारको आग लगनेकी हुई चार अलग-अलग घटनाओंसे जहां अफरा-तफरी मच गयी वहीं हजारों रुपयेकी क्षति भी हुई है। जंसा थाना क्षेत्रके पुरैना गांवमें दोपहर सवा १२ बजे गेहूंके खेत[...] आग लगनेसे दो बीघे खड़ी फसल जलकर नष्ट हो गयी।

ग्रामीणोंकी सूचनापर चेतगंजसे अग्निशमन दल मौकेपर भेजा गया था, लेकिन उससे पूर्व लोगोंने आग बुझानेमें सफलता प्राप्त कर ली। इससे पूर्व कैंट थाना क्षेत्रके सदर बाजार स्थित तालाबके चारों ओर फैले कूड़ेमें आग लगनेसे क्षेत्रमें दहशत फैल गयी। जिस जगह यह घटना हुई वहां आसपास घनी बस्ती होनेके कारण लोग भयभीत हो गये। घटनाकी सूचना पाकर मौकेपर पहुंचे अग्निशमन दलने अथक प्रयासके बाद आग बुझानेमें सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार चेतगंज थाना क्षेत्रमें चौकाघाटके पास भी पूर्वाह्न साढ़े १० बजे कूड़ेमें आग लग गयी थी। अग्निशमन दलने मौकेपर पहुंचकर आगको बुझाया। इस घटनामें कोई आर्थिक क्षति नहीं हुई। शहरके

2 दैनिक जागरण, वाराणसी, 4 अप्रैल, 2001

संगोष्ठी आठ को

वाराणसी, 3 अप्रैल। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जयंती समारोह (9 अप्रैल) की पूर्व संध्या पर 8 अप्रैल को उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज में सायंकाल चार बजे से विचार संगोष्ठी का आयोजन किया गया है।

'आज' वाराणसी, १० अप्रैल, २००१ ५

वाराणसी महानगर

2001

2001

4 दैनिक जागरण , वाराणसी, 9 अप्रैल, 2001

हिन्दू व मुस्लिम कौम को राजनीतिक दलों ने बनाया सांप्रदायिक

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन की स्मृति में आयोजित संगोष्ठी में साहित्यकार प्रो.बच्चन सिंह के विचार

वाराणसी, 8 अप्रैल। राजनीतिक दलों ने हिन्दू व मुस्लिम कौम को सांप्रदायिक बनाया। समाज में आयी विकृतियों के लिए राजनीतिक दल काफी हद तक जिम्मेदार हैं। बौद्ध, जैन, ईसाई आदि धर्मों को इस्लाम से परहेज नहीं है तो फिर इस्लाम को क्यों। इस्लाम को भी भारतीय संस्कृति से उसी प्रकार समझौता करना चाहिए,जैसा उसने मध्य एशियाई देशों में किया है।

उक्त विचार साहित्यकार व समीक्षक प्रो. बच्चन सिंह ने रविवार को उदय प्रताप कालेज में साहित्य वाचस्पति पद्मविभूषण महापण्डित ... सांस्कृत्यायन की जयंती स... आयोजित संगो... संबो...

और होता। वे कम्युनिस्ट न होते हुए भी मार्क्स के विचारों से प्रभावित थे। इस क्रम में उन्होंने राहुलजी के जीवन से जुड़े कई संस्मरणों की चर्चा की और

कहानीकार के सम्पादक व साहित्यकार डा.कमल गुप्त ने कहा कि साहित्य मनीषी राहुलजी का व्यक्तित्व जितना विराट था,कृतित्व उतना ही महान। यदि उन्हें बौद्ध ... और मार्क्सवाद का समन्वय कहा जाय तो ...योक्ति नहीं होगी। उन्होंने मार्क्सवाद की ... लिए बौद्ध दर्शन, विचार व चिंतन से ... तैयार किया। साहित्यकार डा. विश्वना... ने कहा कि महापण्डित सांस्कृत्यायन ... सत्ता को नहीं मानते थे। ऐसा नहीं था कि ... थे लेकिन उनका स्पष्ट मत था कि ... की कल्पना भय उत्पन्न करने के लिए ... डा. जितेन्द्र नाथ मिश्र ने कहा कि राहुलजी ... राष्ट्र ...ना की थी। एक ऐसा ... जिसमें सभी ...गों के लोगों को सम... मिले। जहां असमानता न हो। सर्वश्री डा. पृथ्वीपा... ...री, डा. सुरेन्द्र सिंह, डा. ... ...र व्यक्त किये। वक्ता... महापण्डित राहुल सांस्कृ... कृतित्व पर संगोष्ठी आयोजि... ...योजक डा. संगीता श्रीवास्तव व ... प्रजापति के प्रति आभार व्यक्त किया। ... में अतिथियों व विद्वानों का स्वागत ...विनोद कुमार श्रीवास्तव, सुश्री अल्पना राय ...धरी व कृष्णमुरारी श्रीवास्तव ने किया। संगोष्ठी का संचालन डा.संगीता श्रीवास्तव व धन्यवाद प्रकाश डा.रामसुधार सिंह ने किया।

---

(८) गांडीव १८ अप्रैल, २०००

राहुल सांकृत्यायन चलते -फिरते शब्दकोष थे

...शी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन जैसा खोजी व्यक्तित्व विश्व में विरले ही होते हैं। उन्होंने हिंदी जगत के लिए अमूल्य कार्य किया। यह विचार ...दी के लब्ध प्रतिष्ठित विद्वान डा० कन्हैया सिंह के हैं। वे काशी विद्यापीठ में आयोजित राहुल सांकृत्यायन का बहुआयामी व्यक्तित्व एवं हिंदी साहित्य में उनका योगदान विषयक संगोष्ठी में शुक्रवार को अध्यक्ष पद से बोल रहे थे।

राहुल सांकृत्यायन के साथ सात वर्ष की अवस्था से रहरहे उनके बाल सखा डा० लक्ष्मीनारायण तिवारी ने मुख्य अतिथि पद से कहाकि राहुल जी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। उन्होंने बताया कि वे उर्दू माध्यम से मिडिल पास थे और उन्होंने विदेशों के विश्वविद्यालयों में अध्ययन किया। उन्हें अनेकों उपाधियां भी मिली लेकिन ऐसे मनीषी को भारत में अपेक्षित और उचित सम्मान नहीं मिला।

डा० बचन सिंह ने कहा कि उन्होंने मध्य एशिया का इतिहास नामक कृति में ऐतिहासिक व दुर्लभ संग्रह उपलब्ध है। उन्होंने कहा कि राहुलजी ने दुनिया से भागने की सलाह नहीं दी बल्कि उसे बदलने की सलाह दी। डा० शुकदेव सिंह ने कहाकि राहुल सांकृत्यायन चलते फिरते शब्दकोष थे। इसके अतिरिक्त डा० पृथ्वीपाल पाण्डेय, डा०विश्वनाथ प्रसाद, डा० रामसुधार नेभी अपने विचार रखे। कार्यक्रम का कुशलतापूर्ण संचालन डा० संगीता श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन डा०सुरेन्द्र प्रताप ने किया। वी एल प्रजापति ने कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की।

गांडीव १२अप्रैल, २००१

राहुल जयंती

सामाजिक विकृतियों के लिए राजनीतिक दल जिम्मेदार – प्रो० बच्चन सिंह

काशी, ११ अप्रैल। बौद्ध, जैन, ईसाई धर्म के लोगों को जब इस्लाम से परहेज नहीं है तो इस्लाम को क्यों हो रहा है? क्यों नहीं यह भी मध्य एशिया की तरह यहां भी भारतीय संस्कृति से समझौता कर लेता और राष्ट्र के विकास में एक महत्वपूर्ण योगदान कर अमन चैन कायम करता। समीक्षक प्रो० बच्चन सिंह ने यह बात उदयप्रताप कालेज में महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की जयन्ती समारोह की पूर्व संध्या पर मुख्य अतिथि पद से कही। उन्होंने कहा कि राहुल को थोड़ा भी अगर राजनीति के लोग आत्मसात कर ले तो देश का बहुत बड़ा कल्याण हो जाय। समाज में आयी तमाम विकृतियों के लिए राजनीतिक दल जिम्मेदार हैं यह भ्रम नहीं यथार्थ है। महापण्डित ...

वाराणसी संस्करण, बुधवार, 10 अप्रैल, 2002 7

हिन्दुस्तान | वाराणसी/मुगलसराय

काशी विद्यापीठ में राहुल सांकृत्यायन पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित करते डा. बच्चन सिंह। उनके बगल में हैं प्रसिद्ध विद्वान प्रो. एन.एच. समतानी। छाया: हिन्दुस्तान

धार्मिक संकीर्णता के विरोधी थे सांकृत्यायन

संवाददाता

वाराणसी, 9 अप्रैल। राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध साहित्य और धर्म को विशाल हिन्दी भाषी समाज से परिचित कराया। यह उनकी विशिष्ट देन है। राहुल कम पढ़े-लिखे होते हुए भी उच्चकोटि के विद्वान थे। अपनी मेहनत और प्रतिभा की बदौलत उन्होंने बौद्ध साहित्य के लुप्त प्राय: ग्रन्थों को खोज निकाला और उसका प्रकाशन किया।

उन्होंने धर्म की कट्टरता और संकीर्णता का विरोध किया और धर्म की उदात्त व्याख्या पर बल दिया। यह निष्कर्ष राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में आयोजित एक संगोष्ठी का है।

संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि राहुल धर्म और जाति की संकीर्णता से परे थे। कट्टर सनातनी परम्परा के होते हुए भी वे ब्राह्मणवादी व्यवस्था के विरोधी थे। उनका कहना था कि जातिवाद भारतीय समाज को खोखला कर रहा है। सभी धर्मों में श्रेष्ठ मानव धर्म है। राहुल यह मानते थे कि देश में परिवर्तन लाने के लिए श्रमणवादी विचारधारा ही उपयोगी साबित हो सकती है। रूढ़िवादी समाज को परिवर्तन के मार्ग पर ले जाने का कार्य श्रमणवादी विचारधारा ही कर सकती है।

कुछ वक्ताओं का कहना था कि उन्होंने न केवल बौद्ध साहित्य वरन हिन्दी साहित्य को भी अपनी प्रतिभा से समृद्ध किया। प्रसिद्ध बौद्ध ग्रन्थ 'त्रिपिटक' का उन्होंने हिन्दी में अनुवाद किया। हिन्दी साहित्य में यात्रा-वृतांत विधा की नींव उन्होंने डाली। उनका सबसे बड़ा योगदान था बौद्ध धर्म और दर्शन से भारतीय मनीषा को परिचित कराना।

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता थे प्रो. एन. एच. समतानी। अन्य वक्ताओं में प्रमुख थे- प्रो.गणेशराम भा द्विवेदी, प्रो.लल्लन राय, डा. जितेन्द्र नाथ मिश्र, डा. अवधेश प्रधान, डा. विश्वनाथ प्रसाद, डा. सुरेन्द्र प्रताप, डा. रामजी शर्मा, डा. कमल गुप्त।

संगोष्ठी की अध्यक्षता प्रसिद्ध साहित्यकार डा. बच्चन सिंह ने और संचालन डा. संगीता श्रीवास्तव ने किया।

2002

वाराणसी दैनिक जागरण
10 अप्रैल 2002

राहुल ने अपनी भाषा व संस्कृति को नहीं छोड़ा

कुलपति ने किया परीक्षा कक्ष का निरीक्षण

आज बुधवार १० अप्रैल
२००२ सौर २७ चैत्र सं. २०५८ वि.

काशी विद्यापीठमें आयोजित 'राहुल सांकृत्यायन का बौद्ध धर्म को योगदान' विषयक संगोष्ठी में विचार व्यक्त करते हुए सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालयके प्रोफेसर राधेश्यामधर द्विवेदी। छाया : आज

बौद्धदर्शनके अद्वितीय विद्वान थे महापंडित राहुल सांकृत्यायन

काशी हिन्दू विश्वविद्यालयमें पालि एवं बौद्ध धर्म दर्शनके पूर्व विभागाध्यक्ष प्रोफेसर के सनतानीने कहाकि महापंडित राहुल सांकृत्यायनने बौद्ध दर्शनकी गहराइयोंका अध्ययनकर उसे सहज रूपमें लोगोंके समक्ष प्रस्तुत किया। काशी विद्यापीठ स्थित गांधी अध्ययन पीठके सभागारमें हिन्दी तथा भारतीय भाषा विभागकी ओर से महापंडित राहुल सांकृत्यायनकी जयंतीपर मंगलवारको आयोजित राहुल सांकृत्यावनका बौद्ध धर्मको योगदान विषयक संगोष्ठीमें प्रोफेसर सनतानीने मुख्य अतिथि पदसे यह विचार व्यक्त किया।

उन्होंने राहुल सांकृत्यायनके व्यक्तित्व और कृतित्वपर प्रकाश डालते हुए कहा कि वे बौद्ध धर्म दर्शनके अद्वितीय विद्वान थे। उन्होंने कहाकि राहुल जी ज्ञानकी अदम्य जिज्ञासाके कारण जीवन पर्यन्त विश्व भ्रमण करते रहे।

इस अवसरपर मुख्य वक्ता सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व विद्यालयमें बौद्ध धर्म दर्शन विभागके अध्यक्ष प्रोफ़ेसर राधेश्याम धर द्विवेदीने कहाकि महापंडित राहुल सांकृत्यायनने मात्र मध्यमाकी शिक्षा प्राप्त की थी, लेकिन वे बौद्ध धर्म दर्शन सहित संसारके अनेक विषयोंके प्रकाण्ड विद्वान थे। उन्होंने कहाकि राहुल जी सैद्धान्तिक स्तरपर ब्राह्मणवादी विचारोंको बराबर खंडित करनेमें लगे रहे। प्रोफेसर द्विवेदीने कहाकि उन्होंने बौद्ध दर्शनको हिन्दी जगतमें स्थापित कराकर साहित्य जगतमें एक अनुकरणीय कार्य किया। इस अवसरपर डीएवी कालेजके डाक्टर जितेन्द्रनाथ मिश्रने कहाकि आजके परिवेशमें यह बात अधिक महत्वपूर्ण है कि कट्टर सनातनी ब्राह्मण परिवारमें जन्मे पंडित राहुल सांकृत्यायनने हिन्दू धर्मको त्यागकर बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। उन्होंने कहाकि राहुल जीने भगवान बुद्धको भगवान न मानकर उन्हें महामानव माना। डाक्टर मिश्र कहाकि राहुल जीने बौद्ध धर्म दर्शनके अनेक आयामोंको लोगोंके बीच प्रस्तुत किया। उन्होंने कहाकि राहुल सांकृत्यायनको हिन्दू धर्मकी कट्टरताके कारण दुःखी होकर बौद्ध धर्म स्वीकार करना पड़ा।

संगोष्ठीकी अध्यक्षता डाक्टर बच्चन सिंहने की। इस अवसरपर प्रमुख रूपसे डाक्टर कमल गुप्त, डाक्टर अवधेश प्रधान आदिने भी विचार व्यक्त किये। संगोष्ठीका संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तवने किया।

2002

अमर उजाला 8

वाराणसी/इलाहाबाद, 10 अप्रैल, 2002

हिंदू समाज को बौद्ध धर्म के निकट लाए सांकृत्यायन

अमर उजाला संवाददाता
वाराणसी, 9 अप्रैल

पंडित राहुल सांकृत्यायन ने बौद्ध धर्म के विभिन्न आयामों को हिंदू समाज के समक्ष प्रस्तुत किया। वे हिंदू समाज को बौद्ध धर्म के निकट ले आए। हिंदी साहित्य में बौद्ध धर्म को समाहित करने का प्रयास किया।

यह विचार वक्ताओं ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में 'राहुल सांकृत्यायन का बौद्ध धर्म को योगदान' विषय पर आयोजित गोष्ठी में व्यक्त किए। सांकृत्यायन की जयंती पर गांधी अध्ययन पीठ में इस गोष्ठी का आयोजन डा. संगीता श्रीवास्तव तथा डा. बी एल प्रजापति ने संयुक्त

कि कट्टर सनातनी होने के बावजूद राहुल ने बौद्ध धर्म को अपने में आत्मसात किया। वक्ताओं ने कहा कि अपने जमाने में उन्होंने सर्वाधिक पुस्तकें लिखीं। देश में यदि क्रांति लानी है तो श्रमणवादी विचारों को अपनाना होगा।

गोष्ठी में वरिष्ठ साहित्यकार प्रो. बच्चन सिंह, बौद्ध विद्वान प्रो. नारायण सामतानी, प्रो. राधेश्यामधर द्विवेदी, प्रो. लल्लन राय, डा. सुरेंद्र प्रताप, डा. मुक्ता, डा. कमल गुप्त, डा. जितेंद्र नाथ मिश्र, डा. विश्वनाथ प्रसाद, डा. अवधेश प्रधान आदि ने विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर प्रो. सामतानी को सांकत्यायन की पुस्तक 'दर्शन-

2003

उद्घाटन–समारोह

'महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र' का उद्घाटन 28 फरवरी 2003 (शुक्रवार) को सायं 4 बजे होना निश्चित हुआ है।

समारोह के **मुख्य अतिथि सुविज्ञ डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी** होंगे तथा **अध्यक्षता श्रद्धेय डॉ. बेनीमाधव शुक्ल** करेंगे। आदरणीय सिटी मजिस्ट्रेट **श्री सर्वज्ञ मिश्र, डॉ. वी0 वी0 उपाध्याय** एवं **श्रीमती नीता उपाध्याय विशिष्ट अतिथि** होंगे।

प्रतिष्ठित विद्वज्जन से विनम्र अनुरोध है कि अपनी गरिमामयी उपस्थिति से हमें अनुगृहीत करें।

डॉ. पृथ्वीपाल पाण्डे	**श्री बी. एल. प्रजापति**	**डॉ. संगीता श्रीवास्तव**
अध्यक्ष	**उपाध्यक्ष**	**सचिव**

2003

4 वाराणसी, 1 मार्च, 2003
दैनिक जागरण

राहुल जी का साहित्य समुद्र के समान अथाह :कमलेश दत्त

निज प्रतिनिधि, वाराणसी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन का साहित्य समुद्र के समान अथाह है। उनका साहित्य एक ऐसे झंडे के समान है, जिसके प्रभाव और चिन्ह से समस्त भारतीय भाषाएं अपने को अच्छी तरह से स्थापित कर सकती हैं।

नवापुरा स्थित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के उद्घाटन के अवसर आज उक्त विचार मुख्य अतिथि डा.कमलेश दत्त त्रिपाठी ने व्यक्त किये। उन्होंने राहुल जी को अनेक भाषाओं का मर्मज्ञ बताते हुए उनकी कृतियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। समारोह की अध्यक्षता कर रहे डा.राधेश्याम द्विवेदी ने कहा कि राहुल जी प्रकांड विद्वान होते हुए बहुत ही विनम्र स्वभाव के व्यक्ति थे।

डा.जितेन्द्र नाथ मिश्र ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके साहित्यिक योगदान की चर्चा की। इससे पूर्व मुख्य अतिथि व विशिष्ट अतिथियों का स्वागत केन्द्र के अध्यक्ष डा.पृथ्वीपाल पाण्डेय ने किया व संस्था का संक्षिप्त परिचय सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने दिया। तत्पश्चात मुख्य अतिथि ने फीता काटकर व दीप जलाकर केन्द्र का उद्घाटन किया। संचालन डा.संगीता श्रीवास्तव ने किया।

2003

दैनिक जागरण
वाराणसी समाचार
4 वाराणसी, 23 अप्रैल, 2003

राहुल सांकृत्यायन के जीवन यात्रा साहित्य पर विमर्श जरूरी

शिक्षा प्रतिनिधि, वाराणसी

...पद्मभूषण प्रो. विद्यानिवास मिश्र ने कहा है कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्याकरण, दर्शन, न्यायशास्त्र व मीमांसा पर अक्सर चर्चा करते रहते थे। उनके साहित्य का बहुत बड़ा अंश ऐसा है, जो पथ-प्रदर्शक का काम करता है। उनकी यात्रा से पता चलता है कि वे सर्वग्राही दृष्टि रखते थे। देश व हिमालय के प्रति उनका गहरा लगाव था। राहुल सांकृत्यायन के जीवन यात्रा के साथ जिन-जिन विधाओं से वे जुड़े थे, उन पर भी चर्चा होनी चाहिए।

■ राहुल सांकृत्यायन संगोष्ठी में प्रो. विद्या निवास मिश्र का कथन

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केन्द्र द्वारा राहुल जयंती पर मंगलवार को कबीर कीर्ति मंदिर में आयोजित 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन का विचार दर्शन' विषयक संगोष्ठी में प्रो. मिश्र ने मुख्य अतिथि पद से कहा कि जीवन में परिश्रम का ... शिक्षा मैंने उनसे ली है। उनमें एक त्वरा ... , अंग्रेजी, गणित ... उनके विचारों में ... आदरशीलता का ... दी के प्रसिद्ध समीक्षक ... क्रांतिकारी बुद्धिजीवी व ... फकीर नहीं थे। राहुल के विवेक से हम लोगों को नये निर्माण के लिए सबक लेना चाहिए।

■ गोष्ठी को सम्बोधित करते पं. विद्यानिवास मिश्र। जागरण

प्रारम्भ में मुख्य अतिथि ने राहुलजी के चित्र पर माल्यार्पण के बाद दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संस्था के अध्यक्ष डा. त्रिलोक पाण्डेय ने स्वागत भाषण व सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का संचालन किया। संगोष्ठी में डा.कमल गुप्त, डा.पृथ्वीपाल पांडेय,वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु उपाध्याय, डा.मुक्ता, डा. राधेश्यामधर द्विवेदी, डा. हरि प्रसाद अधिकारी, बी.एल. प्रजापति ने भी विचार व्यक्त किये।

हिन्दुस्तान
वाराणसी
वाराणसी/लखनऊ, शनिवार, 1 मार्च, 2003 13

'महासमुद्र का नाम है राहुल सांकृत्यायन'

वाराणसी (सं)। राहुल सांकृत्यायन एक महासमुद्र का नाम है। राहुल हिन्दी प्रदेश की उस पताका का नाम है जिसने सारी दुनिया को हिन्दी को सम्मान देने के लिए विवश किया। ये विचार डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने व्यक्त किये। वे महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के उद्घाटन अवसर पर शुक्रवार को मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे।डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि राहुल ने भारतीय चिंतन के सभी पक्षों का गहनता से अध्ययन किया। उनकी सतत यात्रा भूगोल की न होकर खगोल की रही। उनके शोध व ग्रंथ आज भी लोगों के प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। इसके पूर्व मुख्य अतिथि ने केन्द्र का फीता काटकर व शिलापट्ट का अनावरण करके उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण भी किया। केन्द्र में राहुलजी द्वारा रचित अनेक पुस्तकों का संकलन उपलब्ध है।

दैनिक जागरण
वाराणसी/अंचल
वाराणसी, 24 अप्रैल, 2003 7

...कोटि का है भारतीय दर्शन :नवांग समतेन

...सी ...न शोध एवं ... में ... दो ... दिन ... ब्ती ... देशक ... कि ... माना ... सी भी ... य दर्शन अत्यन्त उच्चकोटि का है।

कबीर चौरा स्थित कबीर कीर्ति मंदिर के सभागार में प्रो.रघुनाथ गिरि की कृति 'फिलासफी आफ पुराणाज्' का विमोचन करते हुए उन्होंने कहा कि दर्शन को धर्म से अलग करने की प्रथा पाश्चात्य है। अंग्रेजी भाषा में इस ग्रंथ को लिखकर इसे विश्वव्यापी बनाया गया है।

मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुराण विभाग के पूर्व अध्यक्ष रमाशंकर त्रिपाठी ने कहा कि पुराणों की रचना तीन भाषाओं में की गयी है, जो क्रमश: सामान्य भाषा, विचित्र भाषा व समाज भाषा में है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि नवांग समतेन व समारोह के अध्यक्ष प्रो.एन.एस.एस.रमन ने दीप प्रज्ज्वलित कर व पं.राहुल जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। अतिथियों का स्वागत केंद्र के संरक्षक डा.राधेश्याम द्विवेदी ने व माल्यार्पण रघुनाथ गिरि ने किया।

'फिलासफी आफ पुराणाज्' का विमोचन करते समतेन। जागरण

समारोह में प्रो.गंगाधर पण्डा, प्रो.यू.सी.दूबे, बी.एल.प्रजापति ने विचार व्यक्त किये।

समारोह की अध्यक्षता प्रो.एन. एस. एस.रमने व संचालन राधेश्याम द्विवेदी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने किया।

2003

हिन्दुस्तान
संक्षिप्त समाचार
वाराणसी/लखनऊ, सोमवार, 21 अप्रैल, 2003 5

कार्यक्रम आज से

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से 22 व 23 अप्रैल को सायं पांच बजे सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय में दो दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया है। पहले दिन संगोष्ठी और दूसरे दिन 'फिलासफी आफ पुराणाज' का लोकार्पण होगा। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मभूषण पं. विद्यानिवास मिश्र होंगे। जानकारी केन्द्र की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने दी है।

अमर उजाला
8 वाराणसी, बुधवार, 23 अप्रैल, 2003

◆ नगर में आज

● प्रो. रघुनाथ गिरी की पुस्तक फिलासफी आफ पुराणाज पर वाद-चर्चा एवं विमोचन, कबीर कीर्तिमंदिर कबीरचौरा में 5 बजे से।

हिन्दुस्तान
वाराणसी/लखनऊ, बुधवार, 23 अप्रैल, 2003

राहुल के यात्रा विवरण समाज के लिए पथ-प्रदर्शक: विद्यानिवास

वाराणसी (सं.)। राहुल सांकृत्यायन ज्ञान की प्रत्येक सम्पदा के निकट पहुंचना चाहते थे। उनके साहित्य का एक बहुत बड़ा अंश समाज के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य करता है। यह विचार पं. विद्यानिवास मिश्र ने व्यक्त किये। साहित्य वाचस्पति राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रुप में पं. मिश्र बोल रहे थे। कबीर रोड स्थित कबीर कीर्ति मंदिर में दो दिवसीय कार्यक्रम के तहत 'महापण्डित राहुल सांकृत्यायन का विचार दर्शन' विषयक यह संगोष्ठी, महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र द्वारा आयोजित था। संगोष्ठी में डॉ. कमल गुप्त, डॉ. मुक्ता, डॉ. रघुनाथ गिरि, डॉ. राधेश्यामधर द्विवेदी, हिमांशु आदि ने विचार व्यक्त किये।

नगर में आज

❑ प्रो. रघुनाथ गिरी की पुस्तक का लोकार्पण, कबीर कीर्ति मंदिर में सायं 5 बजे।

2003

आज
वाराणसी महानगर
23 जुलाई 2003

राहुल सांकृत्यायन ज्ञानकी सम्पदाको हर जगह पहुंचाना चाहते थे

राहुल सांकृत्यायन अपने ज्ञानकी सम्पदाको हर स्थानपर पहुंचाना चाहते थे। उनके विचार और व्यवहार उनके आलोचकोंको भी प्रभावित करता था। राहुल द्वारा लिखित साहित्य आजके युवाओंको पथ प्रदर्शकका कार्य करता है।

राहुल जयंतीपर आयोजित दो दिवसीय गोष्ठीके उद्घाटनपर डाक्टर विद्यानिवास मिश्रके विचार

वे जिन विद्याओंसे जुड़े थे, उसकी चर्चा आज होनी चाहिए।

यह विचार पद्मभूषण डाक्टर विद्यानिवास मिश्रने मंगलवारको कबीरकीर्ति मंदिरमें राहुल सांकृत्यायनकी जयंतीपर आयोजित दो दिवसीय संगोष्ठीके उद्घाटन अवसरपर मुख्य अतिथि पदसे व्यक्त किये। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्रकी ओरसे आयोजित 'महापंडित राहुल सांस्कृत्यायनका विचार दर्शन' विषयक गोष्ठीमें डाक्टर मिश्रने कहा कि राहुलने अपने जीवनमें कई यात्राएं की। अध्ययनके लिए वे तिब्बत भी गये। राहुलको गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि विषयोंकी जानकारी जेलमें मिली थी। वे महिलाओंसे अत्यन्त दयालु तथा प्रेम भाव रखते थे। उन्होंने कहा कि राहुलने अपने यात्रा विवरणको जिस प्रकार लिखा है, उससे पता चलता है कि उनकी दृष्टि कितनी सर्वग्राही थी। उन्होंने हिन्दीको राज्य भाषाके रूपमें प्रतिष्ठित करनेका प्रयास किया। उनकी देश भक्ति उन्हें हिन्दी तथा समग्र विरासतसे जोड़ती थी। राहुलने आदि कालसे हिन्दी कविताओंका संग्रह तैयार किया।

इस अवसरपर सुप्रसिद्ध साहित्यकार डाक्टर बच्चन सिंहने कहा कि राहुल क्रांतिकारी बुद्धिजीवी थे। उन्होंने जो कुछ भी किया अपने विवेकसे किया। हम सबको उनसे प्रेरणा लेनी चाहिए। राहुल हिन्दी और उर्दू दोनोंके पक्षधर थे। डाक्टर सिंहने कहा कि वास्तविक बुद्धिजीवी वहीं होता है जो पुरातनको तोड़ता है। राहुलके ग्रंथोंमें क्रांतिकारी दर्शन झलकता है। मुख्य अतिथिने दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रमका शुभारम्भ किया। समारोहको संस्कृत विश्वविद्यालयके डाक्टर व्यास मिश्र, डाक्टर हरिप्रसाद अधिकारी, डाक्टर अविनाथ नाथ त्रिपाठी, रेणु द्विवेदी, डाक्टर कमल गुप्त, डाक्टर मुक्ता, डाक्टर रघुनाथ गिरि आदिने भी सम्बोधित किये। संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तवने किया।

संगोष्ठीमें विचार व्यक्त करते हुए डाक्टर विद्यानिवास मिश्र। छाया: 'आज'

2003

अमर उजाला

8 वाराणसी, शुक्रवार, 28 फरवरी, 2003

● महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र का उद्घाटन संस्था के के. 57-125 नवापुरा स्थित परिसर में सायं 4 बजे।

दैनिक जागरण

वाराणसी/अंचल

वाराणसी, 28 फरवरी, 2003 7

राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन आज

वाराणसी: 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र' का उद्घाटन 28 फरवरी को सायंकाल 4 बजे मुख्य अतिथि डा.कमलेश दत्त त्रिपाठी करेंगे। नवापुरा स्थित केन्द्र के भवन में आज आयोजित पत्रकार वार्ता में यह जानकारी देते हुए केन्द्र की सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने बताया कि उद्घाटन समारोह की अध्यक्षता डा.बेनीमाधव शुक्ल करेंगे। इस अवसर पर सिटी मजिस्ट्रेट सर्वज्ञराम मिश्र, डा.वी.वी.उपाध्याय व श्रीमती नीता उपाध्याय विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित होंगे। उन्होंने बताया कि संस्था का मुख्य का उद्देश्य राहुल सांकृत्यायन जी की कृतियों व पाण्डुलिपियों को एकत्र कर सुरक्षित रखना, संकलन व प्रकाशन तथा उनका प्रचार-प्रसार करना है। इस संस्था का कार्यक्षेत्र समस्त भारत है।

हिन्दुस्तान | वाराणसी

वाराणसी/लखनऊ, शुक्रवार, 28 फरवरी, 2003 4

शोध एवं अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन आज

वाराणसी (सं)। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र का मुख्य उद्देश्य पद्मभूषण राहुल सांकृत्यायन की साहित्य साधना से प्राप्त ग्रंथों का प्रचार-प्रसार, संकलन, प्रकाशन व संरक्षण प्रदान करना है। केन्द्र का उद्घाटन 28 फरवरी को सायं चार बजे होगा। यह जानकारी केन्द्र की सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने दी।

डॉ. संगीता ने बताया कि उद्घाटन के मुख्य अतिथि डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी होंगे जबकि अध्यक्षता डॉ. बेनी माधव शुक्ल करेंगे। समारोह में राहुलजी की नतिनी नीता उपाध्याय व उनके पति डॉ. वी. वी. उपाध्याय भी उपस्थित रहेंगे। उन्होंने बताया कि पुस्तक मेलों व प्रदर्शनियों के जरिए उनका प्रचार-प्रसार किया जायेगा ताकि समाज उनके बारे में जान सके। केन्द्र उनके बिखरे पड़े साहित्य को संकलित करेगा तथा उनकी स्मृति में प्रतिवर्ष राहुल पत्रिका का प्रकाशन करेगा।

2003

आज वाराणसी, १ मार्च, २००३ वाराणसी

साहित्यके महासागरका नाम है राहुल सांस्कृत्यायन

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र उद्घाटित

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन साहित्यके महासागरका नाम है, जिसमें धर्म, संस्कृति, भाषा, इतिहास, भूगोल, शिक्षा सहित सभी क्षेत्रोंके उच्चकोटिके साहित्य उपलब्ध हैं। अपने साहित्य सेवाकालमें व्यापक पैमानेपर रचनाओंके सृजनको भविष्यमें अविश्वसनीय सा माना जायगा कि एक ही व्यक्ति इतने विषयोंपर इतना कुछ कैसे कर सकता है।

यह विचार काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके अन्तरराष्ट्रीय विजिटिंग प्रोफेसर एवं मुख्य अतिथि प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठीने शुक्रवारको नवापुरा स्थित 'मतापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र' का उद्घाटन करनेके बाद केन्द्रमें आयोजित संगोष्ठीमें व्यक्त किये।

प्रोफेसर त्रिपाठीने कहा कि राहुल सांस्कृत्यायन हिन्दी देशकी उस पताका का नाम है जिसने विश्वमें हिन्दीको सम्मान देनेके लिए विवश किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी साहित्यके मनीषियों डाक्टर रामविलास शर्मा और आचार्य रघुवीर सहित राहुल सांस्कृत्यायन है, जो अपने-अपने क्षेत्रोंसे विश्व पटलपर हिन्दी मनीषीके रूपमें विख्यात है। उनकी बहुआयामिताका आकलन और उल्लेख करना सहज नहीं है। वे यायावर थे और उनकी साहित्यमें भी यायावरी रही। उन्होंने इतिहास देखने और लिखनेकी अलग शैली विकसित की।

अन्य वक्ताओंने कहा कि राहुल सांस्कृत्यायन अब उन साहित्यकारोंकी पंक्तिमें दिखायी पड़ते हैं, जिन्हें उनकी विद्वता और गहरे दर्शनके चलते लोग भूल जाना चाहते हैं, जबकि उन्हें समझ लेनेवाले साहित्यके ज्ञानमें ऐसे गोते लगाते हैं कि इसका आनन्द लेनेके लिए दूसरोंको भी प्रेरित करते हैं।

संगोष्ठीमें डाक्टर पृथ्वीपाल पाण्डेय, डाक्टर जितेन्द्रनाथ मिश्र, डाक्टर कन्हैया सिंह, श्रीमती मंजुला चतुर्वेदी, डाक्टर विनोद कुमार श्रीवास्तव, ईभा गुप्त, उर्मिला देवी, श्रीमती शान्ति खन्ना, डाक्टर अविराम तिवारीने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षता डाक्टर राधेश्याम द्विवेदी और संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तव, धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर सुरेन्द्र सिंहने किया। प्रारम्भमें मुख्य अतिथि प्रोफेसर त्रिपाठीने फीता काटकर केन्द्रका उद्घाटन किया।

सन्मार्ग ०१ मार्च २००३ 3

राहुल सांकृत्यायन शोध केन्द्र उद्घाटित

वाराणसी, २८ फरवरी। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र का उद्घाटन आज चुने हुये विद्वानों एवं साहित्यकारों के बीच किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि सुविज्ञ डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी, अध्यक्ष डॉ. बेनी माधव शुक्ल, विशिष्ट अतिथि सीटी मजिस्ट्रेट सर्वज्ञ मिश्र, डॉ. वी.वी. उपाध्याय एवं श्रीमती नीता उपाध्याय थी। उद्घाटन समारोह में केन्द्र के अध्यक्ष डॉ.पृथ्वीपाल पाण्डेय, उपाध्यक्ष बी.एल.प्रजाति आदि भी उपस्थित थे। विद्वानों ने समारोह में महान घुमक्कड़ तथा १५० ग्रन्थों के रचयिता राहुल सांस्कृत्यायन की विद्वता उनके घुमक्कड़पन की चर्चा की और कहा कि साहित्य जगत में उनके प्रति दिखलायी जा रही है इधर की उपेक्षा उनके व्यक्तित्व एवं कृतित्व के प्रति अन्याय करना है। कार्यक्रम की संध्या पर केन्द्र की सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने पत्रकारों को बताया कि काशी की पण्डित सभा ने उन्हें महापंडित की उपाधि दी थी। इसी प्रकार श्री तेरा ने उन्हें विद्यालंकार तथा साहित्य अकादमी ने उन्हें साहित्य वाचस्पति से अलंकृत किया था। उन्होंने कहा कि संस्था का उद्देश्य विश्व स्तर पर बिखरे उनके साहित्य को एकत्रित करना, तिब्बत से लायी गयी प्राचीनतम् पाण्डुलिपियों को पटना के जायसवाल संग्राहलय से वापस लाना है जो पाली संस्कृत तथा तिब्बतियन भाषाओं में है। उन्होंने बताया कि संस्था प्रदर्शनियों एवं मेलों द्वारा राहुल जी के विचारों एवं उनके द्वारा किये गये कार्यों की जानकारी आम जनता तक पहुंचायेगी। उन्होंने बताया कि संस्था का उद्देश्य पद्मभूषण राहुल सांकृत्यायन की साहित्य साधना से प्रान्त ग्रंथों का प्रचार-प्रसार संकलन, प्रकाशन एवं संरक्षण करना, महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन के प्रगतिशील साहित्यिक विचारों से साहित्य जगत् को परिचित कराना एवं क्रियान्वित कराना। 'राहुल पत्रिका' का प्रकाशन तत्वविदों के दुर्लफ ग्रंथों, पांडुलिपियों, दस्तावेजों तथा दुर्लभ चित्रों का संग्रह करना, त्रिपिटिकाचार्य राहुल के बौद्धधर्म के संकलित ग्रंथों का समुचित विस्तार एवं प्रसार करना। साहित्यिक गोष्ठियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, शिविरों आदि का आयोजन कर उनके कृत्यों को जनहित में सर्वसुलभ कराना। हिन्दी साहित्य के विकास के लिए विद्वत जनों की कृतियों पर शोधकार्य करना आदि हैं।

2003

आज वाराणसी, १ मार्च, २००३ वाराणसी

साहित्यके महासागरका नाम है राहुल सांस्कृत्यायन

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र उदघाटित

महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायन साहित्यके महासागरका नाम है, जिसमें धर्म, संस्कृति, भाषा, इतिहास, भूगोल, शिक्षा सहित सबी क्षेत्रोंके उच्चकोटिके साहित्य उपलब्ध हैं। अपने साहित्य सेवाकालमें व्यापक पैमानेपर रचनाओंके सृजनको भविष्यमें अविश्वसनीय सा माना जायगा कि एक ही व्यक्ति इतने विषयोंपर इतना कुछ कैसे कर सकता है।

यह विचार काशी हिन्दू विश्वविद्यालयके अन्तरराष्ट्रीय विजिटिंग प्रोफेसर एवं मुख्य अतिथि प्रोफेसर कमलेशदत्त त्रिपाठीने शुक्रवारको नवापुरा स्थित 'मतापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र' का उद्घाटन करनेके बाद केन्द्रमें आयोजित संगोष्ठीमें व्यक्त किये।

प्रोफेसर त्रिपाठीने कहा कि राहुल सांस्कृत्यायन हिन्दी देशकी उस पताका का नाम है जिसने विश्वमें हिन्दीको सम्मान देनेके लिए विवश किया। उन्होंने कहा कि हिन्दी साहित्यके मनीषियों, डाक्टर रामविलास शर्मा और आचार्य रघुवीर सहित राहुल सांस्कृत्यायन हैं, जो अपने-अपने क्षेत्रोंसे विश्व पटलपर हिन्दी मनीषीके रूपमें विख्यात है। उनकी बहुआयामिताका आकंलन और उल्लेख करना सहज नहीं है। वे यायावर थे और उनकी साहित्यमें भी यायावरी रही। उन्होंने इतिहास देखने और लिखनेकी अलग शैली विकसित की।

अन्य वक्ताओंने कहा कि राहुल सांस्कृत्यायन अब उन साहित्यकारोंकी पंक्तिमें दिखायी पड़ते हैं, जिन्हें उनकी विद्वता और गहरे दर्शनके चलते लोग भूल जाना चाहते हैं, जबकि उन्हें समझ लेनेवाले साहित्यके ज्ञानमें ऐसे गोते लगाते हैं कि इसका आनन्द लैनेके लिए दूसरोंको भी प्रेरित करते हैं।

संगोष्ठीमें डाक्टर पृथ्वीपाल पाण्डेय, डाक्टर जितेन्द्रनाथ मिश्र, डाक्टर कन्हैया सिंह, श्रीमती मंजुला चतुर्वेदी, डाक्टर विनोद कुमार श्रीवास्तव, ईभा गुप्त, उर्मिला देवी, श्रीमती शान्ति खन्ना, डाक्टर अविराम तिवारीने विचार व्यक्त किये। अध्यक्षता डाक्टर राधेश्याम द्विवेदी और संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तव, धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर सुरेन्द्र सिंहने किया। प्रारम्भमें मुख्य अतिथि प्रोफेसर त्रिपाठीने फीता काटकर केन्द्रका उदघाटन किया।

हिन्दुस्तान वाराणसी
वाराणसी/लखनऊ, शनिवार, 1 मार्च, 2003 13

'महासमुद्र का नाम है राहुल सांकृत्यायन'

वाराणसी (सं)। राहुल सांकृत्यायन एक महासमुद्र का नाम है। राहुल हिन्दी प्रदेश की उस पताका का नाम है जिसने सारी दुनिया को हिन्दी को सम्मान देने के लिए विवश किया। ये विचार डॉ. कमलेश दत्त त्रिपाठी ने व्यक्त किये। वे महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के उद्घाटन अवसर पर शुक्रवार को मुख्य अतिथि पद से बोल रहे थे। डॉ. त्रिपाठी ने कहा कि राहुल ने भारतीय चिंतन के सभी पक्षों का गहनता से अध्ययन किया। उनकी सतत यात्रा भूगोल की न होकर खगोल की रही। उनके शोध व ग्रंथ आज भी लोगों के प्रेरणास्रोत बने हुए हैं। इसके पूर्व मुख्य अतिथि ने केन्द्र का फीता काटकर व शिलापट्ट का अनावरण करके उद्घाटन किया। इस दौरान उन्होंने उनकी तस्वीर पर माल्यार्पण भी किया। केन्द्र में राहुलजी द्वारा रचित अनेक पुस्तकों का संकलन उपलब्ध है।

2003

दैनिक जागरण
वाराणसी/अंचल
वाराणसी, 24 अप्रैल, 2003 7

अत्यन्त उच्चकोटि का है भारतीय दर्शन :नवांग समतेन

निज प्रतिनिधि, वाराणसी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में राहुल जयंती पर आयोजित दो दिवसीय समारोह के दूसरे दिन बुधवार को मुख्य अतिथि तिब्बती शिक्षा संस्थान के निदेशक प्रो.नवांग समतेन ने कहा कि पुराणों को वेद का पूरक माना जाता है। दुनियां के किसी भी दर्शन की तुलना में भारतीय दर्शन अत्यन्त उच्चकोटि का है।

कबीर चौरा स्थित कबीर कीर्ति मंदिर के सभागार में प्रो.रघुनाथ गिरि की कृति 'फिलासफी आफ पुराणाज्' का विमोचन करते हुए उन्होंने कहा कि दर्शन को धर्म से अलग करने की प्रथा पाश्चात्य है। अंग्रेजी भाषा में इस ग्रंथ को लिखकर इसे विश्वव्यापी बनाया गया है। मुख्य वक्ता काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के पुराण विभाग के पूर्व अध्यक्ष रमाशंकर त्रिपाठी ने कहा कि पुराणों की रचना तीन भाषाओं में की गयी है, जो क्रमशः सामान्य भाषा, विचित्र भाषा व समाज भाषा में है। कार्यक्रम का शुभारम्भ मुख्य अतिथि नवांग समतेन व समारोह के अध्यक्ष प्रो.एन.एस.एस.रमन ने दीप प्रज्ज्वलित कर व पं.राहुल जी के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। अतिथियों का स्वागत केंद्र के संरक्षक डा.राधेश्याम द्विवेदी ने व माल्यार्पण रघुनाथ गिरि ने किया।

'फिलासफी आफ पुराणाज्' का विमोचन करते समतेन। जागरण

समारोह में प्रो.गंगाधर पण्डा, प्रो.यू.सी.दूबे, बी.एल.प्रजापति ने विचार व्यक्त किये।

समारोह की अध्यक्षता प्रो.एन. एस. एस.रमने व संचालन राधेश्याम द्विवेदी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने किया।

दैनिक जागरण
वाराणसी समाचार
4 वाराणसी, 23 अप्रैल, 2003

राहुल सांकृत्यायन के जीवन यात्रा साहित्य पर विमर्श जरूरी

शिक्षा प्रतिनिधि, वाराणसी

पद्मभूषण प्रो. विद्यानिवास मिश्र ने कहा है कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्याकरण, दर्शन, न्यायशास्त्र व मीमांसा पर बराबर चर्चा करते रहते थे। उनके साहित्य का बहुत बड़ा अंश ऐसा था, जो पथ-प्रदर्शक का काम करता है। उनकी यात्रा से पता चलता है कि वे सर्वग्राही दृष्टि रखते थे। देश व हिमालय के प्रति उनका गहरा लगाव था। राहुल सांकृत्यायन के जीवन यात्रा के साथ जिन-जिन विधाओं से वे जुड़े थे, उन पर भी चर्चा होनी चाहिए।

■ राहुल सांकृत्यायन संगोष्ठी में प्रो. विद्या निवास मिश्र का कथन

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केन्द्र द्वारा राहुल जयंती पर मंगलवार को कबीर कीर्ति मंदिर में आयोजित 'महापंडित राहुल सांकृत्यायन का विचार दर्शन' विषयक संगोष्ठी में प्रो. मिश्र ने मुख्य अतिथि पद से कहा कि जीवन में परिश्रम का मूल्य क्या होता है, यह शिक्षा मैंने उनसे ली है। उनमें एक त्वरा थी। वे कठमुल्ला नहीं थे। संस्कृत, भोट, हिन्दी, अंग्रेजी, गणित व विज्ञान विषयों पर उनकी बराबर पकड़ थी। उनके विचारों में मौलिकता, व्यवहार में विनम्रता व स्त्री के प्रति आदरशीलता का भाव था।

संगोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए हिन्दी के प्रसिद्ध समीक्षक डा. बच्चन सिंह ने कहा कि राहुलजी क्रांतिकारी बुद्धिजीवी व खाटी मार्क्सवादी थे। वे लकीर के फकीर नहीं थे। राहुल के विवेक से हम लोगों को नये निर्माण के लिए सबक लेना चाहिए।

■ गोष्ठी को सम्बोधित करते पं. विद्यानिवास मिश्र। जागरण

प्रारम्भ में मुख्य अतिथि ने राहुलजी के चित्र पर माल्यार्पण के बाद दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। संस्था के अध्यक्ष डा. त्रिलोक पाण्डेय ने स्वागत भाषण व सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का संचालन किया। संगोष्ठी में डा.कमल गुप्त, डा.पृथ्वीपाल पांडेय,वरिष्ठ पत्रकार हिमांशु उपाध्याय, डा.मुक्ता, डा. राधेश्यामधर द्विवेदी, डा. हरि प्रसाद अधिकारी, बी.एल. प्रजापति ने भी विचार व्यक्त किये।

2004

हिन्दुस्तान

वाराणसी

वाराणसी/लखनऊ, शुक्रवार, 09, अप्रैल, 2004 4

www.hindustandainik.com

नगर में आज

● राहुल सांकृत्यायन जयंती, राहुल सांकृत्यायन शोध केंद्र नवापुरा में सायं 5 बजे।

वाराणसी जागरण

9 अप्रैल, 2004 दैनिक जागरण वाराणसी

॥ प्रणाम ॥

वैशाख कृष्ण 4, विक्रम संवत-2061

आज शुक्रवार को अपने शहर में

■ जयंती

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में राहुल सांकृत्यायन की जयंती नवापुरा स्थित केन्द्र पर सायंकाल 5 बजे।

आज

वाराणसी,८ अप्रैल, २००४ ४

राहुल सांकृत्यायनकी जयन्ती नौको

नवापुरा स्थित महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्रके तत्वावधानमें नौ अप्रैलको सायं पांच बजे राहुल सांकृत्यायनकी जयन्ती मनायी जायेगी। कार्यक्रमकी अध्यक्षता डाक्टर बच्चन सिंह करेंगे।

2004

हिन्दुस्तान

वाराणसी/लखनऊ, शनिवार, 10, अप्रैल, 2004 4

www.hindustandainik.com

वाराणसी

'महापंडित राहुल को भूल रहे हैं लोग'

■ 111वीं जयन्ती पर याद किये गये राहुल सांकृत्यायन

■ अपने आप में एक मिसाल थे राहुल : यादवेश

वाराणसी (सं)। महापंडित राहुल अपने आप में ज्ञान के दीप थे। उन्होंने विशाल साहित्य की रचना की। इसके बावजूद उन्हें याद तक न करना दुःखद है। राहुल को लोग क्यों भूल रहे हैं। यह सोचने की आवश्यकता है। ये विचार हैं जाने माने साहित्यकार प्रो.बच्चन सिंह के। वे शुक्रवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से राहुल सांकृत्यायन की 111वीं जयन्ती पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे।

प्रो. सिंह ने कहा कि राहुल मानवीय गुणों से ओतप्रोत थे। उनके अन्दर गहरी संवेदना थी। उन्हें समय की पहचान थी। उनके जीवन में निरन्तरता थी। कभी एक स्थान पर टिके नहीं। हर जगह उन्हें कुछ सीखने को मिलता था। हिन्दी साहित्य में भी उनका विशिष्ट योगदान रहा है। हिन्दी में आत्मकथा की विधा को उनका सर्वश्रेष्ठ योगदान है। विशिष्ट अतिथि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के वरिष्ठ प्रबंधक यादवेश कुमार ने कहा कि राहुल अद्वितीय ऊर्जा के धनी थे। उनके अन्दर जिज्ञासा का महासमुन्द्र छिपा हुआ था। घुमक्कड़ी की उनकी आदत उन्हें हर जगह से कुछ न कुछ सीखने को प्रेरित करती रही। उन्होंने जो पाया उसे ग्रहण किया। इतना ही नहीं सरल भाषा में सबके लिए उसे परोसा भी। जो अधिक महत्वपूर्ण है। वे अपने आप में मिसाल थे। विशाल व्यक्तित्व के धनी राहुल से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। डा. कन्हैया सिंह ने कहा कि राहुल पोगापंथ के विरोधी थे। उन्होंने हिन्दू धर्म की मूल बातों का सम्मान भी किया है। राहुल काफी कुछ छोड़ गये हैं उसे समझने की आवश्यकता है। प्रो.राधेश्याम द्विवेदी का कहना था कि राहुल जाति, धर्म, कर्मकांड और साम्प्रदायिकता से परे थे। आत्मवाद की जगह अनात्मवाद की चर्चा कर उन्होंने लोगों को माया-मोह से मुक्त रहने की सलाह दी। डा.अमिताभ ने कहा कि बहुआयामी प्रतिभा वाले राहुल का व्यक्तित्व जटिल था। डा.जितेन्द्र मिश्र की राय में राहुल के लेखन में विविधता के साथ उलझाव भी है। संगोष्ठी का संचालन व धन्यवाद ज्ञापन संस्था की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने किया।

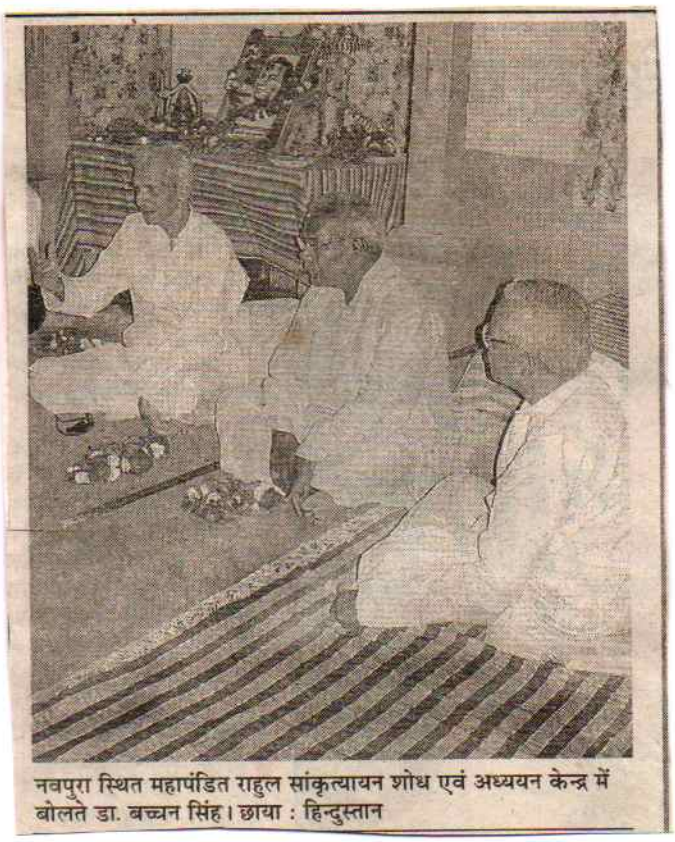

नवपुरा स्थित महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र में बोलते डा. बच्चन सिंह। छाया : हिन्दुस्तान

2004

अमर उजाला
वाराणसी
6 वाराणसी, शनिवार, 10 अप्रैल, 2004

'जनमानस ने न्याय नहीं किया महापंडित के साथ'

अमर उजाला संवाददाता

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों के साथ ही भारतीय जनमानस ने न्याय नहीं किया। अत्यंत समृद्ध और ज्ञानप्रद साहित्य लेखन के बाद भी वह अपने लोगों के बीच ही बेगाने हो गए हैं। राहुलजी को वामपंथी विचारधारा के लोगों ने अपने हित के लिए प्रयोग किया, लेकिन वास्तविक अर्थों में हम आज भी उनके कृतित्व से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। यह बातें डा. बच्चन सिंह ने महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित गोष्ठी में कहीं।

राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर गोष्ठी

उन्होंने कहा कि राहुलजी की जिज्ञासा सिर्फ देशाटन में नहीं, बल्कि भाषा, साहित्य और समाज के प्रति अत्यधिक थी। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके प्रासंगिक लेखों को संकलित कर प्रकाशित किया जाए। विशिष्ट वक्ता यादवेश कुमार ने कहा कि महापंडित की जिज्ञासा समुद्र की भांति विशाल थी। उनके अंदर सीखने की असीम ललक थी। डा. कन्हैया सिंह ने हैदराबाद के निजाम से जुड़े उनके कुछ संस्मरण भी सुनाए।

संगोष्ठी का संचालन डा.संगीत श्रीवास्तव ने किया। गोष्ठी में डा.जितेंद्रनाथ मिश्र, डा. राधेश्याम द्विवदी, अशोक सिंह, प्रभात यादव, उमा देवी, डा.विनोद कुमार श्रीवास्तव, सुनीता चौबे, सुलक्षणा चतुर्वेदी, विभा मालवीय, आशा पाठक आदि लोगों ने विचार व्यक्त किए।

हिन्दुस्तान 4
वाराणसी/लखनऊ, शनिवार, 10, अप्रैल, 2004
www.hindustandainik.com

'महापंडित राहुल को भू...

■ 111वीं जयन्ती पर याद किये ग...
■ अपने आप में एक मिसाल थे ...

वाराणसी (सं)। महापंडित राहुल अपने आप में ... के दौर थे। उन्होंने विशाल साहित्य की रचना की। इसके बावजूद उन्हें याद तक न करना दुःखद है। राहुल को लोग क्यों भूल रहे हैं। यह सोचने की आवश्यकता है। ये विचार हैं जाने माने साहित्यकार प्रो.बच्चन सिंह के। वे शुक्रवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से राहुल सांकृत्यायन की 111वीं जयन्ती पर आयोजित संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे थे।

प्रो. सिंह ने कहा कि राहुल मानवीय गुणों से ओतप्रोत थे। उनके अन्दर गहरी संवेदना थी। उन्हें समय की पहचान थी। उनके जीवन में निरन्तरता थी। कभी एक स्थान पर टिके नहीं। हर जगह उन्हें कुछ सीखने को मिलता था। हिन्दी साहित्य में भी उनका विशिष्ट योगदान रहा ... आत्मकथा की विधा को उनका सर्वश्रेष्ठ योगदान ... अतिथि 'हिन्दुस्तान टाइम्स' के वरिष्ठ प्रबंधक ... ने कहा कि राहुल अद्वितीय ऊर्जा के धनी ... जिज्ञासा का महासमुन्द्र छिपा हुआ था ... आदत उन्हें हर जगह से कुछ न कुछ ग्रहण ... रही। उन्होंने जो पाया उसे ग्रहण ... भाषा में सबके लिए उसे परोसा ... है। वे अपने आप में मिसाल थे ...

राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र में
छाया : हिन्दुस्तान

आज
वाराणसी, १० अप्रैल, २००४ ?

राहुल सांस्कृत्यायनकी जयन्ती मनायी गयी

नवापुरा स्थित महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्रमें डाक्टर बच्चन सिंह की अध्यक्षतामें शुक्रवारको यायावर महापंडित राहुल सांस्कृत्यायनकी जयंती मनायी गयी।

इस अवसरपर मुख्यअतिथि डाक्टर बच्चनसिंह ने दीप प्रज्वलित कर महापंडितके चित्रपर माल्यार्पण कर कार्यक्रमका शुभारंभ किया तथा संस्था द्वारा स्थापित राहुल पुस्तकालयका अवलोकन किया। अतिथियोंने संस्थाकी सचिव डाक्टर संगीता श्रीवास्तवके राहुल- साहित्यके संकलनकी सराहनाकीओर कहाकि एक साथ समग्र राहुल साहित्यका एक ही स्थान पर एकत्र कर पाना सचमुच दुरूह कार्य है। इस व्यवस्थासे राहुल साहित्यमें रूचि रखने वाले लोगों और राहुलपर शोध कार्य करने वाले शोध छात्रों को अत्यधिक सुविधा होगी।

इस अवसरपर डाक्टर कमल गुप्त, डाक्टर विनाद कुमारश्रीवास्तव, डाक्टर राधेश्याम द्विवेदी, डाक्टर जितेन्द्र नाथ मिश्र, डाक्टर सुरेन्द्र प्रताप, श्रीमती उमादेवी श्रीवास्तव, श्री के. एम. श्रीवास्तव, श्रीमती सुनिता चौबेश्रीमती सुलक्षणा चतुर्वेदी, श्रीमती विभा मालवीय, श्रीमती आशा पाठक, सलीम राजा श्रीप्रभात यादव, डाक्टर राय, डाक्टर मुक्ता, श्री अशोक सिंह आदि लोग

2004

आज
वाराणसी, १० अप्रैल, २००४ २

राहुल सांस्कृत्यायनकी जयन्ती मनायी गयी

नवापुरा स्थित महापंड़ित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एव अध्ययन केन्द्रमें डाक्टर बच्चन सिंह की अध्यक्षतामें शुक्रवारको यायावर महापंडित राहुल सांस्कृत्यायनकी जयंती मनायी गयी।

इस अवसरपर मुख्यअतिथि डाक्टर बच्चनसिंह ने दीप प्रज्वलित कर महापंडितके चित्रपर माल्यार्पण कर कार्यक्रमका शुभारंभ किया तथा संस्था द्वारा स्थापित राहुल पुस्तकालयका अवलोकरन किया। अतिथियोंने संस्थाकी सचिव डाक्टर संगीता श्रीवास्तवके राहुल- साहित्य के संकलनकी सराहनाकीऔर कहाकि एक साथ समग्र राहुल - साहित्यका एक ही स्थान पर एकत्र कर पाना सचमुच दुरूह कार्य है। इस व्यवस्थासे राहुल साहित्यमें रूचि रखने वाले लोगों और राहुलपर शोध कार्य करने वाले शोध छात्रों को अत्यधिक सुविधा होगी।

इस अवसरपर डाक्टर कमल गुप्त, डाक्टर विनाद कुमारश्रीवास्तव, डाक्टर राधेश्याम द्विवेदी,डाक्टर जितेन्द्र नाथ मिश्र, डाक्टर सुरेन्द्र प्रताप, श्रीमती उमादेवी श्रीवास्तव, श्री के. एम. श्रीवास्तव, श्रीमती सुनिता चौबेश्रीमती सुलक्षणा चतुर्वेदी, श्रीमती विभा मालवीय, श्रीमती आशा पाठक , सलीम राजा ,श्रीप्रभात यादव,डाक्टर राय, डाक्टर मुक्ता, श्री अशोक सिंह आदि लोग

अमर उजाला
वाराणसी
6 वाराणसी, शनिवार, 10 अप्रैल, 2004

'जनमानस ने न्याय नहीं किया महापंडित के साथ'

अमर उजाला संवाददाता

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों के साथ ही भारतीय जनमानस ने न्याय नहीं किया। अत्यंत समृद्ध और ज्ञानप्रद साहित्य लेखन के बाद भी वह अपने लोगों के बीच ही बेगाने हो गए हैं। राहुलजी को वामपंथी विचारधारा के लोगों ने अपने हित के लिए प्रयोग किया, लेकिन वास्तविक अर्थों में हम आज भी उनके कृतित्व से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं। यह बातें डा. बच्चन सिंह ने महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित गोष्ठी में कहीं।

राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर गोष्ठी

उन्होंने कहा कि राहुलजी की जिज्ञासा सिर्फ देशाटन में नहीं, बल्कि भाषा, साहित्य और समाज के प्रति अत्यधिक थी। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि उनके प्रासंगिक लेखों को संकलित कर प्रकाशित किया जाए। विशिष्ट वक्ता यादवेश कुमार ने कहा कि महापंडित की जिज्ञासा समुद्र की भांति विशाल थी। उनके अंदर सीखने की असीम ललक थी। डा. कन्हैया सिंह ने हैदराबाद के निजाम से जुड़े उनके कुछ संस्मरण भी सुनाए। संगोष्ठी का संचालन डा.संगीत श्रीवास्तव ने किया। गोष्ठी में डा.जितेंद्रनाथ मिश्र, डा. राधेश्याम द्विवदी, अशोक सिंह, प्रभात यादव, उमा देवी, डा.विनोद कुमार श्रीवास्तव, सुनीता चौबे, सुलक्षणा चतुर्वेदी, विभा मालवीय, आशा पाठक आदि लोगों ने विचार व्यक्त किए।

2004

शोकसभाएं, श्रद्धांजलि

4 सन्मार्ग, वाराणसी, 24 फरवरी, 2005

पंडित सीताराम चतुर्वेदी हिन्दी के पुरोधा थे

वाराणसी, 23 फरवरी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध संस्थान नवापुरा में पंडित सीताराम चतुर्वेदी के निधन पर हुई शोकसभा में निदेशक सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने चतुर्वेदी जी के कृतित्व-व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हे हिन्दी साहित्य का पुरोधा और कालजयी पुरुष बताया। सभा में डा. वी.के.श्रीवास्तव, उमा श्रीवास्तव, बी.एल.प्रजापति आदि ने श्रद्धांजलि अर्पित की। काशी साहित्यिक संगम की शोकसभा में अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश सिन्हा ने पंडित सीताराम चतुर्वेदी को बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न महामानव बताते हुए कहा कि उनके निधन से हिन्दी साहित्य की जो क्षति हुई है उसकी भरपाई संभव नहीं है।

वाराणसी, बृहस्पतिवार, 17 फरवरी, 2005 9

पंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र में हुई शोक सभा में संस्था की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि ऐसा पथप्रदर्शक मिलना अत्यंत दुर्लभ है। उन्होंने कहा कि उनका निधन समाज की ऐसी क्षति है जिसकी पूर्ति संभव नहीं है।

4 सन्मार्ग, वाराणसी, 18 फरवरी, 2005

पं.विद्यानिवास मिश्र के निधन पर शोक

वाराणसी,17 फरवरी। काशी के मूर्धन्य साहित्यकार तथा राज्यसभा के सदस्य डा.विद्यानिवास मिश्र के आकस्मिक निधन पर नवापुरा स्थित महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की आवश्यक बैठक में संस्था की सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने डा.मिश्र के संस्मरण सुनाते हुए उन्हें मनीषी कहा। साहित्य जगत में उनकी अपूरणीय क्षति पूरी नही हो सकती।

2005

महापंडित राहुल सांकृत्यायन
-समारोह (९ अप्रैल 2005)

जयंती-समारोह (९ अप्रैल 2005)

जयंती-समारोह (९ अप्रैल 2005)

दैनिक जागरण
8 वाराणसी, 10 अप्रैल, 2005

याद किये गये महापंडित राहुल सांकृत्यायन

कार्यालय प्रतिनिधि, वाराणसी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध संस्थान एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से शनिवार को नवापुरा स्थित संस्था के कार्यालय में आयोजित 112 जयंती समारोह में विद्वानों ने महापंडित जी के कृतित्व एवं व्यक्तित्व पर विस्तृत रूप से चर्चा की।

समारोह को सम्बोधित करते मुख्य अतिथि मनु शर्मा। जागरण

समारोह का शुभारंभ प्रख्यात साहित्यकार मनु शर्मा ने महापंडित के चित्र पर माल्यार्पण कर एवं दीप जलाकर किया तथा अध्यक्षता काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो.सुरेन्द्र सिंह ने की। इस अवसर पर विशिष्टि अतिथि के रूप में डा.बच्चन सिंह एवं पूर्व न्यायाधीश गोविन्द प्रसाद श्रीवास्तव मौजूद थे। समारोह में आये अतिथियों का स्वागत संस्था की सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने किया।

इस अवसर पर डा.जितेन्द्र नाथ मिश्र, डा.रामसुधार सिंह, डा.बालेश्वर श्रीवास्तव, डा.कमल गुप्त, डा.किरन पाठक सहित कई वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किये।

॥ प्रणाम ॥

चैत्र/शुक्ल 1, विक्रम सम्वत 2062

आज शनिवार को अपने शहर में

■ राज्यारोहण

नव संवत्सर पर श्री शनिदेव का राज्यारोहण छोटी पियरी स्थित वेद भवन में सायंकाल 6 बजे।

■ जयंती

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में नवापुरा स्थित कार्यालय में महापंडित की 112वीं जयंती सायंकाल 5 बजे।

हिन्दुस्तान
वाराणसी/लखनऊ, रविवार, 10, अप्रैल, 2005 4

'[illegible]ोजी प्रवृत्ति के थे महापंडित राहुल'

वाराणसी (सं)। खोजी प्रवृति के म[illegible]न राहुल सांस्कृत्यायन विलक्षण स्म[illegible]शक्ति के धनी थे। यही कारण था कि वह कहते थे कि 'मैं अपने सेकेण्डों का हि[illegible] तो नहीं दे सकता लैकिन मिनटों का हि[illegible]दे सकता हूं।' इनके साहित्य में अध्ययन की विविधता और विस्तार मिलता है।

[illegible] विचार शनिवार को महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से राहुल सांकृत्यायन की 112वीं ज[illegible]र आयोजित संगोष्ठी में वक्ताओं ने व्य[illegible]किये। नवापुरा स्थित केन्द्र के प्रांगण में विद्वानों ने राहुलजी के चित्र पर मा[illegible]र्पण और दीप प्रज्जवलित कर [illegible] का उद्घाटन किया। वक्ताओं ने विचार-विमर्श के दौरान ही सवाल उठाया कि महापंडित राहुल अपने आप में ज्ञान के [illegible] उन्होंने विशाल साहित्य की रचना की। इसके बावजूद उन्हें याद तक न करना दुःखद है। राहुल को लोग क्यों भूल रहे हैं। यह सोचने की आवश्यकता है। राहुल मानवीय गुणों से ओतप्रोत थे। उनके अन्दर गहरी संवेदना थी और समाज की समझ थी। उन्हें समय की पहचान थी। उनके जीवन में निरन्तरता थी। कभी एक स्थान पर टिके नहीं। हर जगह उन्हें कुछ सीखने को मिलता था। हिन्दी साहित्य में भी उनका विशिष्ट योगदान रहा है। हिन्दी में आत्मकथा की विधा को उनका सर्वश्रेष्ठ योगदान है।

वक्ताओं ने कहा कि उनके अन्दर जिज्ञासा का महासमुद्र छिपा था। उन्होंने जो पाया उसे ग्रहण किया और उसे समाज के लिए सुलभ कराया। तिब्बत से खच्चर आदि पर लादकर हिन्दी साहित्य की अत्यंत महत्वपूर्ण साहित्य को सहेजा। अनेक भाषाओं पर समान रूप से हक रखने के बावजूद अपनी भूमि और मिट्टी की भाषा के प्रति पूरी श्रद्धा रखते थे। गोष्ठी के मुख्य अतिथि साहित्यकार डा. मनु शर्मा थे। अध्यक्षता काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. सुरेन्द्र सिंह ने की। विशिष्ट अतिथि के तौर पर गोविंद प्रसाद श्रीवास्तव मौजूद थे।

■ 112वीं जयन्ती पर याद किये गये राहुल सांकृत्यायन

विचार व्यक्त करने वालों में डा. जितेन्द्र नाथ मिश्र, डा. रामसुधार सिंह, डा. किरन पाठक, डा.अमिताभ, अशोक सिंह आदि के नाम शामिल है। अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा स्वागत किया डा. विनोद कुमार श्रीवास्तव, प्रजापति, के.एम.श्रीवास्तव ने किया। संगोष्ठी का संचालन संस्था की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव तथा धन्यवाद ज्ञापन कीर्ति प्रकाश पाण्डेय ने किया।

वाराणसी

दैनिक जागरण

4 वाराणसी, 10 अप्रैल, 2006

एक नजर

धारा के विपरीत चलकर कालजयी बने सांस्कृत्यायन

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन अद्भुत प्रतिभा के धनी थे। धारा के विपरीत चलकर वह कालजयी बने। सैर ही उनकी पाठशाला थी। यह विचार है साहित्यकार मनु शर्मा के। वह महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केन्द्र, नवापुरा द्वारा रविवार को आयोजित जयंती समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने उनके कई संस्मरण सुनाये और कहा कि महापंडित ने बौद्धो का बहुत उपकार किया। कविता को छोड़कर उन्होंने सब कुछ लिखा। समारोह को डॉ.अशोक सिंह, डॉ.अत्रि भारद्वाज, प्रो. सुरेन्द्र प्रताप सिंह, चन्द्रबली शास्त्री, संगीता श्रीवास्तव आदि ने भी सम्बोधित किया।

गांडीव

(वाराणसी) रविवार, ९ अप्रैल, २००६

महापंडित राहुल सांकृत्यायन जयंती समारोह कल

काशी, ८अप्रैल। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र नवापुरा के०५७।१२५ के तत्वावधान में राहुल सांकृत्यायन जयंती समारोह कल शाम ५बजे से आयोजित है। जिसमें विद्वान साहित्यसेवी व पत्रकार अपने विचार रखेंगे। निर्देशिका व कावयित्री डा० संगीता श्रीवास्तव ने बताया कि मुख्य अतिथि साहित्यकार मनुशर्मा होंगे। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार आर०राजीवन होंगे।

वाराणसी/गाजीपुर/भदोही

2 युनाइटेड भारत इलाहाबाद, 18 सितम्बर, 2006

भागो नहीं, दुनिया बदलो और बदलो दिमागी गुलामी

हिन्दी दिवस धूमधाम से मना

में हिन्दी दिवस पर महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में बाल भारती स्कूल लोहटिया में हिन्दी के विकास में राहुल सांस्कृत्यायन, जिसके मुख्य अतिथि पूर्व विभागाध्यक्ष बीएचयू हिन्दी विभाग डा. चौथीराम यादव थे।

यहां संगोष्ठी में वक्ताओं ने हिन्दी के विकास पर भाषण देकर कहा कि भागो नहीं, दुनिया बदलों और बदलो दिमागी गुलामी, तुम्हारी क्षय जैसे कृतियों को युवा पीढ़ी पढ़े और विचारों को आत्मसात करें। संगोष्ठी को नागेन्द्रनाथ झा, आनन्द तिवारी ने भी सम्बोधित किया। संगोष्ठी में मुख्य रूप से डा. वी.के. श्रीवास्तव, श्रीमती सुनीता चौबे, नन्दलाल प्रजापति आदि लोगों ने शिरकत किया। अतिथियों का स्वागत बाल भारती के प्रधानाचार्य डा. मेंहदी बख्त ने किया।

आज

वाराणसी, १५ सितम्बर, २००६ २

अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी दिवसके अवसरपर गुरुवारको नगरकी विभिन्न सामाजिक एवं सरकारी संघटनोंकी ओरसे संगोष्ठीका आयोजन किया गया। संगोष्ठीमें वक्ताओंने कहाकि संवाद एवं संचारका सशक्त माध्यम मात्र हिन्दी ही हो सकती है।

विचार व्यक्त किये। नवापुरा स्थित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्रमें आयोजित संगोष्ठीमें वक्ताओंने कहाकि पंडित जी ३६ भाषाओंके ज्ञाता थे फिर उन्होंने हिन्दीमें ही अपनी रचनाएं लिखीं। इस अवसरपर प्रोफेसर नागेन्द्रनाथ झा, आनन्द तिवारी आदिने विचार व्यक्त किय। संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तव एवं स्वागत श्री मेहंदी बखतने किया।

2006

हिन्दुस्तान

वाराणसी

वाराणसी/लखनऊ, सोमवार, 10 अप्रैल, 2006 2

महापंडित राहुल थे अद्‌भुत प्रतिभा के धनी : मनु शर्मा

वाराणसी (सं)। महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन अद्‌भुत प्रतिभा के धनी थे। खुलापन उनके व्यक्तित्व का अंग था। सैर उनकी पाठशाला थी। वे अपने सोचे-समझे सत्य को ही जीते थे। ये विचार हैं साहित्यकार मनु शर्मा के।

वे रविवार को नवापुरा में महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध अध्ययन केन्द्र की ओर से आयोजित जयंती समारोह को बतौर मुख्य अतिथि सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि उनमें भाषा की ग्राह्यता थी। कर्मकांड को कभी स्वीकार नहीं किया। इसलिए

वर्तमान में उनके समग्र मूल्यांकन की जरूरत : डा. मिश्र

वे धर्म को वस्त्र की तरह पहनते थे और उतारते थे। कविता को छोड़कर उन्होंने सब कुछ लिखा। अध्यक्ष पद से समीक्षक डा.जितेन्द्र नाथ मिश्र ने कहा कि उनका विवेचना कार्य दर्शन से अलग है। उनका फलक काफी बड़ा था, आज उनके समग्र मूल्यांकन की जरूरत है। लेखिका डा.मुक्ता ने कहा कि वे धारा के विपरीत चलने में विश्वास करते थे। गीतकार डा.अशोक सिंह ने कहा कि राहुल जी की विपुलता को एक सूत्र में बांधना दुरुह कार्य है। काशी विद्यापीठ में हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डा.सुरेन्द्र प्रताप सिंह ने कहा कि साहित्य के लिए प्रतिबद्धता आवश्यक है। वैचारिक अनुशासन भी होना चाहिए। यह राहुलजी में था। यह चिन्ता की बात है कि वैश्वीकरण की दौर में हिन्दी पिछड़ रही है। इस मौके पर चन्द्रबली शास्त्री ने भी विचार व्यक्त किए। आरम्भ में स्वागत केन्द्र की सचिव डा.संगीता श्रीवास्तव ने किया।

2007

आज
वाराणसी, १० अप्रैल २००७ ५

राहुल सांकृत्यायनने मानवताको दिया प्रथम स्थान

काशी विद्यापीठमें आयोजित जयंती समारोहमें साहित्यकार मनु शर्माके उद्‌गार

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्रके तत्वावधानमें सोमवारको काशी विद्यापीठके केन्द्रीय पुस्तकालयमें आयोजित महापंडित राहुल सांकृत्यायनके जयंती समारोहमें वक्ताओंने उनके मानवतावादी दृष्टिकोणपर विचार प्रकट किया।

प्रख्यात साहित्यकार मनु शर्माने स्वर्गीय राहुल सांकृत्यायनके जीवन एवं साहित्य दर्शनके अनेक बिन्दुओंपर प्रकाश डाला और कहा कि उनकी जीवन यात्रा मानवताकी तलाश की यात्रा थी। उन्होंने मानवताको प्रथम स्थान दिया। डाक्टर रामसुधार सिंहने कहा कि वे जीवनकी जड़ताको तोड़नेकी हिमायती थे। डाक्टर अत्री भारद्वाजने कहा कि 'राहुल' ने अपने जीवनकी किताबको पढ़कर ऊंचाई तक पहुंचे थे। साहित्यकार डाक्टर मुक्ताने कहा कि राहुलका जीवन विलक्षण था। वे नारी स्वतंत्रताके समर्थक थे। डाक्टर उर्मिला चतुर्वेदीने कहा कि भारतीय दर्शनपर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी। डाक्टर अशोक सिंहने कहा कि वे मनुष्यताको ऊंचाईपर ले जाना चाहते थे।

समारोहकी अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर सदानन्द शाहीने कहा कि राहुल जीने हमेशा सिद्धान्तोंको जीवनके आइनेमें देखा। अतिथियोंका स्वागत करते हुए डाक्टर अनिल कुमार उपाध्यायने कहा कि राहुल सांकृत्यायन मनुष्यको अपने दायरेसे बाहर लाना चाहते थे। कार्यक्रमका संचालन डाक्टर संगीता श्रीवास्तव एवं धन्यवाद ज्ञापन डाक्टर सत्येन्द्र प्रताप सिंहने किया।

दैनिक जागरण
॥ प्रणाम ॥
सोमवार, वैशाख कृष्ण षष्ठी, 2064
आज शहर में
वाराणसी, 9 अप्रैल, 2007 | 3
www.jagran.com

संगोष्ठी : विद्यापीठ के पत्रकारिता व जनसंचार विभाग तथा राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केंद्र के तत्वावधान मे संगोष्ठी पुस्तकालय समिति कक्ष में अपराह्न 3 बजे।

अमर उजाला
वाराणसी, मंगलवार, 10 अप्रैल, 2007 ■ 10

राहुल सांकृत्यायन की जयंती मनाई

वाराणसी। विद्यापीठ के पुस्तकालय समिति कक्ष में महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के तत्वावधान में सांकृत्यायन जयंती मनायी गयी। प्रख्यात साहित्यकार मनु शर्मा ने उनके जीवन के साहित्य दर्शन का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि उनकी जीवन यात्रा मानवता की तलाश यात्रा थी।

अध्यक्षीय भाषण में प्रो. सदानंद शाही ने कहा कि राहुल जी ने हमेशा सिद्धांतों को जीवन के आइने में देखा। जहां भी जड़ता पाते छोड़कर आगे बढ़ जाते थे। डा. मुक्ता ने कहा कि राहुल जी नारी स्वतंत्रता के धनी थे। इस अवसर पर सतानंद, डा. उर्मिला चतुर्वेदी, डा. अनिल कुमार उपाध्याय, डा. हसंगीता श्रीवास्तव, बीएल प्रजापति, डा. सुरेन्द्र प्रताप सिंह आदि लोग उपस्थित थे।

वाराणसी

हिन्दुस्तान वाराणसी/लखनऊ, मंगलवार, 10 अप्रैल, 2007

सांकृत्यायन की जयंती पर संगोष्ठी

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती के मौके पर सोमवार को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के समिति कक्ष में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से आयोजित थी। मुख्य अतिथि प्रख्यात साहित्यकार मनुशर्मा ने कहा कि उनकी जीवन यात्रा मानवता की तलाश की यात्रा थी। अध्यक्षीय भाषण में प्रो.सदानंद शाही ने कहा कि राहुलजी ने हमेशा सिद्धान्तों को जीवन के आइने में देखा। साहित्यकार मुक्ता का कहना था कि वे नारी स्वतंत्रता के समर्थक थे। पत्रकार डा.अत्रि भारद्वाज की राय में राहुलजी जीवन की किताब को पढ़कर ऊंचाई तक पहुंचे। डा.उर्मिला चतुर्वेदी ने कहा कि भारतीय दर्शन पर उन्होंने अमिट छाप छोड़ी। डा.अशोक सिंह ने कहा कि वे मनुष्यता के प्रबल समर्थक थे। स्वागत डा.अनिल उपाध्याय किया।

2010

वाराणसी, १० अप्रैल, २०१० ५ आज
वाराणसी महानगर

विद्यापीठमें आयोजित संगोष्ठीको सम्बोधित करते मनु शर्मा। छाया : आज

बहुआयामी व्यक्तित्वके रचनाकार थे राहुल सांकृत्यायन

विद्यापीठमें आयोजित संगोष्ठीमें वाइसचांसलर प्रोफेसर अवधरामके विचार

राहुल सांकृत्यायन बहुआयामी व्यक्तित्वके ऐसे बड़े रचनाकार थे जिनकी क्षमताका दूसरा व्यक्ति खोजना कठिन है। यह बात काशी विद्यापीठके वाइसचांसलर प्रोफेसर अवध रामने राहुल सांकृत्यायन जंयतीपर पत्रकारिता विभाग एवं महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्रके संयुक्त तत्वावधानमें समिति कक्षमें आयोजित 'राहुलकी रचना धर्मिता' विषयक गोष्ठीमें शुक्रवारको बतौर मुख्य अतिथि कही।

उन्होंने कहाकि राहुल जी गांवसे निकले थे और सारे संसारमें घूमते हुए भी गांवके संस्कारोंको सहजताके साथ बचाये रखा था। सुप्रसिद्ध कथाकार एवं साहित्यकार मनुशर्माने कहा कि राहुल जी एक रास्तेपर बंधकर चलने वाले व्यक्ति और रचनाकार नहीं थे उनकी दृष्टि हमेशा भविष्यको खोजती थी।

राहुल जी मानते थे कि जबतक मनुष्य यात्राएं नहीं करता है तब तक उसका ज्ञान पूरा नहीं होता। प्रोफेसर अवधेश प्रधानने कहाकि राहुल जी मौलिक चिंता, विचारक एवं महान लेखक थे उनके निष्कर्षोंकी प्रासंगिकतापर विचार करनेकी जरूरत आज भी है। प्रोफेसर मंजुला चतुर्वेदीने कहाकि राहुल जी लोकजीवनके साथ सहजता एवं गहराईके साथ जुड़े हुए थे लोग आज भी श्रद्धाके साथ उनका स्मरण करते है। हिन्दी विभागके अध्यक्ष प्रोफेसर श्रद्धानन्दने कहाकि राहुल सांकृत्यायनके ज्ञान और साहित्यको किसी विद्यामें सीमित नहीं किया जा सकता है।

डाक्टर अमिताभ तिवारीने कहाकि राहुल जीका कठिन जीवन संघर्ष और जिजीविषा, उनकी अद्भुत रचनाधार्मिताका मूल रहा। अध्यक्षता करते हुए प्रोफेसर चौथीराम यादवने कहाकि काशीमें कई विश्वविद्यालय है जहां सभी विषयोंकी पढ़ाई होती है। किन्तु यह दुर्भाग्य की बात है कि कोई विभाग राहुल जीके स्मरण और मूल्यांकनकी जरूरत नहीं समझता। जबकि राहुल जीका अद्भुत लेखन इन सभी विषयोंमें मौलिक, प्रमाणिक तथा विचारणीय है। संगोष्ठीमें अतिथियोंका स्वागत डाक्टर अनिल उपाध्याय, संचालन संस्थाकी सचिव डाक्टर संगीता श्रीवास्तव एवं धन्यवाद ज्ञापन संजय श्रीवास्तवने किया। संगोष्ठीमें डाक्टर बृजबाला सिंह, डाक्टर राजीव उपाध्याय, डाक्टर उर्मिला चतुर्वेदी, डाक्टर पवन कुमार शास्त्री, प्रवीण कुमार आदिने विचार व्यक्त किया।

2010

दैनिक जागरण
वर्ष 39 अंक 145
पृष्ठ 18
वाराणसी, शुक्रवार
9 अप्रैल, 2010
नगर संस्करण *

प्रणाम 3
शुक्रवार, शुद्ध वैशाख कृष्ण दशमी, 2067

आज शहर में

संगोष्ठी: राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र, नवापुरा व काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता विभाग के संयुक्त तत्वावधान में केंद्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में संगोष्ठी पूर्वाह्न 11 बजे।

हिन्दुस्तान
शुक्रवार 9 अप्रैल 2010
वाराणसी
4

नगर में आज

■ संगोष्ठी : राहुल सांकृत्यायन शोध संस्थान व पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, काशी विद्यापीठ की ओर से विद्यापीठ में पूर्वाह्न 11.30 बजे।

दैनिक जागरण
वर्ष 39 अंक 146
पृष्ठ 20
वाराणसी, शनिवार
10 अप्रैल, 2010
नगर संस्करण *

राहुल सांकृत्यायन को नहीं बांध सकी कोई विचारधारा

वाराणसी, प्रतिनिधि : राहुल सांकृत्यायन की जीवन यात्रा साहित्यिक यात्रा थी और उनकी यात्राएं सोद्देश्य हुआ करती थीं। खोजी प्रवृत्ति के चलते उन्होंने तमाम अनछुए पुरातात्विक पहलुओं को उजागर किया। उनके द्वारा लिखित 'मध्य एशिया का इतिहास' उन्हें इतिहासकार के तौर पर भी स्थापित करता है। राहुल जनपक्षधर चिंतक थे और कोई भी वैचारिकी उन्हें बांध नहीं सकी। ये बातें प्रो. चौथीराम यादव ने महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के केंद्रीय पुस्तकालय समिति कक्ष में पत्रकारिता विभाग और महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर शुक्रवार को आयोजित गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए कही।

कहा कि रूढ़िवादिता व जन्मना परंपरा का विरोध उन्हें बौद्ध धर्म की ओर ले गया। विशिष्ट अतिथि के रूप में साहित्यकार मनु शर्मा ने कहा कि राहुल एक रास्ते पर बंधकर चलने वाले रचनाकार नहीं थे। उनकी खोजी दृष्टि हमेशा भविष्य पर रहती थी। उनका मानना था कि जबतक मनुष्य यात्राएं नहीं करता तब तक उसका ज्ञान पूरा नहीं होता है। राहुल की तर्क प्रवणता और बुद्धिजीविता की चर्चा सभी करते हैं किंतु उनकी अंतर्धारा में भावुकता अंत तक प्रवाहित थी। कुलपति प्रो. अवधराम ने दीप जलाकर गोष्ठी का शुभारंभ किया। प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. श्रद्धानंद, प्रो. मंजुला चतुर्वेदी, डॉ. बृजबाला सिंह, डॉ. रामसुधार सिंह, प्रवीण कुमार आदि ने भी विचार व्यक्त किए। विषय स्थापना डॉ. जितेन्द्र मिश्रा, स्वागत पत्रकारिता विभागाध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार उपाध्याय, संचालन डॉ. संगीता श्रीवास्तव व धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संजय श्रीवास्तव ने किया।

2010

हिन्दुस्तान
शनिवार 10
अप्रैल 2010
वाराणसी
4

हिन्दुस्तान

नई दिशाएं

उड़ान

अ अमर उजाला | वाराणसी, शनिवार, 10 अप्रैल, 2010

बंधे रास्तों पर नहीं चलते थे पं. राहुल सांकृत्यायन

जयंती पर विद्यापीठ में गोष्ठी

वाराणसी। महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ स्थित केंद्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में शुक्रवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर अध्ययन केन्द्र और पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के संयुक्त तत्वाधान में राहुल की रचनाधर्मिता विषयक संगोष्ठी का आयोजन कुलपति प्रो. अवधराम के मुख्य अतिथ्य में किया गया। आयोजन का आगाज शमा रोशन कर कथाकार मनु शर्मा ने किया। उन्होंने कहा कि मेरा एक बार राहुल जी से साक्षात्कार हुआ था। मैं ऐसे राहुल को जानता हूं जो आत्मिक है। एक रास्ते से बंधकर चलने वाले वो नहीं थे। उनकी दृष्टि हमेशा भविष्य को खोजती थी। वह अतीत की दुर्बलताओं का रोना नहीं रोते थे। प्रो. मंजुला चतुर्वेदी ने कहा कि उनसे सीखने के लिए बहुत कुछ है। विषय स्थापना डा. जितेन्द्र नाथ मिश्र ने की। बीएल प्रजापति, डा. श्रद्धानंद, डा. अशोक मिश्रा, डा. सुमन ओझा, डा. बृजबाला, डा. रामसुधार सिंह, शिव कुमार पराग, मूलचन्द्र सोनकर, प्रवीण कुमार आदि ने भी प्रकाश डाला। स्वागत संस्था की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव और धन्यवाद डा. अनिल कुमार उपाध्याय ने किया।

2010

महापंडित राहुल सांकृत्यायन-जयन्ती समारोह
दिनांक 09 अप्रैल 2010 , शुक्रवार
विषय - राहुल की रचना धर्मिता
डा. अनिल उपाध्याय ★ डा. संगीता श्रीवास्तव ★ श्री बी. एल. प्रजापति
महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र , नवापुरा, वाराणसी
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ , वाराणसी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन-जयन्ती समारोह
दिनांक 09 अप्रैल 2010 , शुक्रवार
विषय - राहुल की रचना धर्मिता
डा. अनिल उपाध्याय ★ डा. संगीता श्रीवास्तव ★ श्री बी. एल. प्रजापति
महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र , नवापुरा, वाराणसी
पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ , वाराणसी

दिनांक 09 अप्रैल 2010 , शुक्रवार
विषय - राहुल की रचना धर्मिता

2011

6 | दैनिक जागरण वाराणसी, 13 जून 2011

वाराणसी जागरण

इतिहास सभ्यता-संस्कृति की गाथा

राहुल सांकृत्यायन स्मृति समारोह में पुस्तक का हुआ विमोचन। जागरण

वाराणसी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन की दृष्टि में सभ्यता-संघर्ष की गाथा ही इतिहास है, राजा-महाराजाओं की वंशावली नहीं। ये बाते प्रख्यात समीक्षक डॉ. शिव कुमार मिश्र ने कही। वह रविवार को काशी विद्यापीठ के पत्रकारिता व जनसंचार विभाग तथा राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में हुए कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि संबोधित कर रहे थे। विद्यापीठ परिसर स्थित केंद्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में राहुल सांकृत्यायन-स्मृति समारोह-11 में केंद्र की सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव की राहुल के कथा साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि नामक

काशी विद्यापीठ

- ग्रंथ का किया गया विमोचन

ग्रंथ का विमोचन किया गया। इस अवसर पर डॉ. रामसुधार सिंह, डॉ. अभिताभ तिवारी, डॉ. अवधेश प्रधान, डॉ. मुक्ता आदि ने विचार व्यक्त किया।

स्वागत केंद्र के अध्यक्ष पृथ्वीपाल पांडेय, संचालन डॉ. जितेंद्रनाथ मिश्र व धन्यवाद ज्ञापन पत्रकारिता विभाग के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार उपाध्याय ने किया।

2011

राष्ट्रीय
सहारा 5

काशी वचन

हमरे सिरकी नयी चुनरिया ले गोरस में सानी। हमरे उनके करन वाद है हम देखादत जबानी।। सूरदास

वाराणसी | सोमवार • 13 जून • 2011

अद्वितीय रचनाकार थे राहुल सांकृत्यायन

विद्यापीठ समिति कक्ष में पुस्तक का विमोचन करते शिवकुमार व अन्य। फोटो: एसएनबी

▶ राहुल के साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि पुस्तक का हुआ लोकार्पण

वाराणसी (एसएनबी)। प्रख्यात आलोचक व जनवादी लेखक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. शिवकुमार मिश्र ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन के ज्ञान की परिधि इतनी व्यापक थी कि भारत वर्ष में उनके जैसा रचनाकार कोई दूसरा नहीं दिखायी पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि राहुल जी इतिहास को सभ्यता के विकास के संघर्ष के रूप में देखते थे। इस लिए इतिहास के बारे में उनके बहुत से निष्कर्षों के बारे में कुछ लोग उनसे सहमत नहीं हो। उक्त विचार डा. मिश्रा ने रविवार को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ समिति कक्ष में 'राहुल के साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं पुस्तक लोकार्पण में व्यक्त किया।

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर अवधेश प्रधान ने कहा कि राहुल जी अपनी रचनाओं में कई जगह पर परम्परागत प्रेमी मस्तिष्क को आहत करते हैं। उन्होंने कहा कि विशेष रूप से आर्यों के सन्दर्भ में उनके जो निष्कर्ष थे या बाल्मीकि या कालिदास के विषय में उनके विचार आम भारतीय के गले नहीं उतरती है, किन्तु इस यायावर व्यक्तित्व के स्वामी ने जो महसूस किया उसे अपनी लेखनी में उतारा। काशी विद्यापीठ अध्यापक संघ के अध्यक्ष डा. अनिल उपाध्याय ने कहा कि राहुल जी ने अपनी रचनाओं में हमेशा वास्तविकता को कलमबद्ध किया है। अपनी पुस्तक पर चर्चा करते हुए लेखिका डा. संगीता श्रीवास्तव ने बताया कि राहुल के कथा साहित्य में ऐतिहासिकता का विशेष महत्व है। संगोष्ठी में डा. चौथीराम यादव, डा. मुक्ता, डा. रामसुधार सिंह, डा. बिन्दु दूबे, डा. बृजबाला, डा. सुरेन्द्र प्रताप ने विचार व्यक्त किया। अतिथियों का स्वागत डा. पीपी पाण्डेय व संचालन डा. जितेन्द्रनाथ मिश्र ने किया।

2011

अमर उजाला

वाराणसी | सोमवार | 13 जून 2011

युवा वाराणसी

अद्भुत है राहुल का रचना संसार

अमर उजाला ब्यूरो

- डा. संगीता श्रीवास्तव की पुस्तक का हुआ विमोचन

वाराणसी। राहुल सांकृत्यायन जैसे महान रचनाकार की कृतियां ऐतिहासिक तथ्यों का दस्तावेज हैं। सुदूर यात्राओं के दौरान मिले अनुभवों और साक्ष्यों को उन्होंने शब्दों की माला में पिरोया है।

यह बातें संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात समीक्षक डा. शिव कुमार मिश्र ने कहीं। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र और पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को विद्यापीठ में 'राहुल के साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि' विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस मौके पर डा. संगीता श्रीवास्तव द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया गया। अतिथियों का स्वागत संस्था के अध्यक्ष डा. पीपी पांडेय ने किया। विशिष्ट अतिथि डा. अनिल कुमार उपाध्याय रहे। डा. अवधेश प्रधान, डा. राम सुधार सिंह, डा. बिंदु दुबे, डा. बृजबाला एवं डा. सुरेंद्र प्रताप ने भी विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन डा. जितेंद्र नाथ मिश्र ने किया।

हिन्दुस्तान वाराणसी • सोमवार • 13 जून 2011 10

वाराणसी/जनपद

सांकृत्यायन की बराबरी नहीं

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

हिन्दी के जाने माने आलोचक प्रो.शिवकुमार मिश्र ने कहा है कि राहुल सांकृत्यायन के ज्ञान का क्षितिज इतना विस्तृत था कि हिन्दी क्या भारत की किसी भी भाषा में उनके जोड़ का दूसरा लेखक शायद ही मिले। प्रो.मिश्र रविवार को महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में राहुल सांस्कृत्यायन स्मृति समारोह में मुख्य अतिथि थे।

समारोह का आयोजन महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र और पत्रकारिता विभाग ने किया था। प्रो.मिश्र ने कहा कि राहुल लीक छोड़कर चलने वाले रचनाकार थे। इसलिए उनमें बहुत सी असमानताएं हैं और अभी तक उन्हें सही रूप में समझा नहीं जा सका है।

राहुल सांकृत्यायन के सामाजिक सारोकार इतने गहरे थे कि मनुष्य और मनुष्यता के अलावा किसी दूसरे मूल्य अथवा सिद्धांत की परिधि में वे समा नहीं सके। प्रो.अवधेश प्रधान ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन का इतिहास की ओर जाना उस काल की बहुत बड़ी जरूरत थी।

संगोष्ठी में डा.रामसुधार सिंह, डा.अमिताभ तिवारी, डा.अशोक कुमार सिंह और डा.मुक्ता आदि ने भी विचार रखे। आरंभ में अतिथियों का स्वागत डॉ.पृथ्वीपाल पांडेय ने और विषय का प्रतिपादन डा.संगीता श्रीवास्तव ने किया। धन्यवाद ज्ञापन पत्रकारिता विभागाध्यक्ष डा.अनिल श्रीवास्तव और कार्यक्रम का संचालन डा.जितेन्द्रनाथ मिश्र ने किया।

समारोह के दौरान मुख्य अतिथि ने डॉ.संगीता श्रीवास्तव की पुस्तक 'राहुल की कथा साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि' का लोकार्पण भी किया।

राहुल सांकृत्यायन स्मृति में आयोजित संगोष्ठी में पुस्तक विमोचन करते अतिथिगण।

स्मरण

- महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ में राहुल स्मृति समारोह
- 'राहुल की कथा साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि' लोकार्पित

2011

वाराणसी, 12 जून 2011 दैनिक जागरण 3

॥ प्रणाम ॥

रविवार, ज्येष्ठ शुक्ल
एकादशी, 2068

संगोष्ठी : राहुल सांकृत्यायन शोध अध्ययन केंद्र द्वारा राष्ट्रीय संगोष्ठी व पुस्तक लोकार्पण केंद्रीय पुस्तकालय काशी विद्यापीठ में अपराह्न 3 बजे।

2011

68/सोच विचार

अगस्त, 2011

राहुल जी का कथासाहित्य विषयक संगोष्ठी

पुस्तक का लोकार्पण

राहुल सांकृत्यायन साहित्य शोध एवं अध्ययन केन्द्र, दारानगर तथा पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग (म.गां.वि.पी.) के संयुक्त तत्वावधान में महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में 'राहुल जी की ऐतिहासिक दृष्टि' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए प्रख्यात समीक्षक प्रो. शिव कुमार मिश्र ने कहा कि राहुल जी के साहित्य को बहुत खुले दिमाग से पढ़ने की जरूरत है क्योंकि उनकी बहुत सारी नयी-नयी उद्भावनाएँ सामान्य पाठक को सहसा स्वीकार्य नहीं हो सकतीं। लेकिन इन्हें कोरी कल्पना कह कर खारिज भी नहीं किया जा सकता क्योंकि वे एक क्रांतदर्शी रचनाकार थे तथा अपने समय के बहुत आगे देख सकते थे।

संगोष्ठी में प्रो. अवधेश प्रधान, डॉ. पृथ्वीपाल पांडेय, डॉ. रामसुधार सिंह, डॉ. मुक्ता, डॉ. अनिल कुमार उपाध्याय, डॉ. अशोक कुमार सिंह और डॉ. अजिताभ तिवारी आदि ने भी विचार व्यक्त किए।

प्रारंभ में संकल्प प्रकाशन नई दिल्ली द्वारा नव प्रकाशित पुस्तक 'राहुल सांकृत्यायन के कथा साहित्य में ऐतिहासिक दृष्टि' की लेखिका डॉ. संगीता श्रीवास्तव में पुस्तक के विवेच्य विषय का परिचय देते हुए अतिथियों का स्वागत किया। आयोजक संस्था की ओर से धन्यवाद प्रकाश श्री बी.एल. प्रजापति ने किया।

2011

आज
वाराणसी, १३ जून, २०११ ५
वाराणसी महानगर

काशी विद्यापीठमें आयोजित संगोष्ठीमें विचार व्यक्त करते वक्ता। छाया:आज

सम्पूर्ण राहुल साहित्य ऐतिहासिकतासे परिपूर्ण हो-प्रोफेसर शिवकुमार मिश्र

राहुल सांकृत्यायनपर राष्ट्रीय संगोष्ठी और पुस्तक लोकार्पण समारोह

सम्पूर्ण राहुल साहित्य ऐतिहासिकतासे भरपूर है। वह चाहे कथा साहित्य हो या संस्मरण अथवा इतिहासगत कृतियां, सभीमें इतिहाल तत्वोंका यथार्थ अंकित हुआ है।

यह बातें रविवारको काशी विद्यापीठ पुस्तकालय समिति कक्षमें प्रख्यात समीक्षक प्रोफेसर शिवकुमार मिश्रने कही। वह राहुल सांस्कृत्यान स्मृति समारोहके अवसरपर महामंडित राहुल सांस्कृत्यान शोध एवं अध्ययन केन्द्र तथा काशी विद्यापीठ पत्रकारिता एवं जनसंचार विभागकी ओरसे आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी 'राहुल सांस्कृत्यानके साहित्यमें ऐतिहासिक दृष्टि' तथा डाक्टर संगीता श्रीवास्तवकृत राहुलके कखा साहित्यमें ऐतिहासिक दृष्टि, पुस्तकके लोकार्पणके पश्चात अध्यक्ष पदसे सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि राहुलजीके ज्ञानका क्षितिज विस्तृत था कि हिन्दी ही नहीं बल्कि भारतकी किसी भाषामें उनके जोड़का दूसरा लेखक शायद ही मिले। उनकी भागो नहीं दुनिया बदलो जैसी पुस्तकें पढ़कर हमारे छात्रजीवनमें युवक रोमांचित हो जाते थे। वे लीक छोड़कर चलने वाले रचनाकार थे इसलिए उनके भीतर बहुत सी असमानताएं हैं और अभीतक उन्हें सही रूपमें समझा नहीं जा सका है। प्रोफेसर मिश्रने कहा कि राहुल सांकृत्यायनके पास एक विजन था जो उन्हें मार्क्सवादकी ओर ले गया। मूलरूपसे कहा जाय तो राहुलजी की दृष्टिमें मनुष्यके सभ्यता संघर्षकी गाथा नहीं इतिहास है, राजा-महाराजाओंकी वंशावली नहीं। राहुलजीके सामाजिक सरोकारपर चर्चा करते हुए प्रोफेसर मिश्रने कहा कि उनके सामाजिक सरोकार इतने गहरे थे कि मनुष्य और मनुष्यताके अलावा किसी दूसरे मूल्य अथवा सिद्धान्तकी परिधिमें वे कभी सभा नहीं कर सके। इतिहासके अध्ययन और विश्लेषणमें भी उनकी यही व्यापक दृष्टि काम करती थी। भेदभाव और विषमतासे रहित समाजकी स्थापना उनका एकमात्र लक्ष्य था। 'राहुलके कथा साहित्यमें ऐतिहासिक दृष्टि' पर चर्चा करते हुए प्रोफेसर मिश्रने कहा कि पुस्तकसे हिन्दी वांग्मयमें प्रोवृद्धि हुई है। इसकी काफी आवश्यकता थी क्योंकि राहुलजीका कथा साहित्य कई विश्वविद्यालयोंके पाठ्यक्रमोंमें भी अपनी पुस्तकके बारेमें डाक्टर संगीता श्रीवास्तवने कहा कि राहुलके कथा साहित्यमें ऐतिहासिकताका विशेष महत्व है इसलिए उनकी इतिहास दृष्टिसे विमुख नहीं हुआ जा सकता। संगोष्ठीमें डाक्टर रामसुधार सिंह, डाक्टर अजिताभ तिवारी, डाक्टर अशोक कुमार सिंह, डाक्टर अवधेश प्रधान, डाक्टर मुक्ता आदिने भी विचार व्यक्त किये। प्रारम्भमें दीप प्रज्वलनके बाद अतिथियोंने राहुलजीके चित्रपर माल्यार्पण किया। स्वागत डाक्टर पृथ्वीपाल पाण्डेय, धन्यवाद प्रकाश डाक्टर अनिल कुमार उपाध्याय तथा संचालन डाक्टर जितेन्द्रनाथ मिश्रने किया।

2012

जनवार्ता

2 वाराणसी, रविवार 6 मई 2012

बौद्ध साहित्य की अक्षुणता में राहुल का अप्रतिम योगदान

वाराणसी। शनिवार सारनाथ के मूलगन्ध कुटी विहार में भगवान बुद्ध की जयंती के अवसर पर महाबोधि सोसाइटी आफ इंडिया सारनाथ एवं महापंडित राहुल सांकृत्यान शोध एवं अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में राहुल की विचार यात्रा विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे प्रख्यात आलोचक प्रो. चौथी राम यादव एवं दिल्ली से आमंत्रित प्रखर आलोचक श्याम कश्यप तथा सोसाइटी के सह सचिव शिवली भन्ते व संस्था सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कार्यक्रम का उद्घाटन राहुल जी के चित्र पर पुष्प व माल्यार्पण करके किया। संस्था उपाध्यक्ष बीएल प्रजापति, कार्यक्रम संयोजक डा. संजय श्रीवास्तव ने विशिष्ट विद्वानों को माल्यार्पित कर स्मृति चिन्ह प्रदान किया। सोसाइटी के बौद्ध भिक्षुओं ने समवेत स्वर में बुद्ध की स्तुति कर सभागार को गुन्जायमान कर दिया। विद्वानों का स्वागत सोसाइटी के सह सचिव शिवली भन्ते ने स्वागत भाषण से किया। संस्था सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव संस्था विवरण प्रस्तुत करते हुए बताया कि बुद्ध पूर्णिमा के विशेष अवसर पर राहुल जी को सारनाथ में स्मरण करना उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि है। राहुल जी की दुर्गम यात्राओं का ही परिणाम है कि बौद्ध साहित्यिक ग्रन्थ हमें वापस मिले। राहुल जी ने सन 1930 में बौद्ध धर्म में प्रवज्जित हुए और सांकृत्यायन हो गये। इन्होंने अपनी चार तिब्बत यात्राओं के दौरान अनेक दुर्लभ बौद्ध ग्रन्थों का संग्रह कर उनका सम्पादक व अनुवाद किया। उनका योगदान अतुलनीय है। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता प्रसि, संस्कृत विद्वान कमलेश दत्त त्रिपाठी, विशिष्ट वक्ता दिल्ली से आये श्याम कश्यप अध्यक्ष प्रो. चौथी राम यादव तथा वक्तागण डा. श्री प्रकाश शुक्ल, डा. निरंजन सहाय, डा. शशिकला त्रिपाठी, डा. वंदना झा ने राहुल जी पर अपने विचार प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन डा. मंजरी पांडे तथा धन्यवाद ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक डा. संजय श्रीवास्तव ने किया।

वाराणसी

SUN DAY अमर उजाला

वाराणसी | रविवार | 6 मई 2012

धम्म यात्रा में उमड़े लोग, गोष्ठी हुई

बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या पर हुए कई कार्यक्रम

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। बुद्ध पूर्णिमा की पूर्व संध्या में नगर में विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस दौरान धम्म यात्रा निकाली गई तो स्मृति समारोह भी आयोजित हुए।

शनिवार को बौद्ध धर्म प्रचार प्रसार समिति सहित छह संस्थाओं के संयुक्त तत्वावधान में अरुण कुमार प्रेमी के नेतृत्व में विशाल धम्म यात्रा कचहरी स्थित अंबेडकर पार्क से निकाली गई। जो देर रात कचहरी पहुंचकर समाप्त हुई। सारनाथ में यात्रा में शामिल लोगों ने थाई विहार मंदिर में पूजा-अर्चना की। यात्रा में मुसाफिर, रामबचन, नंद किशोर, बृजेश कुमार भारती रहे।

सारनाथ संवाददाता के अनुसार, महाबोधि सोसायटी और राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में राहुल की विचार यात्रा विषयक गोष्ठी आयोजित की गई। संस्था की अपर सचिव संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि सारनाथ में राहुल सांस्कृत्यान के विषय में कार्यक्रम करना उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगी। राहुल की दुर्गम यात्राओं का ही परिणाम है कि बौद्ध साहित्यिक ग्रंथ हमें वापस मिले। संचालन डॉ. मंजरी पांडेय और धन्यवाद ज्ञापन डॉ. संजय श्रीवास्तव ने किया। इस दौरान कमलेश चंद्र द्विवेदी, श्याम कपूर, डॉ. शशिकला, श्रीप्रकाश शुक्ला, डॉ. निरंजन सहाय, डॉ. वंदना आदि ने भी अपने विचार रखे।

2012

मई - 2012

राष्ट्रीय संगोष्ठी
5 मई - 2012
राहुल की विचार-यात्रा
आयोजक
महाबोधि सोसाइटी ऑफ इण्डिया सारनाथ
हापंडित राहुल सांकृत्या धि एवं अध्ययन नवापुरा-वाराणसी

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भोजपुरी के विकास में राहुल सांकृत्यायन का योगदान

4–5 फरवरी 2012

उपशीर्षक:

लोक संस्कृति का आख्यान
राहुल की हिन्दी रचनाओं में भोजपुरी
भोजपुरी नाटक
राहुल सांकृत्यायन और भोजपुरी आन्दोलन।

स्थान

राधाकृष्णन सभागार ,काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

रजिस्ट्रेशन शुल्क

विद्यार्थियों के लिए ₹ 400.00, अन्य के लिए ₹ 800.00

टिप्पणी : कृपया अपने आलेख के एक पृष्ठ का सार–संक्षेप (ए–4, क्रुती देव–10 फान्ट) **25 जनवरी 2012** तक हार्ड कापी एवं सीडी भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, कला संकाय काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में जमा करें अथवा ई–मेल से bhojpuriseminarbhu@gmail.com पर भेजें।

आयोजन सचिव
श्रद्धा सिंह (मो0.9415530587)

संयोजक
सदानन्द शाही

आयोजक – भोजपुरी अध्ययन केन्द्र, कला संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
सहयोग– महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र, वाराणसी

2013

पायोनियर
लखनऊ, बुधवार, 10 अप्रैल, 2013

राहुल सांकृत्यायन की 120वीं जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

पायनियर समाचार सेवा। वाराणसी

आर्य महिला पीजी कालेज सभागार में मंगलवार दोपहर 12:30 बजे राहुल सांकृत्यायन की 120वीं जयंती के अवसर पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से आयोजित 'राहुल कथा यात्रा विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने अपने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का शुभारम्भ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जाने माने साहित्यकार डा. जितेन्द्रनाथ मिश्र, डा. मुक्ता, डा. पंकज गौतम व संस्था की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलन व राहुल सांकृत्यायन के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। आगत अतिथियों का स्वागत संस्था सचिव एवं उपाध्यक्ष बीएल प्रजापति नें किया। अपने स्वागत उद्बोधन में उन्होनें कहा कि साहित्य के क्षेत्र में राहुल सांकृत्यायन का नाम अमर है।

उन्होनें कहा कि उनके साहित्य में उनकी गूंज आज भी सुनाई देती है। उदय प्रताप कालेज हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. रामसुधार सिंह ने कहा की राहुल सांकृत्यायन हिन्दी साहित्य के सूर्य थे, जो साहित्य को आज भी आलोकित करता है। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि डा. सुरेन्द्र प्रताप समेत डा. श्रद्धानन्द, डा. बृजबाला सिंह, डा. संगीता, डा. रचना शर्मा, डा. संजय श्रीवास्तव, डा. किरन आदि मुख्य रूप से शामिल रहे।

वरिष्ठ छात्राओं के सम्मान में विदाई समारोह

आर्य महिला पीजी कालेज की नर्सरी टीचर्स ट्रेनिंग प्रथम वर्ष की छात्राओं ने विभाग की वरिष्ठ छात्राओं के सम्मान में विदाई समारोह का आयोजन किया। कार्यक्रम का संचालन टीचर्स ट्रेनिंग की रेणुका व शिल्पी ने संयुक्त रूप से किया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि विभाग की शिक्षिका बरखा, दीपा और निहारिका ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्वलित कर किया। विदाई समारोह का संयोजन स्मिता ने किया व आगत अतिथियों का स्वागत संगीता ने किया। इस अवसर पर पूजा, अनूभा, उमा, नितू, मोनिका, ममता, निलम आदि मुख्य रूप से शामिल रही।

2013

हिन्दुस्तान 02
वाराणसी • बुधवार • 10 अप्रैल 2013

रचनात्मक संघर्ष है राहुल का साहित्य : पंकज गौतम

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

किया याद

- आर्य महिला कॉलेज में जुटे साहित्यकार व विशिष्टजन
- राहुल सांस्कृत्यायन की 120वीं जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन

प्रसिद्ध आलोचक पंकज गौतम ने कहा है कि राहुल का सम्पूर्ण साहित्य समाजवादी समाज की स्थापना का रचनात्मक संघर्ष है। ऐतिहासिक तथ्यों को रूप देने के लिए जहां उन्होंने कल्पनाशीलता का सहारा लिया वहां उनकी कल्पना निखर उठती है। इसके पीछे उनकी प्रगतिशील और जनवादी दृष्टिकोण की महत्वपूर्ण भूमिका है।

पंकज गौतम मंगलवार को महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन की 120वीं जयंती पर चेतगंज स्थित आर्य महिला पीजी कॉलेज में आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता थे। कार्यक्रम का आयोजन महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता कहानीकार डॉ.मुक्ता ने की। संगोष्ठी में डॉ. जितेंद्रनाथ मिश्र, डॉ. रामसुधार सिंह, प्रो. श्रद्धानंद व डॉ. बृजबाला सिंह ने भी विचार व्यक्त किये।

केन्द्र की सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने कहा केन्द्र के माध्यम से जो अलख जगाई उसका असर अब दिखने लगा है। संचालन डॉ. मंजरी पांडेय और धन्यवाद ज्ञापन कीर्ति कुमार पांडेय ने किया।

वाराणसी, 10 अप्रैल 2013 दैनिक जागरण | 11

सृजनशील लेखक थे राहुल सांकृत्यायन

वाराणसी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन की संपूर्ण कथा साहित्य समाजवादी समाज की स्थापना का रचनात्मक संघर्ष है। ये बातें मंगलवार को आर्य महिला पीजी कॉलेज में आयोजित 'राहुल की कथा यात्रा' विषयक संगोष्ठी में वक्ताओं ने कही।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र के तत्वावधान में राहुल की 120वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित संगोष्ठी में मुख्य वक्ता स्वतंत्र लेखक व आलोचक डॉ. पंकज सौरभ थे। डॉ. वृजबाला ने कहा कि उनके लेखन में धर्म, संस्कृति देखने को मिलता है। अध्यक्षता कहानीकार डॉ. मुक्ता ने की। प्रो. श्रद्धानंद, डॉ. जितेंद्रनाथ मिश्र, डॉ. रामसुधार सिंह ने विचार व्यक्त किया। स्वागत डॉ. संगीता श्रीवास्तव, संचालन डॉ. मंजरी पांडेय व धन्यवाद कृति प्रकाश पांडेय ने किया।

अमर उजाला कॉम्पैक्ट वाराणसी, बृहस्पतिवार, 10 अप्रैल 2014

'चुनौतियां स्वीकार करते थे सांकृत्यायन'

यूपी कालेज में महापंडित की जयंती पर हुआ एकल व्याख्यान, काशी विद्यापीठ में हुई संगोष्ठी

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयंती पर बुधवार को यूपी कालेज एकल व्याख्यान का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि राहुल जी चुनौतियों से कभी नहीं भागे। वह उनका सामना करते थे। उनकी प्रतिभा केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं थी। अन्य क्षेत्रों में भी उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

उनकी प्रेरणा से हमें अपने समय की चुनौतियों से जूझने की प्रेरणा मिलती है। बनारस से उनका गहरा लगाव था। यदि आज हम अपनी विचारधारा पर टिके रहें तो इस कठिन समय से उबर सकते हैं। यूपी कालेज के हिंदी विभाग और प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से कालेज के हिंदी विभाग के सेमिनार हाल में हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे काशीनाथ सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन 1958 में बीएचयू के छात्रसंघ का उद्घाटन करने आए थे। उनके स्वागत के लिए युवा उमड़ पड़े थे। आलोचक वीरेंद्र यादव, डा. अली जावेद, प्रो. चौथीराम यादव, एमपी सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। वहीं राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र एवं विद्यापीठ के ललित कला विभाग की ओर से ललित कला विभाग में राहुल का यात्रा साहित्य विषयक संगोष्ठी हुई। प्रो. चौथीराम यादव ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, सामाजिक विज्ञान के पारंगत ऐसे मनीषी थे जिनके कद का कोई दूसरा व्यक्ति दिखाई नहीं देता। अतिथियों का स्वागत करते हुए राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि राहुल के लिए घुमक्कड़ी सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि थी। तिब्बत की चार यात्राएं, रूस और चीन की यात्राएं कर अपने अध्ययन का दायरा बढ़ाते थे। बीएचयू के भारत कला भवन के निदेशक डा. अजय कुमार सिंह, डा. संगीता श्रीवास्तव, डा. मंजुला चतुर्वेदी, डा. श्रद्धानंद, डा. अवधेश प्रधान आदि ने भी अपने विचार रखे।

संगोष्ठी का दीप जलाकर उद्घाटन करते समीक्षक डा. चौथीराम यादव।

बनारस समाचार निष्पक्ष भारतदूत 8 (वाराणसी) गुरुवार 10 अप्रैल, 2014

मिशनरी भाव से राहुल की साहित्य यात्रा

बनारस। नवापुरा स्थित महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र और काशी विद्यापीठ के ललितकला विभाग की ओर बुधवार को विभाग में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस दौरान प्रसिद्ध साहित्यकार चौथीराम यादव ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन जीवन भर यात्रा करते रहे उनकी यात्रा मिशनरी भाव से होती थी। उनकी साहित्यिक यात्रा समाज को नयी सोच और नई उर्जा देने वाली होती है। सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, समाज विज्ञान, मानव विज्ञान आदि ज्ञान-विज्ञान के विभिन्न अनुशासनों में पारंगत ऐसे मनीषी थे। जिनके कद का कोई दूसरा व्यक्ति दिखाई नहीं देता। उनका साहित्य यात्रा एक मिशनरी भावना से संचालित सांस्कृतिक आंदोलन था। इस दौरान डॉ. संगीता श्रीवास्तव, डॉ. मंजरी पांडेय, बी एल प्रजापति, डॉ. राममोहन पाठक, डॉ. मंजू द्विवेदी, अमिताभ तिवारी, डॉ. अशोक सिंह सहित अन्य लोगों ने अपने विचार रखे।

2014

4 वाराणसी | बृहस्पतिवार | 10 अप्रैल 2014 अमर उजाला

'चुनौतियों से नहीं डरते थे सांकृत्यायन'

अमर उजाला ब्यूरो

वाराणसी। राहुल सांकृत्यायन का बनारस से गहरा लगाव था। रुस्तम सैटिन उनके अच्छे दोस्त थे। पंथियों के नेतृत्व में होने वाले किसान आंदोलनों में वह अक्सर आते थे। युवा भी उनके आंदोलनों में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेते थे। उन्होंने अपने समय की राजनीति के असली चेहरे को उजागर किया था। यदि आज हम अपनी विचारधारा पर टिके रहें तो इस कठिन समय से उबर सकते हैं। यह कहना है महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति विभूति नारायण राय का। वह बुधवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयंती पर यूपी कालेज में आयोजित व्याख्यान में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि, राहुल जी चुनौतियों से कभी नहीं भागे। वह उनका सामना करते थे। उनकी प्रतिभा केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं थी। राहुल जी हमेशा प्रश्नाकुल रहते थे।

यूपी कालेज के हिंदी विभाग और प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से कालेज के हिंदी डिपार्टमेंट के सेमिनार हाल में आयोजित कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे काशीनाथ सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन 1958 में बीएचयू के छात्रसंघ का उद्घाटन करने आए थे।

उनके स्वागत के लिए युवाओं का हुजूम उमड़ पड़ा था। आलोचक वीरेंद्र यादव, डा. अली जावेद, प्रो. चौथीराम यादव, डा. एमपी सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। वहीं राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र एवं काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग की ओर से ललित कला विभाग में राहुल का यात्रा साहित्य विषयक संगोष्ठी आयोजित की गई। प्रो. चौथीराम यादव ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, सामाजिक विज्ञान के पारंगत ऐसे मनीषी थे जिनके कद का कोई दूसरा व्यक्ति दिखाई नहीं देता।

राहुल सांकृत्यायन की स्मृति में आयोजित संगोष्ठी का दीप जलाकर उद्घाटन करते समीक्षक डॉ. चौथीराम यादव।

अतिथियों का स्वागत करते हुए राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि राहुल जी के लिए घुमक्कड़ी सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि थी। तिब्बत की चार यात्राएं, रूस और चीन की यात्राएं कर अपने अध्ययन का दायरा बढ़ाते थे। बीएचयू के भारत कला भवन के निदेशक डॉ. अजय कुमार सिंह, डॉ. संगीता श्रीवास्तव, डॉ. मंजुला चतुर्वेदी, डॉ. श्रद्धानंद, डॉ. अवधेश प्रधान आदि ने भी अपने विचार रखे।

2014

राष्ट्रीय सहारा

युवा

वाराणसी । बृहस्पतिवार • 10 अप्रैल • 2014 www.samaylive.com

'तिब्बत से दुर्लभ ग्रंथ लाए थे पंडितजी'

अमूल्य धरोहर हैं राहुल सांकृत्यायन के इतिहास, पुरातत्व व वांगमय साहित्य

विद्यापीठ के ललित कला विभाग में आयोजित संगोष्ठी का दीप जलाकर उद्घाटन करते अतिथिगण। फोटो : एसएनबी

यात्राओं में बीता राहुल सांकृत्यायन का जीवन

वाराणसी (एसएनबी)। राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य विषय पर बुधवार को काशी विद्यापीठ के ललितकला विभाग व महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था ने संयुक्त रूप से संगोष्ठी की। बैठक में अतिथियों ने सांकृत्यायन के जीवन वृत्तांत पर चर्चा किया।बताया कि राहुल का पूरा जीवन यात्राओं में बीता। उनके लिए घुमक्कड़ी सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि थी। उन्हें विश्व पर्यटक का विशेषण भी दिया गया। वे तिब्बत की चार यात्राएं लद्दाख, किन्नर देश, सोवियत रूस, जापान, चीन समेत तमाम देशों में भी घूमे थे। यात्राओं के आधार पर अध्ययन का दायरा सांकृत्यायन जी बढ़ाते गये। उन्होंने सफर में ज्ञान को नाव की तरह लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चौथीराम यादव व संचालन मंजू द्विवेदी ने किया। इस मौके पर डा. अनिल उपाध्याय, डा. रामसुधार सिंह, रतन वर्मा, डा. अमिताभ तिवारी, डा. किरन पाठक, डा. रचना शर्मा, डा. दयानन्द, डा. सुधा पांडे व डा अत्रि भारद्वाज समेत तमाम लोग मौजूद थे।

2014

राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
• कानपुर • देहरादून से प्रकाशित
वाराणसी। बृहस्पतिवार • 10 अप्रैल • 2014

'तिब्बत से दुर्लभ ग्रंथ लाए थे पंडितजी'

अमूल्य धरोहर हैं राहुल सांकृत्यायन के इतिहास, पुरातत्व व वांगमय साहित्य

वाराणसी (एसएनबी)। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ के तत्वावधान में बुधवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयंती विंध्यवासिनी कालोनी में धूमधाम से मनायी गयी। पंडितजी के बहुआयामी विलक्षण व्यक्तित्व व कृतित्व को नमन किया गया।

वक्ताओं ने कहा कि 1893 में आजमगढ़ में जन्मे केदारनाथ पांडेय उर्फ राहुल सांकृत्यायन को भोजपुरिया माटी के जुझारू व महान देशभक्त थे। कहा कि पंडितजी साहित्य मनीषी, इतिहासविद, पुरातत्ववेत्ता, अन्वेषक, घुमक्कड़, बौद्ध अनुयायी, कुशाग्र राजनीतिज्ञ के साथ बेहतर इंसान भी थे। अध्यक्षता करते हुए अपूर्व नारायण तिवारी ने कहा कि भारतीय साहित्य व संस्कृति को समृद्ध करने के लिए पंडितजी तिब्बत से 26000 दुर्लभ ग्रंथों को भारत ले आये थे बाद में इनका अनुवाद हुआ। इनकी 150 से ज्यादा कृतियां, इतिहास, पुरातत्व व वांगमय साहित्य अमूल्य धरोहर हैं। कहा कि वे पूरी उम्र पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, बौद्धिक, वैचारिक व राजनीतिक क्षेत्रों में द्वंद्वरत रहे। श्री तिवारी ने बताया कि भोजपुरी को संवैधानिक मान्यता दिलाने के वे हिमायती थे। इन्हीं सब खूबियों के कारण हम सबके प्रेरणा स्त्रोत बने रहेंगे। संचालन जितेन्द्रनाथ सिंह व आभार शंभूनाथ पांडेय ने किया। इस मौके पर मारकंडेय त्रिवेदी, डा. प्रमोद पांडेय, शंभू गिरी, बाबा नंदलाल, बच्चेलाल इत्यादि मौजूद थे।

- धूमधाम से मनी 121वीं जयंती

विद्यापीठ के ललित कला विभाग में आयोजित संगोष्ठी का दीप जलाकर उद्घाटन करते अतिथिगण। फोटो : एसएनबी

यात्राओं में बीता राहुल सांकृत्यायन का जीवन

वाराणसी (एसएनबी)। राहुल सांकृत्यायन का यात्रा साहित्य विषय पर बुधवार को काशी विद्यापीठ के ललितकला विभाग व महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र संस्था ने संयुक्त रूप से संगोष्ठी की। बैठक में अतिथियों ने सांकृत्यायन के जीवन वृत्तांत पर चर्चा किया।बताया कि राहुल का पूरा जीवन यात्राओं में बीता। उनके लिए घुमक्कड़ी सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि थी। उन्हें विश्व पर्यटक का विशेषण भी दिया गया। वे तिब्बत की चार यात्राएं लद्दाख, किन्नर देश, सोवियत रूस, जापान, चीन समेत तमाम देशों में भी घूमे थे। यात्राओं के आधार पर अध्ययन का दायरा सांकृत्यायन जी बढ़ाते गये। उन्होंने सफर में ज्ञान को नाव की तरह लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता चौथीराम यादव व संचालन मंजू द्विवेदी ने किया। इस मौके पर डा. अनिल उपाध्याय, डा. रामसुधार सिंह, रतन वर्मा, डा. अमिताभ तिवारी, डा. किरन पाठक, डा. रचना शर्मा, डा. दयानन्द, डा. सुधा पांडे व डा अत्रि भारद्वाज समेत तमाम लोग मौजूद थे।

2014

6| दैनिक जागरण वाराणसी, 10 अप्रैल 2014

याद किए गए राहुल सांकृत्यायन

ललित कला विभाग काशी विद्यापीठ में गोष्ठी का उद्घाटन करते अतिथि गण।

महानायक थे महापंडित राहुल सांकृत्यायन

वाराणसी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। वह भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व सहित अन्य ज्ञान-विज्ञान परंगत मनीषी थे।

महापंडित के 121वीं जयंती पर काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग में बुधवार को आयोजित 'राहुल का यात्रा साहित्य' विषयक संगोष्ठी में ये बातें प्रसिद्ध समालोचक डा. चौथी राम यादव ने कही। राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि राहुल की भाषा साहित्य एक मिशनरी भावना से संचालित सांस्कृतिक आंदोलन था। वह वस्तुत: अपनी सांस्कृतिक विरासत की खोज का आंदोलन था। इस मौके पर प्रो. श्रद्धानंद, डा. मुक्ता, डा. संगीता श्रीवास्तव सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किया। संचालन डा. मंजुला चतुर्वेदी ने किया।

वाराणसी, बुधवार ९ अप्रैल २०१४ सौर २६ चैत्र सं. २०७० वि.

आज

संगोष्ठी आज

नवापुरा स्थित महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र एवं ललितकला विभाग काशी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में नौ अप्रैल को ललितकला विभाग में राहुल सांकृत्यायन की १२१ वीं जयंती पर संगोष्ठी का आयोजन अपराह्न चार बजे से किया गया है।

आई नेक्स्ट

ART & CULTURE

- महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन संस्था की ओर से राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर संगोष्ठी, विद्यापीठ ललित कला विभाग में शाम 4 बजे से.

वाराणसी, बृहस्पतिवार, 10 अप्रैल 2014

AMAR UJALA COMPACT

अमर उजाला कॉम्पैक्ट

₹ 1

ऐश क्या फिर मां बनने वाली हैं?

10-11

वाराणसी, कानपुर, आगरा, इलाहाबाद, गोरखपुर, बरेली से प्रकाशित visit us on www.aucompact.com वर्ष : 07, अंक 82, पृष्ठ : 20

अमर उजाला कॉम्पैक्ट वाराणसी, बृहस्पतिवार, 10 अप्रैल 2014

'चुनौतियां स्वीकार करते थे सांकृत्यायन'

यूपी कालेज में महापंडित की जयंती पर हुआ एकल व्याख्यान, काशी विद्यापीठ में हुई संगोष्ठी

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयंती पर बुधवार को यूपी कालेज एकल व्याख्यान का आयोजन हुआ। मुख्य वक्ता महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि राहुल जी चुनौतियों से कभी नहीं भागे। वह उनका सामना करते थे। उनकी प्रतिभा केवल साहित्य तक ही सीमित नहीं थी। अन्य क्षेत्रों में भी उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

उनकी प्रेरणा से हमें अपने समय की चुनौतियों से जूझने की प्रेरणा मिलती है। बनारस से उनका गहरा लगाव था। यदि आज हम अपनी विचारधारा पर टिके रहें तो इस कठिन समय से उबर सकते हैं। यूपी कालेज के हिंदी विभाग और प्रगतिशील लेखक संघ की ओर से कालेज के हिंदी विभाग के सेमिनार हाल में हुए कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे काशीनाथ सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन 1958 में बीएचयू के छात्रसंघ का उद्घाटन करने आए थे। उनके स्वागत के लिए युवा उमड़ पड़े थे। आलोचक वीरेंद्र यादव, डा. अली जावेद, प्रो. चौथीराम यादव, एमपी सिंह आदि ने भी अपने विचार रखे। वहीं राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र एवं विद्यापीठ के ललित कला विभाग की ओर से ललित कला विभाग में राहुल का यात्रा साहित्य विषयक संगोष्ठी हुई। प्रो. चौथीराम यादव ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, सामाजिक विज्ञान के पारंगत ऐसे मनीषी थे जिनके कद का कोई दूसरा व्यक्ति दिखाई नहीं देता। अतिथियों का स्वागत करते हुए राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि राहुल के लिए घुमक्कड़ी सर्वश्रेष्ठ और सर्वोपरि थी। तिब्बत की चार यात्राएं, रूस और चीन की यात्राएं कर अपने अध्ययन का दायरा बढ़ाते थे। बीएचयू के भारत कला भवन के निदेशक डा. अजय कुमार सिंह, डा. संगीता श्रीवास्तव, डा. मंजुला चतुर्वेदी, डा. श्रद्धानंद, डा. अवधेश प्रधान आदि ने भी अपने विचार रखे।

संगोष्ठी का दीप जलाकर उद्घाटन करते समीक्षक डा. चौथीराम यादव।

2014

हिन्दुस्तान

तरक्की को चाहिए नया नजरिया

गुरुवार, 10 अप्रैल 2014, वाराणसी, पांच प्रदेश, 18 संस्करण, नगर

www.livehindustan.com

महान दार्शनिक व रचनाकार राहुल सांकृत्यायन को 121वीं जयंती पर साहित्यकारों, रंगकर्मियों और शिक्षाविदों ने किया याद

वैज्ञानिक व तार्किक सोच के पक्षधर थे सांकृत्यायन

उदय प्रताप कॉलेज

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

साहित्यकार और अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय (वर्धा) के पूर्व कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा है कि मौजूदा समय में राहुल सांकृत्यायन से प्रेरणा लेने की आवश्यकता है। वह रूढ़ियों के खिलाफ थे। उन्होंने वैज्ञानिक चिंतन व तार्किकता पर जोर दिया। श्री राय बुधवार को यूपी कॉलेज में राहुल सांकृत्यायन जयंती समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रह थे।

राहुल जीवनभर प्रश्नाकुल रहे। उन्होंने जीवन भर अपने समय के प्रश्नों का उत्तर खोजने की कोशिश की। उसका समाधान भी बताया। आज की सबसे बड़ी चुनौती अवैज्ञानिकता है। आज लोग अपने विवेक का प्रयोग नहीं कर रहे हैं। प्रचार में खो जा रहे हैं। इससे बचने की आवश्यकता है।

यूपी कॉलेज में बुधवार को आयोजित संगोष्ठी को सम्बोधित करते प्रो. काशीनाथ सिंह।

अध्यक्षीय सम्बोधन में प्रो.काशीनाथ सिंह ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन में अपने पाठकों को बांधने की क्षमता थी। उनकी रचना 'मेरी जीवन यात्रा' ने उन्हें काफी प्रभावित किया। इस रचना ने उन्हें लोगों की जीवनी और आत्मकथा पढ़ने के लिए प्रेरित किया। प्रो.काशीनाथ सिंह ने बताया कि उनकी यह रुचि आज भी बनी हुई है। अतिथियों का स्वागत हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. रामसुधार सिंह ने किया। संचालन डॉ. गोरखनाथ और धन्यवाद ज्ञापन हरिश्चन्द्र पीजी कॉलेज के पूर्व प्राचार्य डॉ. गया सिंह ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ साहित्यकार से.रा. यात्री, जाने-माने आलोचक वीरेन्द्र यादव, प्रो. चौथीराम यादव, डॉ. अली जावेद, कहानीकार शकील सिद्दिकी समेत अन्य विशिष्टजन मौजूद थे।

महानायक थे महापंडित राहुल : प्रो. चौथीराम

काशी विद्यापीठ

वाराणसी। आलोचक प्रो.चौथीराम यादव ने कहा है कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, समाज विज्ञान, मानव विज्ञान और आदि ज्ञान-विज्ञान के अनुशासनों में पारंगत ऐसे मनीषी थे जिनके कद का कोई दूसरा व्यक्तित्व दिखानी नहीं देता है। प्रो.चौथीराम बुधवार को काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग में राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयंती समारोह की अध्यक्षता कर रहे थे। आयोजन राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र के सौजन्य से किया गया था।

विशिष्ट अतिथि प्रो.अवधेश प्रधान ने कहा कि राहुल जी जनपद पथिक थे, भारत पथिक थे और विश्व पथिक थे। डॉ.

विद्यापीठ में संगोष्ठी का उद्घाटन करते प्रो. चौथीराम, डॉ. मुक्ता व अन्य विशिष्टजन।

मुक्ता ने कहा कि विश्व के उच्चश्रेणी के यायावरों में राहुल सांकृत्यायन का स्थान है। प्रो. श्रद्धानंद ने कहा कि यात्रा साहित्य और सांकृत्यायन एक दूसरे के पर्याय हैं। डॉ. रामसुधार सिंह ने कहा कि राहुल के पास दिव्य दृष्टि थी। अतिथियों का स्वागत डॉ. संगीता श्रीवास्तव और धन्यवाद ज्ञापन मानविकी संकायाध्यक्ष प्रो.मंजुला चतुर्वेदी ने किया। इस मौके पर नगर के कई रचनाकार मौजूद थे।

2014

आज
वाराणसी, १० अप्रैल, २०१४ ५

राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते डाक्टर चौथी राम यादव।

राहुल सांकृत्यायनकी यात्रावृतमें थी तथ्यपरकता और जिन्दादिली

जयन्तीपर आयोजित संगोष्ठीमें वक्ताओंके विचार

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन अपने समयके महानायक थे। उनका साहित्य एक मिशनरी भावनासे संचालित सांस्कृतिक आन्दोलनके साथ विरासतकी सांस्कृतिक खोजका आन्दोलन था। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायनजीकी १२१ वीं जयन्तीपर महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र और काशी विद्यापीठ ललितकला विभागके संयुक्त तत्वावधानमें बुधवारको विभागमें आयोजित राहुलका यात्रा साहित्य विषयक संगोष्ठीमें बतौर मुख्य वक्ता डाक्टर चौथीराम यादवने यह बात कही। उन्होंने कहा कि राहुल भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, मानव विज्ञान एवं ज्ञान-विज्ञान आदि विभिन्न अनुशासनोंमें पारंगत थे। उनके कदका कोई दूसरा व्यक्तित्व दिखायी नहीं देता है। डाक्टर यादवने कहा कि राहुलका जीवन यात्रामें ही व्यतीत हुआ। उनकी घुमक्कड़ी प्रवृति श्रेष्ठ थी। यात्रा अनुभव ही उनके ग्रंथोंकी रचनाका आधार बना। प्रोफेसर श्रद्धानन्दने कहा कि यात्रा साहित्य और राहुल सांस्कृत्यायन एक दूसरेके पर्याय हैं। वह मानते थे कि घुमक्कड़ी किसी बड़े योगसे कम सिद्धदायिनी नहीं है। घुमक्कड़ीसे वैचारिक कूपमण्डुकता कम होती है। उन्होंने कहा कि यात्रासे प्राप्त अनुभवोंसे उन्होंने यात्रावृतके साथ साहित्यकी अन्य विधाओंको भी समृद्ध किया। उनके उपन्यासों एवं कहानियोंके कथावाचक भी घुमक्कड़ हैं। वे एक क्रान्ति नहीं अपितु एक क्रान्तिमें अनेक व्यक्ति थे। तथ्यपरकता एवं जिन्दादिली उनके यात्रावृतका वैशिष्टय है। डाक्टर मुक्ताने कहा कि राहुलजीने देश-देशान्तरका केवल भ्रमण ही नहीं किया बल्कि वहांके इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृतिका भी सजीव वर्णन भी प्रस्तुत किया। वर्णभेद, आर्थिक विषमताओंसे मुक्त उनकी साम्यवादी जीवन दृष्टियात्रा वृतांतोंके बीच भी मुखर हैं। उन्होंने कहा कि आज हम विश्व ग्रामकी बात कर रहे हैं। इस विश्व राष्ट्रके निर्माणका स्वप्न सर्वप्रथम राहुल सांस्कृत्यायनने ही देखा था। उनकी यात्राओंने इस आशावादी दृष्टिकोणको आधार दिया। संगोष्ठीमें डाक्टर मंजू द्विवेदी, डाक्टर जितेन्द्रनाथ मिश्र, डाक्टर किरन पाठक, डाक्टर रामसुधार सिंह, डाक्टर अमिताभ तिवारी, अमरनाथ चौबे, डाक्टर अनिल उपाध्याय आदिने भी विचार व्यक्त किये। इसके पूर्व अतिथियोंने दीप प्रज्वलन एवं उनके चित्रपर माल्यार्पण किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर मंजुला चतुर्वेदी, संयोजन बी.एल. प्रजापति तथा संचालन डाक्टर मंजरी पाण्डेयने किया।

आज 2014
वाराणसी, गुरुवार १० अप्रैल २०१४ सौर २७ चैत्र सं. २०७० वि. | वाराणसी,

वाराणसी महानगर

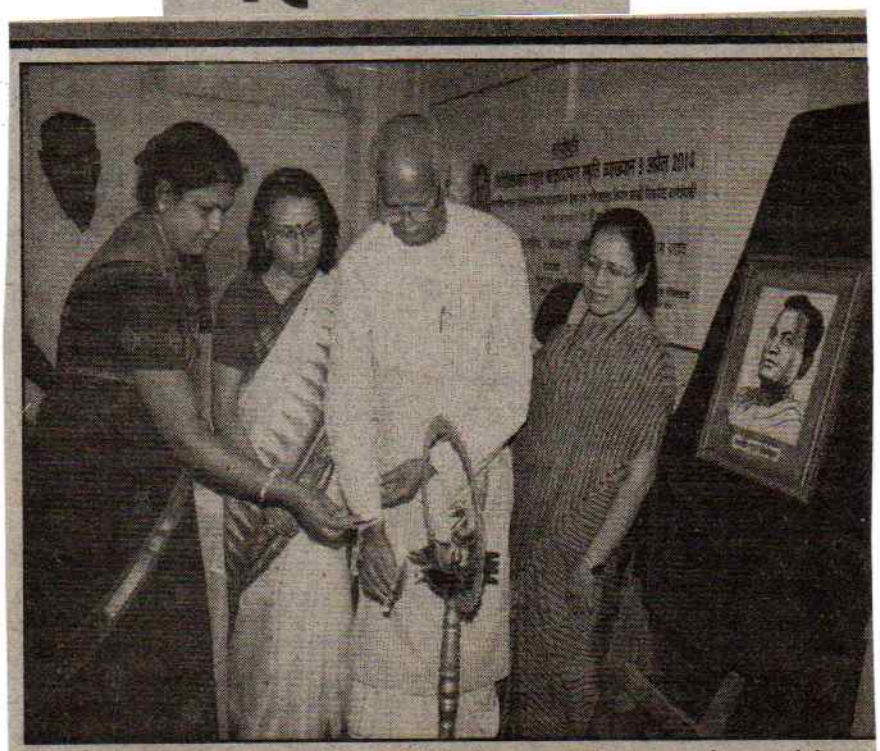

राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी का दीप प्रज्ज्वलन कर उद्घाटन करते डाक्टर चौथी राम

राहुल सांकृत्यायनकी यात्रावृतमें थी तथ्यपरकता और जिन्दादिली

जयन्तीपर आयोजित संगोष्ठीमें वक्ताओंके विचार

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन अपने समयके महानायक थे। उनका साहित्य एक मिशनरी भावनासे संचालित सांस्कृतिक आन्दोलनके साथ विरासतकी सांस्कृतिक खोजका आन्दोलन था। महापण्डित राहुल सांस्कृत्यायनजीकी १२१ वीं जयन्तीपर महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र और काशी विद्यापीठ ललितकला विभागके संयुक्त तत्वावधानमें बुधवारको विभागमें आयोजित राहुलका यात्रा साहित्य विषयक संगोष्ठीमें बतौर मुख्य वक्ता डाक्टर चौथीराम यादवने यह बात कही। उन्होंने कहा कि राहुल भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, मानव विज्ञान एवं ज्ञान-विज्ञान आदि विभिन्न अनुशासनोंमें पारंगत थे। उनके कदका कोई दूसरा व्यक्तित्व दिखायी नहीं देता है। डाक्टर यादवने कहा कि राहुलका जीवन यात्रामें ही व्यतीत हुआ। उनकी घुमक्कड़ी प्रवृति श्रेष्ठ थी। यात्रा अनुभव ही उनके ग्रंथोंकी रचनाका आधार बना। प्रोफेसर श्रद्धानन्दने कहा कि यात्रा साहित्य और राहुल सांस्कृत्यायन एक दूसरेके पर्याय हैं। वह मानते थे कि घुमक्कड़ी किसी बड़े योगसे कम सिद्धदायिनी नहीं है। घुमक्कड़ीसे वैचारिक कूपमण्डुकता कम होती है। उन्होंने कहा कि यात्रासे प्राप्त अनुभवोंसे उन्होंने यात्रावृतके साथ साहित्यकी अन्य विधाओंको भी समृद्ध किया। उनके उपन्यासों एवं कहानियोंके कथावाचक भी घुमक्कड़ हैं। वे एक क्रान्ति नहीं अपितु एक क्रान्तिमें अनेक व्यक्ति थे। तथ्यपरकता एवं जिन्दादिली उनके यात्रावृतका वैशिष्टय है। डाक्टर मुक्ताने कहा कि राहुलजीने देश-देशान्तरका केवल भ्रमण ही नहीं किया बल्कि वहांके इतिहास, सभ्यता एवं संस्कृतिका भी सजीव वर्णन भी प्रस्तुत किया। वर्णभेद, आर्थिक विषमताओंसे मुक्त उनकी साम्यवादी जीवन दृष्टियात्रा वृतांतोंके बीच भी मुखर हैं। उन्होंने कहा कि आज हम विश्व ग्रामकी बात कर रहे हैं। इस विश्व राष्ट्रके निर्माणका स्वप्न सर्वप्रथम राहुल सांस्कृत्यायनने ही देखा था। उनकी यात्राओंने इस आशावादी दृष्टिकोणको आधार दिया। संगोष्ठीमें डाक्टर मंजू द्विवेदी, डाक्टर जितेन्द्रनाथ मिश्र, डाक्टर किरन पाठक, डाक्टर रामसुधार सिंह, डाक्टर अमिताभ तिवारी, अमरनाथ चौबे, डाक्टर अनिल उपाध्याय आदिने भी विचार व्यक्त किये। इसके पूर्व अतिथियोंने दीप प्रज्ज्वलन एवं उनके चित्रपर माल्यार्पण किया। धन्यवाद ज्ञापन प्रोफेसर मंजुला चतुर्वेदी, संयोजन बी.एल. प्रजापति तथा संचालन डाक्टर मंजरी पाण्डेयने किया।

2014

चैत्र मार

ासी, गुरुवार, 10 अप्रैल, 2014

परख सच की

जनसंदेश टाइम्स

वाराणसी, इलाहाबाद, लखनऊ, कानपुर, गोरखपुर, मेरठ, देहरादून एवं गाजियाबाद से प्रकाशित

ोनिया-राहुल ने मोदी को ललकारा...15

महानायक थे राहुल सांकृत्यायन : चौथी राम

संगोष्ठी

जयंती पर वक्ताओं ने व्यक्त किया विचार

वाराणसी। राहुल सांकृत्यायन की 121वीं जयंती के अवसर पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र व ललित कला विभाग काशी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में बुधवार को राहुल की यात्रा साहित्य विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अध्यक्ष चौथी राम यादव ने कहा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे।

भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व, सामान्य विज्ञान, मानव विज्ञान सहित आदि विज्ञानों के मनीषी थे, इनके जैसा अभी तक कोई दिखाई नहीं देता है। संस्था की सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि राहुल का सारा जीवन यात्राओं में ही बीता। उनके लिए घुमक्कड़ी सर्वश्रेष्ठ व सर्वोपरि थी। उन्होंने ज्ञान के सफर को बोझ की तरह न लेकर नाव की तरह लिया। डॉ. मुक्ता ने कहा कि विश्व के उच्च श्रेणी के यायावरों में राहुल सांकृत्यायन का स्थान है। उनकी यात्रा वृतान्त में उनका अनुभव अन्वेषक रूप उभर कर सामने आता है। डॉ. श्रद्धानन्द ने कहा कि यात्रा साहित्य और राहुल सांकृत्यायन एक दूसरे पर्याय हैं। **संवाददाता**

2014

विश्व का सर्वाधिक पढ़ा जाने वाला अखबार

दैनिक जागरण

वर्ष 43 अंक 146
पृष्ठ 16
वाराणसी, गुरुवार
10 अप्रैल 2014
नगर संस्करण
मूल्य ₹ 3.00

र 14 कांग्रेस ने प्रियंका पर आस टिकाई विजडन के क

उत्तर प्रदेश ' दिल्ली ' मध्य प्रदेश ' हरियाणा ' उत्तराखंड ' बिहार ' झारखंड ' पंजाब ' जम्मू-कश्मीर ' हिमाचल प्रदेश ' पश्चिम ब

याद किए गए राहुल सांकृत्यायन

ललित कला विभाग काशी विद्यापीठ में गोष्ठी का उद्घाटन करते अतिथि गण।

- यूपी कालेज में राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर संगोष्ठी
- साम्प्रदायिकता का उभार लेखकों के लिए शर्म की बात

वाराणसी : वर्तमान में साहित्यकार व जनता के बीच खाई बढ़ती जा रही है। इससे समाज में भटकाव की स्थिति है। ऐसे में साहित्यकारों को जनता के बीच दूरी खत्म करनी होगी। इसके लिए उन्हें अपने ड्राइंग रूम से बाहर निकलकर लोगों के बीच जाकर लेखन करना होगा।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के 121वीं जयंती के मौके पर उदय प्रताप स्वायत्तशासी कालेज में बुधवार को आयोजित 'आंदोलन की वैचारिकी हमारा समय' विषयक व्याख्यान का यह निष्कर्ष रहा। हिंदी विभाग व प्रगतिशील लेखक संघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी के मुख्य वक्ता महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति विभूति नारायण राय ने कहा कि साम्प्रदायिकता उभार लेखकों के लिए शर्म की बात है। राहुल जी ने अपने समय में स्वतंत्रता आंदोलन की अगुआई अपनी लेखन से की थी। वह लेखन की दुनिया के साथ-साथ जनता के बीच भी हमेशा बने रहते थे। वह हमारे प्रेरणास्रोत हैं।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रसिद्ध कथाकार डा. काशीनाथ सिंह ने कहा कि हमें जनता की भाषा में ही अपनी बात कहने की कोशिश करनी चाहिए। राहुल जी ने अपनी बात जनता तक पहुंचाने के लिए भोजपुरी भाषा का सहारा लिया।

स्वागत हिंदी विभागाध्यक्ष डा. रामसुधार सिंह, संचालन डा. गोरखनाथ व धन्यवाद ज्ञापन डा. गया सिंह ने किया।

एक मंच पर लाने का होगा प्रयास

व्याख्यान के बाद विभिन्न संगठनों की एक संयुक्त बैठक हुई। इसमें चार मई से साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण के खिलाफ साहित्यकारों, संस्कृति कर्मियों, अभिनेताओं को एक मंच पर लाने का प्रयास होगा। इसमें गिरिश कर्नाड, नरेश भट्ट, नदिरा बब्बर, राम कुलयानी, नामवर सिंह, अशोक बाजपेई सहित विभिन्न ख्यातिलब्ध लोगों को जोड़ने का निर्णय लिया गया है। बैठक की अध्यक्षता जय प्रकाश धूमकेतु व संचालन डा. संजय श्रीवास्तव ने किया। बैठक में प्रो. दीपक मलिक, प्रो. बलिराज पांडेय, सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

महानायक थे महापंडित राहुल सांकृत्यायन

वाराणसी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन अपने समय के महानायक थे। वह भाषा, साहित्य, संस्कृति, धर्म, दर्शन, इतिहास, पुरातत्व सहित अन्य ज्ञान-विज्ञान पारंगत मनीषी थे।

महापंडित के 121वीं जयंती पर काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग में बुधवार को आयोजित 'राहुल का यात्रा साहित्य' विषयक संगोष्ठी में ये बातें प्रसिद्ध समालोचक डा. चौथी राम यादव ने कही। राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित संगोष्ठी में उन्होंने कहा कि राहुल की भाषा साहित्य एक मिशनरी भावना से संचालित सांस्कृतिक आंदोलन था। वह वस्तुत: अपनी सांस्कृतिक विरासत की खोज का आंदोलन था। इस मोके पर प्रो. श्रद्धानंद, डा. मुक्ता, डा. संगीता श्रीवास्तव सहित अन्य लोगों ने विचार व्यक्त किया। संचालन डा. मंजुला चतुर्वेदी ने किया।

2015

आज
वाराणसी, १३ अप्रैल, २०१५ ३

काशी विद्यापीठमें आयोजित संगोष्ठीमें विचार व्यक्त करते वाइसचांसलर।

मातृभाषा के प्रबल सार्थक थे महापंडित राहुल सांकृत्यायन

महापंडित राहुल सांकृत्यान शोध एवं अध्ययन केन्द्र तथा काशी विद्यापीठ ललितकला विभाग के संयुक्त तत्वावधान में रविवार को 'राहुल का भोजपुरी, साहित्य एवं लोक भाषा' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डाक्टर बृजेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन का सृजन क्षेत्र बहुत व्यापक था।

साहित्य, धर्म, दर्शन, विज्ञान, भाषा विज्ञान, कोश, अनुवाद ऐसा कोई क्षेत्र नथा जिसमें उन्होंने लेखन न किया हो। वे मातृ भाषाओं के प्रबल समर्थक थे और उसके विकास के लिए निरंतर संघर्ष किया। डाक्टर चौथीराम यादव ने कहा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन जितने बड़े लेखक और चिंतक थे उतने ही बड़े मनुष्य भी थे।

मल्लाह एवं बिन्द समाजकी महापंचायत एवं पदयात्रा आज

मल्लाह एवं बिन्द समाजकी महापंचायत १३ अप्रैलको अपराह्न १२ बजे अस्सी घाटपर होगी। महापंचायतका शुभारम्भ मछली शहरके सांसद श्री रामचरित्र निषाद करेंगे। महापंचायतके बाद सांसद रामचरित्र निषादकी अगुवाहीने अपराह्न एक बजे एक पद यात्रा निकाली जायेगी। यह पदयात्रा अस्सीसे सीधे प्रधानमंत्रीके संसदीय जन सम्पर्क कार्यालयमें जायेगी। वहां पर समाजकी ओरसे पांच सूत्रीय ज्ञापन सौंपा जायेगा।

डाक्टर रामसुधार सिंह ने बताया कि राहुल सांकृत्यायन लोकमानस, लोक मासा एवं लोक साहित्य के पक्षधर थे। वे चाहते थे कि प्रारम्भिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम लोकमासा होनी चाहिए। डाक्टर जितेन्द्र नाथ मिश्र ने कहा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन का दृढ़ मत था कि भोजपुरी और लोकभाषाओं की प्रतिष्ठा के बिना देश का विकास सम्भव नहीं है। डाक्टर श्रद्धानन्द ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन कई भाषाओं के पंडित थे। कई भाषाओं के जानकर होने के बावजूद वे लोक भाषा के प्रति विशेष संवेदनशील थे। संचालन डाक्टर मंजरी पाण्डेय एवं धन्यवाद ज्ञापन बी.एल.प्रजापति ने किया।

2015

॥ प्रणाम ॥

रविवार, वैशाख कृष्ण
अष्टमी, 2072

जयंती : महापंडित राहुल सांकृत्यायन का 122वीं जयंती समारोह काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग में दोपहर तीन बजे।

दायित्व ग्रहण : भारत विकास परिषद सिटी का 14वां दायित्व ग्रहण समारोह कैंटोमेंट स्थित एक होटल में शाम सात बजे।

बैठक : श्री कान्य कुब्ज वैश्य सभा की बैठक नाटी इमली स्थित पंचायती बाग में दो बजे।

4 वाराणसी, 13 अप्रैल 2015
दैनिक जागरण
वाराणसी कनेक्सन

व्यापक था सांकृत्यायन का क्षेत्र

काशी विद्यापीठ में आयोजित गोष्ठी में बोलते प्रो. पी नाग।

वाराणसी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र तथा ललित कला विभाग (विद्यापीठ) की ओर से विभाग में रविवार को संगोष्ठी की गई। विषय था 'राहुलजी का भोजपुरी साहित्य एवं लोक भाषा।' वक्ताओं ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन ने भोजपुरी में श्रेष्ठ रचनाएं कीं। अपने लेखों से सामाजिक जीवन की विसंगतियां दिखाई। विशिष्ट अतिथि डा. ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन का सृजन क्षेत्र व्यापक था। मुख्य अतिथि थे कुलपति डा. पृथ्वीश नाग।

अध्यक्षता करते हुए डा. चौथीराम यादव ने कहा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन जितने बड़े लेखक और चिंतक थे उतने ही बड़े मनुष्य भी। रामसुधार सिंह ने कहा कि सांकृत्यायन लोक मानस, लोक भाषा एवं लोक साहित्य के पक्षधर थे। डा. जितेंद्र नाथ मिश्र ने कहा कि सांकृत्यायन का स्पष्ट मत था कि भोजपुरी और लोक भाषाओं की प्रतिष्ठा के बिना देश का विकास संभव नहीं है। डा. श्रद्धानंद, डा. रचना शर्मा, डा. मंजुला चतुर्वेदी, प्रो. रजनीश शुक्ला आदि ने विचार व्यक्त किए। स्मृति चिह्न प्रदान करके अतिथियों का स्वागत किया डा. संगीता श्रीवास्तव ने। संचालन डा. मंजरी पांडेय व बीएल प्रजापति ने धन्यवाद दिया।

2015

अमर उजाला
वाराणसी

न्यूज डायरी

काशी विद्यापीठ में आयोजित राहुल सांकृत्यायन जयंती समारोह में संबोधित करते साहित्यकार जितेंद्रनाथ मिश्र। *अमर उजाला*

राहुल सांकृत्यायन की जयंती मनी

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन जयंती समारोह पर काशी विद्यापीठ के ललित कला विभाग में रविवार को गोष्ठी हुई। इसमें कुलपति डॉ. पृथ्वीश नाग समेत अन्य वक्ताओं ने राहुल सांकृत्यायन के जीवनी पर प्रकाश डाला। डॉ. चौथी राम यादव ने सांकृत्यायन के साहित्य को कीमती विरासत बताया। डॉ. ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि साहित्य के विकास के लिए किए गए संघर्षों को हमेशा याद किया जाएगा। इस मौके पर जितेंद्रनाथ मिश्र, डॉ. संगीता श्रीवास्तव, डॉ. मंजरी पांडेय, बीएल प्रजापति मौजूद रहे।

6 युवा
राष्ट्रीय सहारा
www.samaylive.com

भोजपुरी व लोक भाषा का उन्नयन चाहते थे महापंडित

वाराणसी (एसएनबी)। हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ व वरिष्ठ आलोचक डा. चौथीराम यादव ने कहा कि महापंडित राहुल सांकृत्यायन सही मायने में धरती के महामानव थे। वे लेखक से बड़े मानव थे जब भी सर्वसमाज की संवेदना व सच्चाई की बात आती है वे हम सबके सामने महामानव के रूप के प्रकट होते हैं। वह रविवार को काशी विद्यापीठ में 'राहुलजी की भोजपुरी व लोक भाषा' पर आयोजित संगोष्ठी को संबोधित कर रहे थे। सात्यिकार डा. रामसुधार सिंह ने कहा कि राहुल जी लोक भाषा के पक्षधर थे। डा. जितेंद्रनाथ मिश्र ने कहा कि महापंडित राहुल भोजपुरी और लोक भाषा को प्रतिष्ठित करना चाहते थे। डा. संगीता श्रीवास्तव और स्मृति सिंह ने कहा कि राहुलजी ने भोजपुरी में तीन नाटक और पांच पुस्तकों की रचना की। उन्होंने इसकी रचना तब की जब वे हजारीबाग जेल में बंद थे। इस मौके पर कुलपति डा. पृथ्वीश नाग आदि लोग उपस्थित थे।

वाराणसी • सोमवार • 13 अप्रैल 2015 हिन्दुस्तान

भूगोल को सांकृत्यायन की यात्राओं से मदद

वाराणसी । राहुल सांकृत्यायन की यात्राओं से न सिर्फ साहित्य समृद्धि हुआ बल्कि भूगोल को भी लाभ मिला। ये कहना है काशी विद्यापीठ के कुलपति डॉ.पी.नाग का। डॉ.नाग रविवार को ललित कला विभाग में महापंडित राहुल सांकृत्यान जयंती समारोह को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे।

अध्यक्षीय सम्बोधन में वरिष्ठ आलोचक प्रो.चौथीराम यादव ने कहा कि राहुल चिंतक व लेखक थे। विशिष्ट अतिथि व साहित्य अकादमी के उप सचिव डॉ.ब्रजेंद्र त्रिपाठी ने कहा कि राहुल का सृजन का क्षेत्र व्यापक था। स्वागत प्रो.मंजुला चतुर्वेदी ने किया। **वसं**

2016

जनसंदेश टाइम्स

रविवार, 10 अप्रैल 2016

संक्षेप

सृजन यात्रा का लोकार्पण

वाराणसी। राहुल सांस्कृत्यायन की 123 वीं जयन्ती पर शनिवार को मैदागिन स्थित पराड़कर स्मृति भवन में संगीता श्रीवास्तव की पुस्तिका सृजन यात्रा का लोकार्पण किया गया। इसके पश्चात आयोजित गोष्ठी के दौरान वक्ताओं ने अपना- अपना विचार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि 'सृजन यात्रा' में राहुल सांकृत्यायन के संपूर्ण रचनाओं व महत्वपूर्ण कार्यो को संकलित किया है। वहीं मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित विश्व भारती विश्वविद्यालय हिंदी विभाग के प्रोफेसर मुक्तेश्वर तिवारी ने कहा कि 'सृजन यात्रा' सांकृत्यायन के समग्र व्यक्तित्व को संक्षेप में पकड़ने का महत्वपूर्ण प्रयत्न जान पड़ती है। कार्यक्रम का शुभारंभ मुक्तेश्वर तिवारी, कथाकार मुक्ता व मुख्य वक्ता ने राहुल सांकृत्यायन के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। इस अवसर पर डा राम सुधार सिंह, डा सुरेंद्र प्रताप, डा अशोक सिंह, डॉ. जितेंद्र नाथ मिश्र, डा मंजूला चतुर्वेदी आदि लोग उपस्थित थे।

2016

हिन्दुस्तान वाराणसी • रविवार • 10 अप्रैल 2016 07

युवाओं के लिए प्रेरणा हैं सांकृत्यायन

वाराणसी | कार्यालय संवाददाता

पद्मभूषण राहुल सांकृत्यायन की 123वीं जयंती पर पराड़कर भवन में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन के प्रो. मुक्तेश्वर नाथ तिवारी ने कहा कि सांकृत्यायन जी ने स्थान-स्थान को जिया और उसे लिखकर प्राणवंत किया। वह विश्वयात्री के रूप में हिंदी में यात्रा विधा को अविस्मरणीय कर गए। संगोष्ठी का आयोजन महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र ने किया था।

बतौर मुख्य वक्ता बीएचयू हिन्दी विभाग प्रो. अवधेश प्रधान ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन युवा साहित्यकारों के लिए प्रेरणा हैं। लोकभाषा में साहित्य की रचना और तथ्यों का पुट रचने की कला साहित्यकारों को अभिभूत करती है। संगोष्ठी में डॉ. संगीता श्रीवास्तव लिखित पुस्तक सृजन यात्रा-राहुल सांकृत्यायन का लोकार्पण किया गया। डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने बताया कि पुस्तक में सांकृत्यायन जी के 70 वर्षों के सृजन कार्य के संकलन का प्रयास है।

पराड़कर भवन के गर्द सभागार में पद्मभूषण राहुल सांकृत्यायन की 123वीं जयंती पर 'सृजन यात्रा-राहुल सांकृत्यायन' पुस्तक का लोकार्पण किया गया। मंच पर डॉ. रचना शर्मा, डॉ. संगीता श्रीवास्तव, डॉ. मुक्ता, मुख्य अतिथि प्रो. मुक्तेश्वरनाथ तिवारी तथा प्रो. अवधेश प्रधान। (बाएं से दाएं)। • हिन्दुस्तान

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए रामचंद्र शुक्ल शोध संस्थान की संचालिका डॉ. मुक्ता ने कहा कि राहुल जी कहानीकार, इतिहासविद, दार्शनिक, बौद्ध धर्म के उद्भट विद्वान, अनुवादक आदि विभिन्न गुणों से परिपूर्ण थे। संचालन डॉ. रचना शर्मा ने किया। इस मौके पर डॉ. राम सुधार सिंह, डॉ. सुरेंद्र प्रताप, डॉ. अशोक सिंह, डॉ. मंजुला चतुर्वेदी, डॉ. सुभाष यादव, डॉ. ओम प्रकाश चौबे आदि मौजूद रहे।

वाराणसी | रविवार • 9 अप्रैल • 2017 राष्ट्रीय सहारा

नयी पीढ़ी तक पहुंचाएं राहुल सांकृत्यायन के विचार

वाराणसी (एसएनबी)। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध व [illegible]यन केन्द्र नवापुरा वाराणसी व हिन्दी तथा आधुनिक भा[illegible] भाषा विभाग महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के तत्वावधान में शनिवार को काशी विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में 'राहुल सांकृत्यायन और आज का समय' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

'राहुल सांकृत्यायन और आज का समय' विषय पर संगोष्ठी

इस अवसर पर मुख्य अतिथि आलोचक व पूर्व विभागाध्यक्ष अंग्रेजी प्रो. रामकीर्ति शुक्ल, पूर्व आयुक्त व साहित्यकार डा. राजेन्द्र प्रसाद तथा कथाकार डा. मुक्ता ने राहुल सांकृत्यायन के चित्र पर माल्यार्पण व दीप प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। अतिथियों का स्वागत हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. शिवकुमार मिश्र ने किया। विषय प्रतिस्थापना डा. रामसुधार सिंह ने की। डा. अशोक सिंह, डा. मंजूला चतुर्वेदी, डा. अभय कुमार द्विवेदी, डा. निरंजन सहाय ने अपने विचार व्यक्त किया। धन्यवाद ज्ञापित करते हुए संस्था सचिव डा. संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि राहुलजी के विचारों को नयी पीढ़ी के युवाओं तक पहुंचाने के लिए इस वर्ष छात्रों को भी सहभागिता का अवसर दिया गया है। वे हमारी विरासत और वर्तमान हिन्दी साहित्य के साहित्यकारों को जाने व समझे। इसके लिए आवश्यक है कि वे उन्हें सुने फिर गुने। उनकी कृतियां क्रांतिकारी विचारों से ओतप्रोत हैं। कार्यक्रम का संयोजन डा. श्रद्धानन्द व बीएल प्रजापति ने किया तथा संचालन प्रो. अनुराग ने किया। इस मौके पर रत्नेश वर्मा, सुभाष यादव, डा. दयानन्द, डा. मंजरी पाण्डेय, डा. रचना शर्मा, डा. अवधेश सिंह, दानिश, कबीर, डा. अम्बिका प्रसाद गौड़, डा. संध्या श्रीवास्तव, डा. एके चौबे, वीरेन्द्र सिंह, अत्री भारद्वाज, सुशील उपाध्याय, कीर्ति पांडेय, संगीता अग्रवाल, अमिता वर्मा, विजयलक्ष्मी सिंह आदि मौजूद थे।

2017

वाराणसी
03 हिन्दुस्तान • वाराणसी • शनिवार • 08 अप्रैल 2017

• **संगोष्ठी:** महापंडित राहुल सांस्कृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र की ओर से राहुल सांस्कृत्यायन की जयंती के उपलक्ष्य में विद्यापीठ के केन्द्रीय पुस्तकालय में सुबह 11 बजे।

वाराणसी, 8 अप्रैल 2017 दैनिक जागरण 5

।। प्रणाम ।।

संगोष्ठी

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से संगोष्ठी, विद्यापीठ स्थित केंद्रीय पुस्तकालय के समिति कक्ष में सुबह 11 बजे।

2017

वाराणसी
05 • वाराणसी • रविवार • 09 अप्रैल 2017 हिन्दुस्तान

याद किए गये राहुल सांस्कृत्यायन

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से काशी विद्यापीठ में राहुल सांकृत्यायन और आज का समय विषय पर आधारित संगोष्ठी में विद्वानों ने मंथन किया। राहुल सांकृत्यायन से युवाओं को प्रेरणा लेने पर जोर दिया। शनिवार को विद्यापीठ के केंद्रीय पुस्तकालय कक्ष में मुख्य अतिथि प्रो. रामकीर्ति शुक्ल ने दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। उन्होंने कहा कि राहुल सांस्कृत्यायन हमारी विरासत हैं, वर्तमान साहित्यकार उनसे प्रेरणा लें और फिर गुनें। राहुल जी का जीवन असहमतियों का शास्त्र है।

अमर उजाला
वाराणसी
रविवार, 9 अप्रैल 2017 6

वाराणसी, 9 अप्रैल 2017 दैनिक जागरण | 9

साहित्यकारों को जानें

वाराणसी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 124 वीं जयंती पर शनिवार को राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र, नवापुरा तथा हिंदी व आधुनिक भारतीय भाषा विभाग, काशी विद्यापीठ के संयुक्त बैनर तले संगोष्ठी की गई। काशी विद्यापीठ के केंद्रीय पुस्तकालय में हुई संगोष्ठी का विषय 'राहुल सांकृत्यायन और आज का समय' था।

मुख्य अतिथि प्रो. रामकीर्ति शुक्ल, डा.राजेंद्र प्रसाद, डा.मुक्ता थीं। संस्था की सचिव संगीता श्रीवास्तव ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन के विचारों को नई पीढ़ी तक पहुंचाने की दिशा में वनिता पब्लिक स्कूल, डालिम्स व स्वामी हरसेवानंद पब्लिक स्कूल के कक्षा 11 व 12 के विद्यार्थियों को अवसर दिया गया है। संयोजन डा.श्रद्धानंद, बीएल प्रजापति, संचालन प्रो.अनुराग कुमार, स्वागत डा. शिवकुमार मिश्र, धन्यवाद डा. संगीता श्रीवास्तव ने दिया।

काशी विद्यापीठ राहुल सांकृत्यायन के विचार युवाओं के लिए प्रेरणादायी

वाराणसी (ब्यूरो)। महा पंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र और काशी विद्यापीठ हिंदी विभाग की ओर से शनिवार को सांकृत्यायन की 124वीं जयंती मनाई गई। मुख्य अतिथि आलोचक प्रो. रामकीर्ति शुक्ल ने राहुल के विचारों की चर्चा करते हुए युवाओं के लिए उसे प्रेरणादायी बताया।

पुस्तकालय समिति कक्ष में जयंती समारोह में अतिथियों ने इस बार अधिक से अधिक विद्यार्थियों को बुलाने को सही कदम बताया। कहा कि युवाओं के लिए जरूरी है कि वह साहित्यकारों, लेखकों आदि के माध्यम से हिंदी साहित्य के बारे में जानकारी हासिल करें। अतिथियों का स्वागत हिंदी विभागाध्यक्ष प्रो. शिवकुमार मिश्र, विषय प्रवर्तन डॉ .रामसुधार सिंह ने की। इसके अलावा डॉ. निरंजन सहाय, डॉ. मंजुला चतुर्वेदी आदि ने विचार रखे। कार्यक्रम में संस्था सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव, रत्नेश वर्मा, सुभाष यादव, डॉ. मंजरी पांडेय मौजूद रहे।

2017

आज
वाराणसी, ९ अप्रैल, २०१७

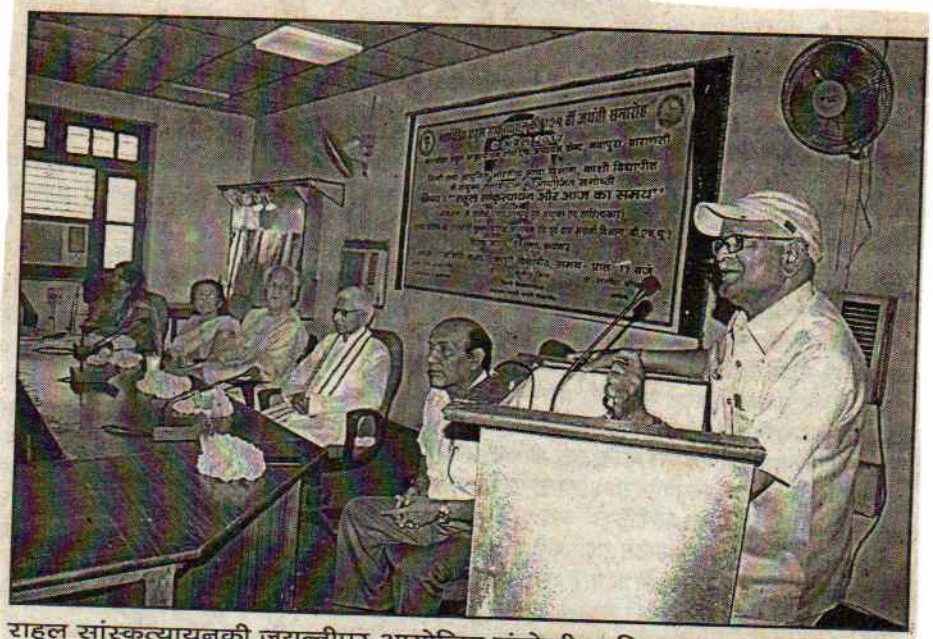

राहुल सांस्कृत्यायनकी जयन्तीपर आयोजित संगोष्ठीपर विचार व्यक्त करते वक्ता।

असहमतियों का गढ़ है काशी

काशी असहमतियों का गढ़ है, इसलिए वह सर्वाधिक लोकतांत्रिक नगर है। असहमति का दायरा सिकुड़ेगा। तो लोकतंत्र से दूरी वैसे-वैसे बढ़ती जायेगी। समय अपनी समकालीन कभी नहीं होता। सबकुछ अपने चूल पर हो तो बुद्धिजीवी की जरुरत नहीं बचेगी। यह बाते शनिवार को काशी विद्यापीठ हिन्दी तथा आधुनिक भारतीय भाषा विभाग एवं एवं धन्यवाद ज्ञापन संस्था की सचिव डाक्टर संगीता श्रीवास्तव ने किया। इस अवसर पर डाक्टर दयानंद, डाक्टर नलिनी श्याम, कामिनी, डाक्टर मंजरी पांडे, डाक्टर रचना शर्मा, डाक्टर अवधेश सिंह, अंबिका प्रसाद गौड़, डाक्टर संध्या श्रीवास्तव, डाक्टर ए.के. चौबे, डाक्टर अत्री भारद्वाज, रत्नेश वर्मा, सुभाष यादव, दानिश, कबीर, वीरेन्द्र सिंह, सुशील उपाध्याय, कीर्ति पांडे, संगीता अग्रवाल, अमिता वर्मा, विजय लक्ष्मी सिंह उपस्थित रहे।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की १२४ वीं जयंती पर प्रोफेसर रामकीर्ति शुक्ल के विचार

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को डाक्टर भगवानदास केन्द्रीय पुस्तकालय समिति कक्षमें काशी हिन्दू विश्व विद्यालय अंग्रेजी विभाग के पूर्व प्रोफेसर रामकीर्ति शुक्ल ने बतौर मुख्य अतिथि कही। अतिथियों का स्वागत विभागाध्यक्ष प्रोफ़ेसर शिव कुमार मिश्र ने किया। कार्यक्रम में पूर्व आयुक्त डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद, प्रोफेसर मंजुला चतुर्वेदी, डाक्टर मुक्ता, डाक्टर रामसुधार सिंह, डाक्टर अशोक सिंह, डाक्टर अभय द्विवेदी, डाक्टर निरंजन सहाय ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संयोजन प्रोफेसर श्रद्धानन्द एवं बी.एल . प्रजापति ने किया। तथा संचालन प्रोफेसर अनुराग

2018

अमर उजाला
वाराणसी CITY
वाराणसी | बुधवार | 18 जुलाई 2018 3

काशी विद्यापीठ विवि में जीएसटी पर आयोजित हुई सेमिनार

वाराणसी। काशी विद्यापीठ के समाजशास्त्र विभाग, छात्र कल्याण संकाय और सीआईआरसी की वाराणसी शाखा की ओर से काशी विद्यापीठ में मंगलवार को 'जीएसटी का भारतीय समाज पर सामाजिक और आर्थिक प्रभाव' पर सेमिनार हुआ। मुख्य अतिथि सीए शिशिर उपाध्याय ने कहा कि जीएसटी भारतीय कर प्रणाली के लिए मील का पत्थर है। जीएसटी किसी भी प्रकार से नागरिक समाज के अधिकारों और सुविधाओं में कटौती का प्रयास नहीं है, बल्कि इससे छोटे उद्योगों को नई ऊर्जा मिली है। सरकार से आर्थिक मदद मिलने की संभावना मजबूत हुई है।

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. टीएन सिंह ने कहा कि भारत में जीएसटी कर प्रणाली के लागू होने के बाद से समाज में लोगों के अंदर कर देने और कर की व्यवस्था के प्रति जागरूकता बढ़ी है।

हमें जीएसटी के प्रावधानों को सामान्य जनों के बीच पहुंचाने का काम करना होगा। उन्होंने जीएसटी में शोध कार्य को बढ़ावा देने की बात कही। कहा कि जीएसटी के सामाजिक प्रभावों का मूल्यांकन समाज शास्त्र के केंद्र में होना चाहिए।

सीए अतुल सेठ ने कहा कि आज भारत की अर्थव्यवस्था छठवें स्थान पर है। इसमें जीएसटी का मुख्य योगदान है। सीए रवि कुमार सिंह, सीए हिमांशु तिवारी, सीए मनोज अग्रवाल ने अपने विचार रखे। स्वागत हेड प्रो. मल्लिका चतुर्वेदी ने किया। विषय प्रवर्तन प्रो. आरपी पांडेय ने किया। संचालन प्रो. रेखा ने किया। इस अवसर पर प्रो. ब्रजेश सिंह, प्रो. अमिता सिंह, डॉ. भारती रस्तोगी, डॉ. पुरुषोत्तम पांडेय, डॉ. राहुल गुप्ता आदि मौजूद रहें।

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के समिति कक्ष में आयोजित गोष्ठी में पुस्तक का विमोचन करते कुलपति प्रो टीएन सिंह

हिन्दुस्तान 04
• वाराणसी • सोमवार • 29 जनवरी 2018

'महापंडित' का विश्व साहित्य से था लगाव

वाराणसी। महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने जीवन और साहित्य को एक ही तरह से जीया। विश्व साहित्य के प्रति उनके हृदय में विशेष अनुराग था। ये बातें प्रो. जितेंद्रनाथ मिश्र ने महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र की ओर से आयोजित अंतरविद्यालयीय सुलेख प्रतियोगिता के पुरस्कार वितरण समारोह में अध्यक्षीय संबोधन में कही। रविवार को हुए समारोह की मुख्य अतिथि महापौर मृदुला सिन्हा ने कहा कि हमें हिन्दी के प्रति विशेष सम्मान का भाव रखना चाहिए। भले ही अंग्रेजी हमारे लिए जीविकोपार्जन का माध्यम हो, लेकिन हिन्दी से हमारी पहचान है।

इस अवसर पर गुरुनानक स्कूल की शिक्षिका शशिबाला को सारस्वत सम्मान भी दिया गया। समारोह में डॉ. संगीता श्रीवास्तव, कीर्ति प्रकाश, बीएल प्रजापति, कृष्णा मुरारी, संचिता पांडेय, प्रीति द्विवेदी, मयंक पांडेय, उत्कर्ष, अश्विनी, उर्मिला, सविता श्रीवास्तव आदि ने उपस्थिति दर्ज कराई।

वाराणसी। बुधवार • 18 जुलाई • 2018 | राष्ट्रीय सहारा | www.rashtriyasahara.com

राहुल सांकृत्यायन को किया याद

■ सहारा न्यूज ब्यूरो

वाराणसी।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 125वीं जयंती पर मंगलवार को महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र तथा हिन्दी विभाग, काशी विद्यापीठ के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

महापंडित की 125वीं जयंती पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में जुटे विद्वान

महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ के समिति कक्ष में हुए महापंडित राहुल सांकृत्यायन स्मरण एवं सृजन के विविध आयाम विषयक संगोष्ठी में देशभर से आए विद्वतजनों ने महापंडित जी पर विचारों का आदान-प्रदान अपने वक्तव्यों के माध्यम से किया। इसमें डा. जगदीश्वर पांडेय, स्नेहलता, नम्रता कुमारी, खालिद आजमी, डा. ओम प्रकाश पांडेय, प्रो. शिवकुमार मिश्र, प्रो. श्रद्धानंद, प्रो. सुरेन्द्र प्रताप, डा. संजय श्रीवास्तव, डा. रचना शर्मा, डा. मंजरी पांडेय, डा. निहारिका, डा. धनंजय सहाय शामिल थे। इससे पूर्व महापंडित जी की पुत्री जया पडहाक ने अपने पिता के चित्र के सम्मुख दीप प्रज्ज्वलित और माल्यार्पण किया। सभी अतिथियों ने चित्र पर माल्यार्पण कर राहुल जी को स्मरण किया। तत्पश्चात महापंडित राहुल सांकृत्यायन, लेखिका डा. संगीता श्रीवास्तव तथा बीसवीं सदी के महान अन्वेषक : पंडित राहुल सांकृत्यायन संपादक मंडल डा. ओम प्रकाश पांडेय, डा. संगीता श्रीवास्तव व डा. किरन सहाय की कृतियों का लोकार्पण जया पडहाक ने किया। मुख्य अतिथि कुलपति प्रो. त्रिलोक नाथ सिंह को डा. मुक्ता व बीएल प्रजापति ने अंगवस्त्रम, माल्यार्पण व स्मृति चिह्न प्रदान कर स्वागत किया। डा. जगदीश्वर पांडेय एवं प्रो. अवधेश प्रदान का स्वागत प्रो. अनुराग कुमार व प्रो. निरंजन सहाय ने तथा कार्यक्रम का संचालन प्रो. रामसुधार सिंह ने किया।

अमर उजाला
बुधवार, 18 जुलाई 2018

काशी विद्यापीठ में राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर आयोजित संगोष्ठी में मौजूद लोग।

'काशी में पापा को पहचानने आई हूं'

राहुल सांकृत्यायन की जयंती पर हुई संगोष्ठी में शामिल हुई उनकी बेटी

वाराणसी। राहुल सांकृत्यायन की 125वीं जयंती के उपलक्ष्य में काशी विद्यापीठ में मंगलवार को आयोजित संगोष्ठी में उनकी बेटी जया पडहाक ने शिरकत की। केंद्रीय पुस्तकालय में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि उन्होंने कहा कि पिता के जीवन विकास में बनारस की खास भूमिका रही है। उसी कड़ी को मैं यहां समझने के लिए आई हूं। पिता ने शब्दों में जो व्यक्त किया है, उन भावों को यहीं से समझा जा सकता है। काशी में पापा को पहचानने के लिए मैं आऊं, ये जरूरी था।

राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र व काशी विद्यापीठ के हिंदी विभाग की ओर से आयोजित इस संगोष्ठी में कुलपति प्रो. टीएन सिंह ने भी अपने विचार रखे। मुख्य अतिथि ने डॉ. संगीता श्रीवास्तव की पुस्तक 'मानवता के पुजारी : महापंडित राहुल सांकृत्यायन' और डॉ. ओम प्रकाश पांडेय, डॉ. संगीता श्रीवास्तव व डॉ. किरन सहाय द्वारा संपादित 'बीसवीं सदी के महान अन्वेषक : पंडित राहुल सांकृत्यायन' पुस्तक का विमोचन किया। अध्यक्षता डॉ. मुक्ता ने की।

इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर डॉ. जगदीश्वर पांडेय, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. अनुराग कुमार, प्रो. निरंजन सहाय मौजूद रहे। सचिव डॉ. संगीता ने संस्था का परिचय दिया। प्रो. श्रद्धानंद, प्रो. रचना शर्मा, डॉ. मंजरी पांडेय, डॉ. निहारिका, प्रो. शिवकुमार आदि मौजूद रहे। ब्यूरो

09 हिन्दुस्तान
वाराणसी • बुधवार • 18 जुलाई 2018

राहुल के जीवन और विकास में काशी की विशिष्ट भूमिका

वाराणसी | वरिष्ठ संवाददाता

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की पुत्री जया पडहाक ने कहा है कि बनारस का राहुल जी के जीवन विकास में खास स्थान रहा है। उन्होंने जो शब्दों में व्यक्त किया है, उन भावों को समझने के लिए बनारस आना जरूरी था। जया पडहाक राहुल सांकृत्यायन की 125वीं जयंती के अवसर पर मंगलवार को काशी विद्यापीठ में संगोष्ठी को मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहीं थीं।

महापंडित राहुल सांकृत्यायन स्मरण एवं सृजन के विविध आयाम विषयक संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि जगदीश्वर पांडेय ने कहा कि राहुल जी के जीवन के दो मुख्य उद्देश्य थे। पहला तिब्बत में स्थित बौद्ध पांडुलिपियों का उद्धार तथा कम्युनिस्ट पार्टी की सेवा, जिसे उन्होंने प्राणप्रण से पूरा किया। प्रो. अवधेश प्रधान ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन के रूप में हिन्दी ने विश्वस्तरीय प्रतिभा को जन्म दिया। काशी विद्यापीठ के कुलपति प्रो. टीएन सिंह ने भी राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व और कृतित्व की चर्चा की। अध्यक्षीय संबोधन लेखिका डॉ. मुक्ता ने दिया। इस मौके पर जया पडहाक ने डॉ. सगीता श्रीवास्तव, डॉ. ओमप्रकाश पांडेय और डॉ. किरन सहाय की कृतियों का लोकार्पण किया।

16 अप्रेल 2018 राहुल सांकृत्यायन जयंती
के अवसर पर राहुल जी की पुत्री जया पडहाक जी का संगोष्ठी के पश्चात राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र संस्था के पुस्तकालय का अवलोकन।
दाहिने से जया दी , डॉ मुक्ता दी, अमृत कुमार जी और साथ में मैं।

9 APRIL 2019

महापंडित राहुल सांकृत्यायन की मनी जयंती

वाराणसी (एसएनबी)। महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 126वीं

जयंती पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी भाषा और साहित्य में राहुल सांकृत्यायन का योगदान विषयक संगोष्ठी हुई। रवीन्द्रपुरी स्थित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल संस्थान में हुई संगोष्ठी का शुभारम्भ अध्यक्ष प्रो. मंजीत चतुर्वेदी, मुख्य अतिथि भाषाविद व समीक्षक डॉ. पृथ्वीनाथ पाण्डेय, विशिष्ट अतिथि डॉ. मुक्ता, प्रो. अवधेश प्रधान, प्रो. श्रद्धानंद, डॉ. कपिल देव मिश्र, प्रो. वशिष्ठ अनूप तथा संस्था के सचिव डॉ. संगीता श्रीवास्तव ने राहुल के चित्र पर माल्यार्पण कर किया। तदोपरान्त सचिव ने मुख्य अतिथि का माल्यार्पण किया। इस मौके पर मुख्य अतिथि पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने कहा कि राहुलजी यूं ही महापंडित नहीं थे। यायावरी वृत्ति जीते हुए उन्होंने वहां के देश, काल परिस्थिति परिवेश का अनुशीलन व परिशीलन किया। विशिष्ट अतिथि आनंद प्रधान ने कहा कि राहुलजी ने आधुनिक हिन्दी ज्ञान एवं शोध की अनेक धाराओं का प्रवर्तन किया। उन्होंने आजीवन न केवल ज्ञान की साधना की बल्कि उस साधना से प्राप्त प्रकाश से हिन्दी भाषी जनता के सोच विचार को निरंतर निखारा और उसके मानस क्षितिज का विस्तार किया। संचालन रामसुधार सिंह व संयोजन नीपल प्रजापति व धन्यवाद अमन ने किया।

Sangita Srivastava
Admin · 5 Dec 2020 ·

आमंत्रण
7 दिसंबर 2020 सायं 4 बजे
https://us04web.zoom.us/j/76782006288?pwd=QWRTa3hIcENkZUdVTkdsb3h2SjU2UT09
Meeting ID 76782006288
Password. 12345

14 7 1

KTV News · Follow
7 Dec 2020 ·

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित राहुल सांकृत्यायन की ऐतिहासिक दृष्टि - संदर्भ : वोल्गा से गंगा आभासीय राष्ट्रीय वेबीनार का सुफल आयोजन आभासीय पटल पर सम्पन्न हुआ।
इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष डा पृथ्वी पाल पांडेय ने राहुल सांकृत्यायन की स्मृति को नमन करते हुए सभी वरिष्ठ वक्ताओं का स्वागत किया और कहा की राहुल जी का हिंदी साहित्य में अवदान अतुल्य है। वोल्गा से गंगा उनकी अप्रतिम रचना है जिसमें उनकी इतिहास दृष्टि अतीत से वर्तमान तक फैली है।

From your messages.

2020

KTV News
7 Dec 2020 ·

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र द्वारा आयोजित राहुल सांकृत्यायन की ऐतिहासिक दृष्टि - संद... more

इस अवसर पर संस्था अध्यक्ष डा पृथ्वी पाल पांडेय ने राहुल सांकृत्यायन की स्मृति को नमन करते हुए सभी वरिष्ठ वक्ताओं का स्वागत किया और कहा की राहुल जी का हिंदी साहित्य में अवदान अतुल्य है। वोल्गा से गंगा उनकी अप्रतिम रचना है जिसमें उनकी इतिहास दृष्टि अतीत से वर्तमान तक फैली है।
इसी अवसर पर दरभंगा से जुड़े वरिष्ठ साहित्यकार डा चंद्रभानु सिंह ने कहा- राहुल सांकृत्यायन के लेखन के केंद्र में इतिहास रहा है इतिहास यात्रा का मुख्य उद्देश्य वर्ग संघर्ष के माध्यम से निरंतर विकास उन्मुख मानव समाज का अध्ययन और प्रकारांतर से भविष्य की दिशा का संकेत करना है ।

डा मुक्ता ने कहा - महापंडित राहुल जी की प्रतिभा के अनेक प्रमाणों में एक प्रमाण उनकी युगांतर कारी ऐतिहासिक कृति वोल्गा से गंगा है जिसमें 20 कहानियों का संकलन है इस संग्रह की सभी कहानियां ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य की है इन कहानियों में इतिहास तत्व की प्रधानता है।

2021

वाराणसी की साहित्यिक यात्रा के दूसरे चरण में बैंगलुरू और दिल्ली से आए वरिष्ठ प्रवर साहित्यकारों - डॉ इंदु झुनझुनवाला, डॉ अमरनाथ जी, डा प्रेम तन्मय जी,कमल किशोर जी, ऊषा श्रीवास्तव दी, सुमन जी और डा मंजरी पांडेय ने दिनांक 25/11/2021 को महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र,संस्था वाराणसी में राहुल सांकृत्यायन साहित्य का अवलोकन किया ।

संस्था सदस्यों ने भारतीय परंपरानुसार रोली से टीका करके अंग वस्त्रं पहनाया और उनका स्वागत किया।

सभी प्रबुद्ध साहित्यकारों को संस्था सचिव डॉ संगीता श्रीवास्तव ने यात्रा साहित्य के पितामह महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जीवन चरित्र और हिंदी भाषा के अनुराग तथा संस्था के उद्देश्य के विषय में चर्चा की। साहित्यकारों ने बडे ही मनोरोग से इस परिचर्चा में भाग लिया ।

संस्था सचिव ने महापंडित पर स्वसृजित पुस्तकों को भेंट किया जिससे वे राहुल सांकृत्यायन के विचारों से पूर्णरूपेण परिचित हो सके ।

संस्था आप सभी की इस साहित्यिक यात्रा की सदैव आभारी रहेगी ।🙏🙏🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹🌹

हार्दिक आभार

डॉ संगीता श्रीवास्तव

सचिव

26/11/2021

चंद झलकियां------

Moderator 9 Apr 2021 · 2021

Indu Jhunjhunwala is with **Manjary Pandey** and **Manjaree Purwaar**.

Admin 9 Apr 2021 ·

नमस्कार दोस्तों,
महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जन्मदिवस पर

बनारस से डॉ संगीता श्रीवास्तव जी द्वारा आयोजित एक विशेष संगोष्ठी राहुल सांकृत्यायन क के व्यक्तित्व के विभिन्न आयाम पर गहन चर्चा, जिसमें सम्मिलित देश के विद्वतजन , मुझे इस गरिमामय मंच का सहभागी होने का अवसर दिया गया ,इसके लिए मैं डॉ संगीता श्रीवास्तव जी का दिल से आभार प्रकट करती हूँ ।

2 1

2021

Indu Jhunjhunwala is with **Manjary Pandey** and **Manjaree Purwaar**.

Admin · 9 Apr 2021 ·

नमस्कार दोस्तों,

महापंडित राहुल सांकृत्यायन के जन्मदिवस पर... more

रजि0 सं0 1396 स्थापना वर्ष - 2002-03

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र (संस्था)

नवापुरा, वाराणसी

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन की 128वीं वर्षगाँठ

राष्ट्रीय वेबीनार | दिनांक- 9 अप्रैल 2021, शुक्रवार | समय- सायं 4 बजे

विषय- 'राहुल सांकृत्यायन के व्यक्तित्व के विविध पक्ष'

विशिष्ट वक्तागण

डा. मुक्ता
संगोष्ठी अध्यक्ष
वरिष्ठ कथाकार
वाराणसी

डा. इंदु झुनझुनवाला
वरिष्ठ साहित्यकार
बेंगलोर

डा. प्रवीण कु. बोरकार
वरिष्ठ साहित्यकार
मुम्बई

डा. स्नेह लता
वरिष्ठ साहित्यकार
लखनऊ

डा. ऋषिपाल
वरिष्ठ साहित्यकार
कैथल, हरियाणा

डा. मंजरी पाण्डेय
वरिष्ठ साहित्यकार
वाराणसी

डा. राहुल राज
व्याख्याता
वाराणसी

डा. संगीता श्रीवास्तव
संस्था सचिव
कार्यक्रम संचालन
वाराणसी

वी. एल. प्रजापति
संस्था उपाध्यक्ष
कार्यक्रम संयोजक
वाराणसी

सहयोग- अभ्युदय अन्तरराष्ट्रीय संस्था, बैंगलोर

अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था

एवम्

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र

के संयुक्त तत्वावधान में महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 129जयंती के उपलक्ष्य मे चतुर्दिवसीय आनलाइन भव्य आयोजन

विषय- महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व एवम् कृतित्व

1 मई रविवार

सम्मान एवम् समापन समारोह

शाम 6.55 (IST)

22-23-24 अप्रैल 2022

कार्यक्रम अध्यक्ष
शैल अग्रवाल, लंदन
मुख्य अतिथि
प्रो मंजुला चतुर्वेदी

संचालन
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सविता भुवानिया
शशी लाहोटी
मंजु तंवर
शकुन्तला डुमरेवाला
मंजु शर्मा

सरंक्षक
डॉ.मुक्ता,बनारस
संस्थापक सचिव
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
म.राहुल सांकृत्यायन शो.व अ केन्द्र संस्था,बनारस

संरक्षक
प्रदीप कुमार एडवोकेट
डॉ शशी मंगल
अ.अ.संस्था

महासचिव
चन्दा प्रह्लादका
.अ.अ.संस्था

संस्थापक अध्यक्ष	सहअध्यक्ष	उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष
डॉ.इन्दु झुनझुनवाला	डॉ.अमरनाथ 'अमर'	भीमप्रकाश शर्मा	सुरेश लखोटिया
अ.अ.संस्था	अ.अ.संस्था'	अ.अ.संस्था	अ.अ.संस्था

महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व व कृतित्व चतुर्दिवसीय भव्य अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार 2022

23 अप्रैल के प्रतिभागी

शशी लाहोटी, कोलकता
ज्योति तिवारी,बेंगलोर

24अप्रैल के प्रतिभागी

शकुन्तला डुमरेवाला,कैलिफोर्निया
मंजु शर्मा,कैलीफोर्निया
सशील भल्ला,कैलिफोर्निया

संचालक
सविता भुवानिया
मंजु तंवर
शशी लाहोटी
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
शकुन्तला डुमरेवाला
मंजु शर्मा

डॉ.संध्या जावली,बेंगलोर
डॉ.ओमप्रकाश पाण्डेय
नीतू दाधिच, कोयम्बटूर
डॉ.कविता शास्त्री,बेंगलोर

कला संयोजक
डॉ.गीता सिंह

अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था,बेंगलोर
महापंडित राहुल सांकृत्यायन
शोध एवं अध्ययन केन्द्र,संस्था बनारस
के संयुक्त तत्वावधान में

महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व व कृतित्व पर चतुर्दिवसीय आयोजन का सम्मान व समापन समारोह

1 मई रविवार शाम 6.55 भारतीय समयानुसार

कार्यक्रम अध्यक्ष

शैल अग्रवाल, लंदन

मुख्य अतिथि

प्रो.मंजुला चतुर्वेदी

संयोजक -मंडल

डॉ.संगीता श्रीवास्तव | सविता भुवानिया | शकुन्तला डुमरेवाला | मंजु शर्मा | मंजु तंवर | शशी लाहोटी

संस्थापक अध्यक्ष
डॉ इन्दु झुनझुनवाला
अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था

कला संयोजक
डॉ.गीता सिंह

संस्थापक सचिव
डॉ. संगीता श्रीवास्तव
म .प. राहुल सांकृत्यायन अ.व शो.केन्द्र

अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था

एवम्

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र

के संयुक्त तत्वावधान में महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 129जयंती के उपलक्ष्य मे चतुर्दिवसीय आनलाइन भव्य आयोजन

विषय- महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व एवम् कृतित्व

संचालन
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
सविता भुवानिया
शशी लाहोटी
मंजु तंवर
शकुन्तला डुमरेवाल

महापंडित राहुल सांकृत्यायन

22 अप्रैल 2022
शुक्रवार
उद्घाटन समारोह

23-24अप्रैल
फेस बुक लाइव प्रसारण

1मई
सम्मान एवम् समापन समारोह

महासचिव
चन्दा प्रह्लादका
.अ.अ.संस्था

संस्थापक सचिव
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
म. राहुल सांकृत्यायन अ व शो.केन्द्र

सचिव अन्तर्राष्ट्रीय
शैल अग्रखण्डवाल
अ.अ.संस्था

संस्थापक अध्यक्ष	सहअध्यक्ष	उपाध्यक्ष	उपाध्यक्ष
डॉ.इन्दु झुनझुनवाला	डॉ.अमरनाथ 'अमर'	भीमप्रकाश शर्मा	सुरेश लखोटिया
अ.अ.संस्था	अ.अ.संस्था'	अ.अ.संस्था	अ.अ.संस्था

संस्थापक अध्यक्ष
डॉ.इन्दु झुनझुनवाला
अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था
बेंगलूरू

संस्थापक सचिव
डॉ संगीता श्रीवास्तव
महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध व अध्ययन केन्द,संस्था, बनारस

जूम एप द्वारा फेस बुक पर सीधा प्रसारण

महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व व कृतित्व चतुर्दिवसीय भव्य अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार 2022

23 अप्रैल के प्रतिभागी

शशी लाहोटी, कोलकता
ज्योति तिवारी,बेंगलोर
चन्दा प्रह्लादका,कोलकता
डॉ.मंजरी पाण्डेय, बनारस
शोभा पाठक,मुम्बई
मंजुतंवर,गुरूग्राम, हरियाणा
सविता भुवानिया, कोलकता
दर्शना शर्मा,कोलकता
डॉ स्नेहलता, लखनऊ
डॉ नम्रता कुमारी,
डॉ निशा अग्रवाल,जयपुर
डॉ.कल्पना व्यास
डॉ उमा आर शर्मा,बेंगलोर

24अप्रैल के प्रतिभागी

शकुन्तला
डुमरेवाल,कैलिफोर्निया
मंजु शर्मा,कैलीफोर्निया
सुशील भल्ला,कैलिफोर्निया
दर्शन दुआ, कैलिफोर्निया
डॉ. संगीता श्रीवास्तव, बनारस
डॉ.महलक्ष्मी केसरी,दिल्ली
डॉ. आलोक श्रीवास्तव
रोमा सिन्हा,कोलकता
डॉ. ध्रुव कुमार,पटना
सुधा गुप्ता,मिर्जापुर
डॉ. किरण सहाय
स्मिता पडोले
निधि कुमारी मिश्रा
वी अरुणा,कोलकता
डॉ.संध्या जावली,बेंगलोर
डॉ.ओमप्रकाश पाण्डेय
नीतू दाधिच, कोयम्बटूर

संयोजक दल

सविता भुवानिया
मंजु तंवर
शशी लाहोटी
डॉ.संगीता श्रीवास्तव

निर्णायक

डॉ.मंजरी पाण्डेय
चन्दा प्रह्लादका

कला संयोजक

डॉ.गीता सिंह

महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व व कृतित्व चतुर्दिवसीय भव्य अन्तर्राष्ट्रीय वेबीनार 2022

23 अप्रैल के प्रतिभागी

शशी लाहोटी, कोलकता
ज्योति तिवारी,बेंगलोर
चन्दा प्रह्लादका,कोलकता
डॉ.मंजरी पाण्डेय, बनारस
नन्दलाल मणि त्रिपाठी,लखनऊ
मंजु तंवर,गुरूग्राम, हरियाणा
सविता भुवानिया, कोलकता
दर्शना शर्मा,कोलकता
डॉ स्नेहलता, लखनऊ
मल्लिका मंजरी
डॉ नम्रता कुमारी,मुजफ्फरपुर
डॉ निशा अग्रवाल,जयपुर
सीमा गुप्ता,कोलकता

संचालक

सविता भुवानिया
मंजु तंवर
शशी लाहोटी
डॉ.संगीता श्रीवास्तव
शकुन्तला डुमरेवाला
मंजु शर्मा

24अप्रैल के प्रतिभागी

शकुन्तला डुमरेवाला,कैलिफोर्निया
मंजु शर्मा,कैलीफोर्निया
सुशील भल्ला,कैलिफोर्निया
दर्शन दुआ, कैलिफोर्निया
डॉ. संगीता श्रीवास्तव, बनारस
डॉ.महालक्ष्मी केशरी,दिल्ली
रोमा सिन्हा,कोलकता
डॉ. ध्रुव कुमार,पटना
सुधा गुप्ता,मिर्जापुर
डॉ. किरण सहाय,पटना
स्मिता पडोले,
निधि कुमारी मिश्रा,एरिजोना
वी अरुणा,कोलकता
डॉ.संध्या जावली,बेंगलोर
डॉ.ओमप्रकाश पाण्डेय
नीतू दाधिच, कोयम्बटूर
डॉ.कविता शास्त्री,बेंगलोर

कला संयोजक

डॉ.गीता सिंह

अभ्युदय अन्तर्राष्ट्रीय संस्था,बेंगलोर महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केन्द्र,संस्था बनारस के संयुक्त तत्वावधान में

महापंडित राहुल सांकृत्यायन व्यक्तित्व व कृतित्व पर चतुर्दिवसीय आयोजन का सम्मान व समापन समारोह

1 मई रविवार शाम 6.55 भारतीय समयानसार

Admin 9 Apr 2022 ·

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र, संस्था वाराणसी
एवं
बाबू अनन्त राम जनता महाविद्यालय कौल, कैथल, हरियाणा के
इतिहास व पुस्तकालय विभाग
के संयुक्त तत्वावधान में
महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 129वीं जयंती के पावन अवसर पर आयोजित

एक दिवसीय : अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार

विषय : "राहुल सांकृत्यायन की इतिहास दृष्टि"

आमंत्रण-पत्र

दिनांक : 09 अप्रैल, 2022 शनिवार समय: 6:30 सायं

स्थान- गूगल-मीट

https://meet.google.com/ini-wxah-odo

अध्यक्ष- डॉ. मुक्ता वाराणसी

डॉ. राम सुधार सिंह वाराणसी

डॉ. ध्रुव कुमार नालंदा, पटना

डॉ. श्रद्धा नंद वाराणसी

डॉ. ओ. पी. पाडेय पटना

डॉ. नागरत्ना राव बंगलुरु

डॉ. प्रविण बोरकर मुंबई

डॉ. इंदु झुनझुनवाला बंगलुरु

डॉ. मंजरी पांडेय वाराणसी

डॉ. निधि मिश्रा एरिजोना, यूएसए

डॉ. नम्रता कुमारी मुजफ्फरनगर

डॉ. रचना शर्मा वाराणसी

मल्लिका मंजरी भागलपुर

डॉ. ऋषिपाल प्राचार्य

डॉ. पुष्पा संयोजिका

डॉ. राजीव कुमार गरबा सह-संयोजक

बी. एल. प्रजापति संस्था उपाध्यक्ष

डॉ. संगीता श्रीवास्तव सचिव व संचालन

6 7

Sangita Srivastava
Admin 8 Mar 2022 ·

महापंडित ने ओझल नायकों को खोजा

- राहुल सांकृत्यायन की 129वीं जयंती पर वेबिनार
- वक्ताओं ने महिलाओं के अधिकार के लिए लड़नेवाला बताया

वाराणसी, प्रमुख संवाददाता। राहुल सांकृत्यायन विरले रचनाकारों में हैं जिन्होंने इतिहास के गर्भ से जीवन के सत्य को उद्घाटित किया है। उपेक्षित एवं वंचितों को आवाज देकर जागृत करने के लिए उन्होंने इतिहास के ओझल नायकों का भी अन्वेषण किया है। ये बातें डा. मुक्ता ने शनिवार को कहीं।

वह महापंडित राहुल सांकृत्यायन की 129वीं जयंती पर महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र तथा बाबू अनंत राम जनता कॉलेज कैथल, हरियाणा के संयुक्त वेबिनार में अध्यक्षीय संबोधन कर रही थीं। डा. मुक्ता ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन स्त्री चरित्र के माध्यम से महिला के शोषण को उजागर करते हैं। साथ ही उनके अधिकारों के स्वर को मुखर करने का प्रयास करते हैं। डॉ. श्रद्धानंद ने कहा कि राहुल की इतिहास दृष्टि मानवधर्मी रही है। यूएसए के ऐरिजोना से जुड़ी डॉ. निधि कुमारी मिश्रा ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन की इतिहास दृष्टि निर्माण में भारतीय स्वाधीनता आंदोलन, प्रगतिशील और विश्व कम्युनिस्ट आंदोलन का महत्वपूर्ण योगदान रहा। हरियाणा के प्राचार्य डॉ. ऋषि पाल, नालंदा कॉलेज बिहारशरीफ के डा. ध्रुव कुमार, मंगलोर विश्वविद्यालय के डा. नागरत्ना राव, डॉ राम सुधार सिंह, पटना संग्रहालय के पूर्व प्रभारी डॉ. ओम प्रकाश पांडेय, कवयित्री डॉ. मंजरी पांडेय, डॉ. इंदु झुनझुनवाला, भागलपुर विश्वविद्यालय की डा. मल्लिका मंजरी, मुंबई के डॉ. प्रवीण बोरकर, डॉ. महालक्ष्मी, डॉ. कल्पना व्यास, डॉ. राहुल शर्मा, डॉ. शुभा श्रीवास्तव आदि ने भी विचार रखे।

Sangita Srivastava
12 Aug 2022 ·

2022

"साहित्य और राष्ट्रीय चेतना" कार्यक्रम की श्रृंखला के अंतर्गत आज 12/8/2022 को अभ्युदय अंतरराष्ट्रीय संस्था बंगलोरू के तत्वावधान में आयोजित ' राष्ट्रीय आंदोलन और राहुल सांकृत्यायन " विषयक वेबीनार सफलता पूर्वक संपन्न हुआ।
इस अवसर पर
मुख्य वक्ता प्रो अवधेश प्रधान जी और वार्ताकार मैं रही।
स्वागत डॉ इंदु झुनझुनवाला, मुख्य वक्ता का परिचय शशि लाहोटी और धन्यवाद डॉ रचना शर्मा ने किया। सभी का आत्मिक आभार ।
कार्यक्रम के आयोजन मंडल का हार्दिक आभार व धन्यवाद ।
फेसबुक और इस कार्यक्रम से जुड़े सभी श्रोताओं का आभार।
कार्यक्रम की चंद झलकियां

6 2

2023

निमंत्रण-पत्र

महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र ,संस्था, वाराणसी

एवं

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान, वाराणसी

के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित

राहुल सांकृत्यायन की 130वीं जयंती

9 अप्रैल 2023 रविवार

विषय : राहुल जी की दृष्टि और सृजन सरोकार

कार्यक्रम स्थल - आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य शोध संस्थान,रवींद्रपुरी

समय - सायं 3 बजे

अध्यक्ष — डॉ जितेंद्र नाथ मिश्र

मुख्य वक्ता — प्रो अवधेश प्रधान

स्वागत व विषय प्रवर्तन — डॉ मुक्ता

विशिष्ट वक्ता

डॉ सुरेन्द्र प्रताप सिंह
डॉ राम सुधार सिंह
डॉ श्रद्धानंद
डॉ सत्यपाल शर्मा

संचालन — डॉ संगीता श्रीवास्तव

धन्यवाद — प्रो मंजीत चतुर्वेदी

संस्थापिका सचिव	अध्यक्ष	मंत्री	संस्था उपाध्यक्ष
डॉ संगीता श्रीवास्तव	डॉ मुक्ता	प्रो मंजीत चतुर्वेदी	बी एल प्रजापति
म रा सां शो एवं अ कें संस्था, वाराणसी	आ रा शु सा शो सं वाराणसी	आ रा शु सा शो सं वाराणसी	म रा सां शो एवं अ कें संस्था, वाराणसी

2023

महापंडित राहुल सांकृत्यायन
शोध एवं अध्ययन केन्द्र, संस्था, आजमगढ़

Shot on OnePlus
By One+Wali

Shot on OnePlus
By One+Wali

2024

4 दैनिक जागरण वाराणसी, 9 अप्रैल, 2024

बुद्ध और मार्क्स के चिंतन को सृजन में रूपायित किया राहुल सांकृत्यायन ने : प्रो. प्रभाकर

जागरण संवाददाता, वाराणसी : राहुल सांकृत्यायन बुद्ध और मार्क्स के अपने चिंतन को अपने सृजन में रूपायित किया। उनकी रचनाधर्मिता के कई आयाम हैं परंतु सबसे विरल रूप उनका घुमक्कड़ का है। यह कहना है भोजपुरी अध्ययन केंद्र बीएचयू के समन्वयक प्रो. प्रभाकर सिंह का। वह सोमवार को राहुल सांकृत्यायन की जयंती की पूर्व संध्या पर नागरी नाटक मंडली के ट्रस्ट हाल में 'राहुल सांकृत्यायन का यात्रा परिदृश्य' विषयक संगोष्ठी में मुख्य अतिथि थे। संगोष्ठी का आयोजन महापंडित राहुल सांकृत्यायन शोध एवं अध्ययन केंद्र ने किया था।

दीप जलाकर संगोष्ठी का शुभारंभ करते विद्वतजन व विदुषियां ● जागरण

विशिष्ट अतिथि डा. मुक्ता ने कहा कि राहुल के यात्रा वृतांत जीवंत ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दस्तावेज हैं। आजमगढ़ से आईं डा. गीता ने 'अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा' को राहुल सांकृत्यायन का सर्वश्रेष्ठ यात्रा वृतांत बताया। डा. मंजरी पांडेय ने कहा कि राहुल सांकृत्यायन अद्भुत सृजनहार हैं, जिन्होंने अपनी यात्राओं को साहित्य बना दिया। वरिष्ठ साहित्यकार डा. अशोक सिंह ने राहुल की जुटाई बहुत सी सामग्रियों पर अभी अध्ययन की आवश्यकता बताई। शिवकुमार पराग ने कहा, राहुल की घुमक्कड़ी इस दुनिया को बेहतर बनाने के उद्देश्य को समर्पित थी। डा. रामसुधार सिंह ने कहा कि राहुल की यायावरी ने बौद्ध दर्शन को अत्यंत समृद्ध किया है। डा. मंजुला चतुर्वेदी, प्रो. श्रद्धानंद, कंचन सिंह परिहार ने विचार रखे।

2024

2025

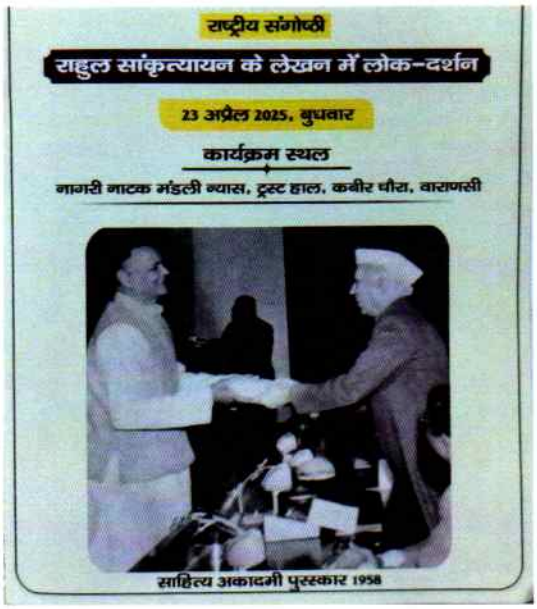
राष्ट्रीय संगोष्ठी
राहुल सांकृत्यायन के लेखन में लोक-दर्शन
23 अप्रैल 2025, बुधवार
कार्यक्रम स्थल
नागरी नाटक मंडली न्यास, ट्रस्ट हाल, कबीर चौरा, वाराणसी
साहित्य अकादमी पुरस्कार 1958

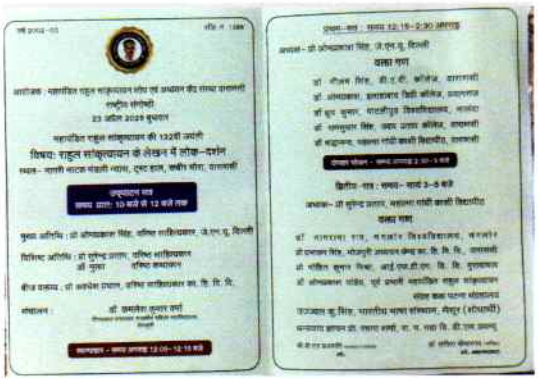
राष्ट्रीय संगोष्ठी
23 अप्रैल 2025 बुधवार
विषय: राहुल सांकृत्यायन के लेखन में लोक-दर्शन
स्थान - नागरी नाटक मंडली न्यास, ट्रस्ट हाल, कबीर चौरा, वाराणसी